स्वातिसुत

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारशील गद्यांश)

स्वातिसुत

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारशील गद्यांश)

सङ्कलन एवम् सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

SWAATISUT

Compilation by Dr. Umesh Mandal of Select Thoughtful passage of Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-69-8
सत्त्वाधिकार: © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
पहिल संस्करण: 2023
दाम: 200/- (भा.रु.)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भ वन, जे.एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

स्वातिसुतक बहन्ने

कहल जाइत अछि, स्वाति नक्षत्रमे समुद्रक यात्रापर निकलल ओस-वर्षाक बून जँ सितुआक मुहमे पड़ैए तँ मोती बनै छै, जेकरा स्वातिसुत सेहो कहल जाइए। 'स्वातिसुत'क अंग्रेजी 'Arcturus' होइए, जेकर अर्थ होइए 'स्वाति नक्षत्र-मण्डलमे सभसँ तेज चमकैबला तरेगन'। मोती शब्दक पर्यायवाची शब्द सभ अछि- 'मुक्ता', 'स्वातिसुत', 'सितुआ', 'पर्ल', 'शशिप्रभा', 'मुक्तिज' आ 'मौक्तिक' इत्यादि आ 'नक्षत्र'क अर्थ तरेगनक समूह सेहो होइत अछि। मुदा जहिना 'नक्षत्र'क अर्थ व्यापक अछि तहिना 'स्वाति'क अर्थ सेहो व्यापक अछि। विद्याक देवीकेँ सेहो स्वाति कहल जाइत अछि। ओना, सोझमे अखन 'मोती' आ 'तरेगन' दुनू शब्द उपस्थित अछि तँए दुनूक गुणकेँ अर्थात् 'चमक'सँ सरोकार राखि आगू बढ़ी।

जहिना मनुक्खक गुण मनुष्यता होइत अछि तहिना समाजक गुण सामाजिकतामे आ गामक गुण ग्रामवासीक बेवहारमे आ गामक बनावटिमे देखल जाइत अछि। अपना ऐठाम सभसँ नीक गाम ओइ गामकेँ मानल जाइए जइ गाममे छत्तीसो जाइतिक बास अछि, जइ गाममे अधिक-सँ-अधिक रंगक उपजा-वारी होइत होइ। कोनो गामक उपजावारी ओतुक्का माटि-पानि आ हवाक संग ओकर सहजता आ ओइठामक लोकक श्रम-बेवहारपर निर्भर होइत अछि। सहजताक माने ई जे कोनो गाममे साठि फीटपर पीबैबला पानिक लेअर भेटैए आ कोनो गाममे साढ़े तीन साए फीटपर। जइ गाममे जेतेक सहज रूपेँ पानिक उपलब्धता अछि ओ ओतेक सुन्दर भेबे कएल। हवा तँ बेस व्यापक अछि। हवा मनुक्ख सेहो तैयार करै छैथ आ प्रकृति द्वारा जे प्रदान कएल अछि से तँ अछिए। मनुक्ख आ प्रकृतिमे जुड़ाव अछि, तँए क्रिया-कलापमे सेहो मनुक्खक बेवहारकेँ मनुक्खक प्रकृति कहल जाइत अछि। से अंगरेजीमे सेहो,

जेना, सुनैत हेबै, ‘हे! एकर नेचर ठीक बुझि पड़ैए’। तहिना, ‘हे! फल्लाँक नेचर खराप छै’।

मनुक्खक बीच जेतेक समस्या अछि, तइमे प्रकृति द्वारा उत्पन्न कएल समस्यासँ बेसी मनुक्ख द्वारा ठाढ़ कएल समस्या अछि। ई बात अलग जे सभ समस्याक निर्मूल अन्त मनुक्ख नहि कऽ पाबि सकैए, मुदा मनुक्खक द्वारा जे ठाढ़ कएल समस्या अछि माने मानवनिर्मित ओझरी, तेकर निर्मूल अन्त तँ मनुक्ख द्वारा सम्भव अछिए।

समस्याक बीच सेहो रंग-रंगक समस्या अछि। जहिना सभ गामक अप्पन-अप्पन समस्या अछि तहिना गामक बीच सभ समाजक सेहो अप्पन-अप्पन समस्या अछि। ओना, गामक बीच सेहो आ गाम-गामक बीच सेहो ओहनो-ओहनो समस्या अछि जे मिलैत-जुलैत अछि। जेना, विधवा विवाह, गाम-समाजक समस्या नहि, गाममे बसैबला खास समाजक बीचक समस्या छी। अहाँ कहब, अनेरे समस्या-समस्या नहि करी, ई सभ कोनो चीज नहि, ऐ सभक अन्त अपने-आप हेतइ। ठीक बात, समस्याक अन्त अपने-आप सेहो होइते छै, समय बदैल गेने, समाजकेँ आगू बढ़ि गेने आदि-आदि परिस्थिति बनलापर। परिवर्तन सदा होइत रहलै हेन। मुदा तैबीच विचारणीय जे तथ्य सभ अछि तैपर हमरा लोकनिकेँ विचार सेहो करबाक चाही। परिवर्तन दू रस्ते होइए, एक होइए विकासात्मक प्रक्रियाक तहत, जेना ऊपरमे कहल गेल समयकेँ बदैल गेने, समाजकेँ अगुआ गेने सेहो बहुत रास ओहन बेवहार अछि जे पाछू पड़ि जाइए। ई भेल विकासात्मक प्रक्रिया आ दोसर होइत अछि क्रान्तिकारी प्रक्रिया। ऐठाम क्रान्तिकारी शब्दक महकल रूपसँ बँचिकऽ विचारब आवश्यक अछि। ‘क्रान्ति’क मतलब बदलाउ होइत अछि। विचारमे बदलाउ, बेवहारमे बदलाउ आदि-आदि, बदलाउ सेहो रंग-बिरंगक होइत अछि। कहबाक माने बदलाउ आनएबलाकेँ, बदलाउक प्रक्रियाकेँ पालन करएबलाकेँ सेहो क्रान्तिकारी कहल जाइत अछि। विचारमे बदलाउक माने भेल चीजक वास्तविक मुल्यांकन, माने वैज्ञानिक प्रक्रियाक तहत सोचब-विचारब।

मानि लिअ कियो साहित्य लिखलैन अछि। बुझिते छिऐ, बेस मेहनत आ

लगन रहलाक बादे साहित्य लिखा सकैए। 'साहित्य लिखब'सँ तात्पर्य ई अछि जे आजुक परिवेशक अनुकूल मानव कल्याण लेल, मानव समाजक बीचक नीक-बेजाकेँ देखैत सकारात्मक दृश्य प्रस्तुत करब, माने लिखब। हँ, एकटा ओहनो लिखब होइते अछि जे भरि दिन ओही बातकेँ, कार्यालयमे जेना होइए, लिखैत रहलौं। नव चीज लिखब, आइक बात लिखब, सृजन करब आदि-आदि शब्दसँ साहित्य-लिखबकेँ बुझल जा सकैए। सएह कहैत रही, मानि लिअ कियो साहित्य लिखिकऽ अप्पन सिरजन लग जा देखबै छैथ। कोनो रचनाक मूल ओकर विषय-वस्तु होइत अछि। जेना, कोनो कार्यालयमे अहाँ आवेदन केलौं, तैठाम आवेदनक विषयपर ध्यान देल जाइत अछि नहि कि आवेदनक शैलीपर आ व्याकरणपर। शैली नवीन सेहो भऽ सकैए। विषय-वस्तुमे सवाल अछि जे आखिर हमरा लोकनिक बीच जेहेन भू-कम्पसँ तवाही मचि जाइए ओहन भू-कम्प जापानमे किए ने ओतेक क्षति पहुँचा पबैए, अर्थात् ओइठामक लोकक बीच केहेन क्रिया-कलाप अछि, आ हमरा लोकनिक बीच की सभ कमी अछि। तहिना दोसर दृश्य अछि, एक दिस कन्यागत आर्थिक विपन्नताक कारणेँ कन्यादानमे जे दहेजक चलैन अछि, जइसँ अपनाकेँ पछरैत देखि आत्महत्या कऽ रहला अछि आ दोसर दिस बिआह नइ भेने बर बूढ़ भऽ रहला हेन। बस, अही दृश्यकेँ लिखि कियो अपन सिरजन लग पहुँचला। मुदा तैठाम हुनकर की दायित्व बनै छैन? चीजक वास्तविक मुल्यांकन करब, वैज्ञानिक प्रक्रियाक तहत सोचब-विचारब आकि..?

जहिना समाजक दर्पण 'साहित्य' छी तहिना साहित्यक दर्पण 'समाज' सेहो, महत्वपूर्ण अछि मूल्यांकन करबाक दृष्टि। जहिना मनुक्खक बीच जीवन दर्शन अछि, तहिना जीवन दर्शनक खगता सेहो मनुक्ख लेल अछि जे साहित्येक माध्यमसँ जोड़ियाएल जाइए। असलमे साहित्यक मूल उद्देश्य सेहो सएह छी। मनुक्खेक विकास ने साहित्यक विकसित रूप-गढ़नमे काज करैए। जेहेन जीवन, तेहेन साहित्य होइते अछि किने।

साहित्यमे बहुत रंगक विधा अछि। नाटक, एकांकी, उपन्यास, कथा, निबन्ध, आत्मकथा, जीवनी, यात्रा वृत्तांत, रेखाचित्र, अनुवाद, संस्मरण, कविता,

गीत, गजल, महाकाव्य, समीक्षा, समालोचना-आलोचना आदिक अलावे सङ्कलन-सम्पादनसँ सम्बन्धित कार्यकेँ सेहो साहित्यिक कार्य मानल जाइत अछि। सभ विधाक अप्पन-अप्पन महत्व अछि। जनिका जइ विधामे रुचि जगै छैन ओ तइ विधामे साहित्यिक सेवा करै छैथ आ तैबीच हुनक आभामण्डलक परिचय सेहो होइत रहै छैन।

प्रस्तुत पोथीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारशील गद्यांशकेँ संकलित कए यथावत राखल गेल अछि, जे अपने-आपमे फराक अछि। फराक ई जे जैठाम कथा, कविता, गीत आ गजलादिक संकलित पोथी सभ देखल जाइत रहल अछि, तैठाम ई गद्यांश सङ्कलनक पोथी छी। ऐ पोथीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल सृजित ओहन प्रारूपकेँ रखबाक कोशिश कएल अछि जइसँ हुनक आभामण्डलक संक्षिप्तो परिचय प्रस्तुत भऽ सकए। मण्डलजीक गद्य रचनाक भण्डार विशाल छैन। देखा चाही, ऐ कार्यकेँ करबामे हम केतेक सफल भेलौं, जँ हम सम्बन्धित परिपेक्ष्यमे एकटा पातरो-छितर रेख खिंच सकब तँ हमरा विश्वास अछि पास मार्क भेटबे करत।

ऊपरमे वर्णित ‘विशाल गद्य भण्डार’ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक विषयमे लिखल अछि, तेकरा अतिश्योक्ति नहि मानल जाए। मैथिली साहित्यमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक नियमित लेखन किनकोसँ नुकाएल नहि अछि। मोटा-मोटी डेढ़ मासमे मण्डलजी एक गोट पोथीक सभ काज सम्पन्न कऽ लइ छैथ आ ऐगला पोथीमे हाथ लगा, आगूक कार्यमे रमि जाइ छैथ आ ई क्रम 2000 इस्वीक पछाइतसँ आइ धरि नियमित रूपेँ चलि रहल छैन, जेकर फलाफल अछि, लगभग बीस गोट उपन्यास, दर्जन भरिसँ ऊपर नाटक-एकांकी आ छअ दर्जनक लगभग कथा संग्रह। उक्त गद्य भण्डारकेँ बेस व्यापक आकि विशाल कहले जा सकैए।

विचारशील गद्यांशक सङ्कलन करबाक जे अप्पन ई काज अछि से प्राय: 2020 इस्वीक पछाइतसँ करैत आएल छी। ऐ तरहक कार्यकेँ करबाक हमर प्रवृति कहियौ आकि शुरूआत, से भेल फेसबुक परक पोस्टसँ। तँए, हम जे कोनो सङ्कलन, गद्यांश सङ्कलन, कएल ओ प्राय: तात्कालिक पोथी सभमे सँ

लेल गेल गद्यांशक। माने ई जे जहिना मण्डलजी नियमित लिखैत रहला अछि तहिना अपनो ओकर प्रकाशन हेतु सम्बन्धित सभ काजकेँ अपनो नियमित करैत आबि रहल छी। सभसँ पहिने रचनाकेँ एक बेर पढ़ब पहिल कार्य होइत अछि। तहिना, टंकण करब दोसर काज आ टंकित रचनाक प्रूफ देखब सेहो ओइसँ ऐगला काज होइत अछि। ई सभ केलाक बाद, आजुक सोशल मिडियाक सुविधाकेँ देखैत, फेसबुकपर सेहो साझा करब आ पछाइत ओही गद्यकेँ, माने फेसबुकपर पोस्ट कएल गद्यकेँ, समेट पुस्तकाकार करब, ईहो अप्पन एकटा काज रहल अछि। प्रस्तुत पोथी सेहो अही तरहक क्रियाकलापक प्रतिफल छी। मुदा आन संग्रहसँ किछु भिन्नता ऐ संग्रहमे अछि। ऐ पोथीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 'पंगु' उपन्यासक पछातिक गद्य-रचनासँ संकलित कएल गद्यांश अछि।

'पंगु' उपन्यासकेँ 2018 इस्वीमे लिखलैन। 2021 इस्वीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ अही उपन्यास लेल साहित्य अकादेमीक मूल पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेलैन। मोटा-मोटी मास दिनमे 'पंगु' उपन्यासकेँ लिखल गेल अछि। एकर लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018 इस्वी अछि। ओना, किछुए दिन पूर्व 'लहसन' उपन्यासक रचना सेहो मण्डलजी केने छैथ। 2018 इस्वीमे लिखल हिनक तीन गोट उपन्यास अछि। 'लहसन', 'पंगु' आ 'आमक गाछी'। ओना, 'लहसन'क पहिल पड़ाव 2017 इस्वीमे 10 नवम्बरकेँ लिखि अन्त केलैन आ अन्तिम पड़ाव 2018 इस्वीमे 25 फरवरीकेँ। तेकर बाद कथादि सभ लिखए लगला। पछाइत पंगुमे हाथ लगौलैन जेकर लेखन तिथि ऊपरमे वर्णित अछिए। बीचमे आन-आन विधामे लिखए लगला मुदा बेसी दिन धरि नहि लिखला, प्राय: डेढ़ मासक बाद पुन: उपन्यासक रचनामे लागि गेला, जेकर नाओं अछि 'आमक गाछी'। आमक गाछीक पहिल पड़ावक लेखन तिथि अछि- 10 अगस्त 2018 आ अन्तिम पड़ावक 30 सितम्बर 2018

बीचमे एक महत्वपूर्ण बातक चर्चा आवश्यक बुझि पड़ि रहल अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लेखनीक ओहनो दौर रहल छैन, जैबीच पद्यमे गीत आ कविताक संग गद्यमे उपन्यासक संग कथा सेहो लिखलैन अछि। लेखनक

ई दौर 2018 सँ 2020 इस्वीक मध्य देखल जा सकैए। ‘आमक गाछी’ उपन्यासक आठम पड़ावक लेखन तिथि 25 सितम्बर 2018 अछि आ ‘अनचोकक अन्हार’ नामक कथाक लेखन तिथि अछि: 19 सितम्बर 2018, तहिना ‘अपन बुधियारी अपने खेलक’ नामक कथाक लेखन तिथि अछि: 23 सितम्बर 2018

पद्य रचनाक लेखन तिथि अप्राप्त अछि तँ ओकर चर्चा ऐठाम नहि कए सकलौं अछि। मुदा वर्षक हिसाबे तँ देखले जा सकैए। जेना कि ऊपरमे जिक्र कएले अछि जे 2018 सँ 2020 इस्वी धरिक बीच पाँच गोट पद्य संग्रह प्रकाशित छैन।

आब आउ कथाक पोथी सबहक बीच। आइ धरि माने आइ 27 दिसम्बर 2023 इस्वी छी, जगदीश प्रसाद मण्डलजी 902 गोट कथा लिखि चुकला अछि। हिनक पहिल कथा ‘भैंटक लाबा’ छिऐन जे 3100 शब्दक अछि आ ई कथा ‘गामक जिनगी’ नामक पोथीमे प्रकाशित छैन। अखन 902म स्थानपर जे कथा अछि ओकर शीर्षक- ‘सिरगर लोक’ छिऐन। ऐ कथाक लेखन तिथि अछि 25 दिसम्बर 2023, जे कि 1725 शब्दमे अन्त भेल अछि। मुदा ऐठाम हमरा पंगु उपन्यासक बादक कथा लेखनपर एबाक अछि। ई कथा सभ ‘दिवालीक दीप’ सँ लऽ कऽ ‘मुक्ति’ नामक कथा संग्रहक कथाक बीच एबाक अछि। मोटा-मोटी 329 गोट कथा पंगु उपन्यासक बाद मण्डलजी लिखलैन। उक्त कथा सभ कुल 31 गोट संग्रहमे संग्रहित छैन। ओना, कथा विधामे मण्डलजीक आइ धरिक कुल 70 गोट पोथी प्रकाशित छैन।

आमक गाछी उपन्यासक बाद श्री मण्डलजी उपन्यासकेँ सोल्हन्नी आ कथाकेँ किछु-किछु बिसैर प्राय: कविता आ गीत लिखए लगला। पछाइत गीत-कविता कम आ कथा बेसी लिखए लगला। हिनकर ई क्रम लगातार अप्रैल 2020 इस्वी धरि अनवरत चलैत रहलैन। बीच-बीचमे कखनो पद्य, अर्थात् गीत-कविता, तँ कखनो गद्य, तइमे एकछाहा कथा लिखैत रहला। फलाफल बीचक अवधिमे माने 30 सितम्बर 2018 सँ अप्रैल 2020क बीच, पद्यमे 163 गोट रचनाक सृजन केलैन जे ‘चुनौती’, ‘रहसा चौरी’, ‘कामधेनु’,

‘मन मथन’ आ ‘अकास गंगा’ नामक पोथीमे, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली, सुपौलसँ प्रकाशित भेल छैन।

2021 इस्वीक शुरूआतसँ, अर्थात् 14 जनवरी-के ‘हारल विचार’ नामक कथा 3657 शब्दक लिखि पुन: उपन्यासमे हाथ लगौलैन। जे 25 जनवरी 2021 सँ 4 जून 2021 तक लिखैत रहला। फलाफल ‘मोड़पर’, ‘संकल्प’ आ ‘अन्तिम क्षण’, ई तीनू उपन्यास एकलखाइत लिखिकऽ सम्पन्न केलैन। ‘मोड़पर’ उपन्यासक पहिल पड़ावक लेखन तिथि: 25 जनवरी 2021 आ ‘अन्तिम क्षण’क अन्तिमक पड़ाव 04 जून 2021

5 जुलाई 21 सँ 4 सितम्बर धरिक बीच एगारह गोट कथा लिखलैन। क्रमश: कथाक शीर्षक, शब्द संख्या आ लेखन तिथि द्रष्टव्य अछि- 1. परिवारे गजपटा गेल: शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021, 2. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021, 3. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021, 4. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021, 5. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021, 6. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021, 7. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021, 8. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021, 9. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021, 10. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021, 11. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

5 सितम्बरसँ 21 सँ पुन: एक उपन्यास लिखब शुरू केलैन जेकर नाओं अछि ‘कुण्ठा’। ‘कुण्ठा’ बाल उपन्यास छिऐन, एकर पहिल पड़ाव 15 सितम्बर-के पूर्ण कएल गेल छैन आ अन्तिम पड़ावक लेखन तिथि छैन: 09 नवम्बर 2021

कुण्ठा उपन्यासकेँ अन्त केलाक बाद लगातार कथा लिखब आरम्भ केलैन जे नियमित रूपेँ 10 नवम्बर 2021 सँ 30 दिसम्बर 2022 धरि लिखैत रहला। क्रम संख्या 750 (सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर

2021) सँ 836 (अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022) धरि झाड़िकऽ कथा लिखैत रहला। संख्याक हिसाबे 85-86 गोट कथा होइ छैन। पछाइत पुन: उपन्यासमे हाथ लगौलैन। 'सुनयना बेटी' उपन्यासक नाओं अछि। ई उपन्यास पूर्णत: नारी केन्द्रित उपन्यास छिऐन। एकर पहिल पड़ाव 5 जनवरी 2023क लिखि अन्त कएल छैन आ अन्तिम पड़ावक लेखन तिथि छैन 26 फरवरी 2023

'सुनयना बेटी' उपन्यासक बाद आइ धरि कथा लिखि रहला हेन। बीच-बीच, जँ कोनो कवि सम्मेलनमे भाग लेबाक रहलैन तँ कविता सेहो लिखै छैथ, मुदा से अतिअल्प। आब प्राय: कथा लिखि रहला अछि। कथाक क्रम संख्या 837 सँ जे कथा लिखब शुरू केलैन ओ क्रम अखन 902 मे चलि रहलैन अछि। अर्थात् 'आब नइ जीब' (क्रम सं. 837, शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023) सँ 'सिरगर लोक' (क्रम सं. 902, शब्द संख्या: 1725, तिथि: 25 दिसम्बर 2023) धरि लिखि चुकला अछि आ 'कलछप्पन' नामक कथा लिखि रहला अछि।

ऊपरमे मण्डलजीक बहुतो रचना सभक शीर्षक उद्धृत भेल अछि। जेना कि कोनो रचनाक शीर्षक सेहो बहुत किछु कहि दैत अछि जँ तइ दृष्टिये देखल जाए तँ ई स्पष्ट भऽ जाइए जे मण्डलजीक जहिना रचनाक भण्डार व्यापक छैन तहिना विषय-वस्तुक फलक सेहो व्यापक छैन। ओना, बहुत सज्जन ओहन छथिए जे बिनु पढ़नहि बहुत किछु बजैत रहला अछि। "जगदीश प्रसाद मण्डल अपना रचनामे गाम-घर आ खेती-किसानीसँ बाहर नहि निकैल ओही सभमे ओझराएल रहै छैथ।"

विरोधीक स्वर की होइत अछि से जहिना सभकियो बच्चेसँ देखैत आएल छी तहिना अपनो देखैक मौका भेटल अछि। हमरा ओहिना मोन अछि, ओइ दिनक बात सभ जइ दिन जगदीश प्रसाद मण्डलजी समाज लेल घनघोर आनन्दोलनक दौरमे रहैथ। हिनकर जीविकोपार्जन कृषि रहले छैन। बेसी जमीन नइ रहने ई तरकारी खेती करैत रहैथ। हिनकर सोच आ विचार आ कर्मठता तथा ईमानदारीक संग समर्पण देखि बहुत लोककेँ जलन होनि।

हिनका-दे लोक बजैथ “पढ़ि-लिखिकऽ मण्डलजी भाँटाक जड़ि खोधैत रहै छैथ।” अर्थात् ‘पढ़े फारसी बेचे तेल’ सन बातकेँ पुष्टि करैत लोक अपन उल्लू सिधा करबामे व्यस्त रहै छला। हलाँकि ओइ दिनमे अपनो खराप लागए, मुदा आइ बुझि रहल छी लोक की बजै छला, किए बजै छला आ हिनक अवधारणामे की छल जे ओइ सभ बातपर कोनो कान-बात नहि दऽ अप्पन कर्तव्य-कर्ममे लागल रहला। आइयो ओहिना ई अप्पन कर्ममे लागल रहै छैथ। कोनो तरहक गलौसीमे हिनका नहि देखबैन। गप मारलासँ होइतो तँ नहियेँ छै किछु, हँ तखन समयक बेरबादी तँ हेबे करै छै जइसँ काजक नोकसान सेहो होइते छइ। बेर-बेर मनमे आबि जाइत अछि ‘हाथी चलए बाजार, कुत्ता भुके हजार’।

मण्डलजी अपना रचनामे ठाम-ठाम केतेको बेर लिखैत रहला अछि जे जीवनमे कखनो निराश नइ होइ। सदिखन आशावान भऽ अप्पन काजमे लागल रही, समयकेँ पकैड़ समयक संग समयकेँ उपयोग करी। कोनो पहलूक पक्ष जहिना खराप (नाकारात्मक) भऽ सकै छै तहिना नीक (सकारात्मक) सेहो होइते छइ।

अपनो यएह अवधारणा अछि जे समयकेँ ओहिना नहि बिताबी। काज करैत रही। अहाँ बैसियेकऽ समय बिताएब, किछु करबे ने करब, तैठाम किछु करबकेँ नीक मानि किछु-ने-किछु करैत रहल छी।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल गद्यमे आएल विचारक सङ्कलन जे ‘आजुक जीवन आजुक साहित्य’केँ प्रमाणित करैत समयक संग धाराप्रवाह चलैत जा रहल अछि, बढ़ैत जा रहल अछि। जनिका सम्बन्धमे स्थापित ओ वरीय साहित्यकार श्री मन्त्रेश्वर झा (आई.ए.एस.) लिखने छैथ- “जइ गाम घरक कथा सभ मण्डलजी उठाए ओकरा परिणति तक पहुँचओने छथि तइ गाम घरक एतेक सूक्ष्म आ विस्तृत विवरण मैथिली साहित्यमे एहिसँ पूर्व कमे भेल अछि।”

क्रमश: जगदीश प्रसाद मण्डलजीक विषयमे हिनक ‘जिनगीक जीत’ उपन्यासक आमुखमे मैथिलीक सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. तारानंद ‘वियोगी’क कहनाम छैन- “जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्यमे मिथिलाक ग्रामीण

समाजक अद्भुत चित्र आएल अछि। मैथिलीमे एहि वस्तुक खगता सभ दिनसँ रहल अछि। हमरा लोकनि अक्सरहां चिन्तित होइत रहै छी जे गाम उजरि रहल अछि, गामक सम्बन्धमे जतबे जे किछु लेखन भऽ रहल अछि से निगेटिभ फोर्ससँ भरल अछि, अधिकाधिक हताश करऽ बला अछि। हमरा लगैत अछि जे जीवनकेँ देखबाक जे दृष्टिकोण जगदीशजीक छनि से आम मैथिली साहित्यकारक दृष्टिकोणसँ फराक छनि तेँ ओ एहन चित्र रचि पबैत छथि जे सामान्यसँ हटि कऽ अछि।"

अहिना मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध रचनाकार ओ आलोचक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र सेहो हिनका-दे माने श्री जगदीश प्रसाद मण्डल-दे लिखलैन अछि-

"एहेन रचना अगर मैथिली साहित्यमे लगातार हो आ ऐ तरहक रचनाक प्रचार-प्रसार नीकसँ कुनो जाति-पाति, वर्ग, सम्प्रदाय, स्थानीयता आदिक दुर्भावनासँ दूर भऽ कएल जाए तँ मैथिली साहित्य महिमा-मण्डित भऽ एक गौरवशाली परम्पराकेँ प्रारम्भ कऽ सकैत अछि।"

कोनो रचनाक मूल्याङ्कन समय करैत अछि। समयानुकूल रचना छी वा नहि, ई समय आँकि बुझल जा सकैए। मुदा से आंकएबला सबहक काज छिऐन। अपने एकटा अदना आदमी छी, ई किनकोसँ छुपल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। हँ, तखन शोध कार्यसँ सम्बन्धित जे अपना ऊपर जिम्मा अछि तइमे जखन जेना जे कए पेबाक बल पबै छी ओ करबाक चेष्टा जरूर करैत आबि रहल छी।

जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन रचनाकेँ अपना धारणानुकूल ओहन मूर्त्तरूपमे गढ़ए चाहि रहला अछि जे भूत, वर्तमान ओ भविष्य- तीनू समयमे अपन रूप बना ठाढ़ रहए। कोनौं समस्याक जड़ि वर्तमान रहितो ओ भूत बनि जाइए, तँए भूतोकेँ पकैड़ राखए पड़त, वर्तमान तँ सहजहि प्रत्यक्ष अछिए जे सामाजिक धारा शुद्ध-अशुद्ध करैत चलिते अछि, जैपर भविष्यक भवन ठाढ़ होइत अछि। ओना, मण्डलजीक सोच ईहो छैन जे जिनगी नम्हरो होइए माने महीनो-वर्षबला होइए आ एकदिना सेहो होइत अछि। एकदिना जिनगी भेल

एक घटनाक जीवन। ओना, एहेन-एहेन घटना जिनगीक बीच चलिते रहैए, किएक तँ ओहन घटना फेर जीवनमे दोहरा कऽ अबितो अछि आ नहियोँ अबैए। एहेन जे जीवन अछि ओहो ने जीवने भेल। मण्डलजी मूलत: जीवनक रचनाकार छैथ। ओ बेकतीगत जीवनसँ आगू बढ़ि सामाजिक जीवनकेँ विशेष महत्व दैत रहला अछि, तँए हिनक सभ रचना सामाजिक रूप धारण केने रहै छैन।

उपरोक्त सन्दर्भमे 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (www.videha.co.in) केर सम्पादक साहित्यकार श्री गजेन्द्र ठाकुरक कहब सेहो विचारणीय ओ युक्तिसंगत बुझि पड़त जे निम्नवत अछि-

"जगदीश प्रसाद मण्डलक कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरूद्ध पारम्परिक आजीविकाक गौरव महिमा मण्डित भेटैत अछि। आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर बेकतीगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी; सएह लिखै छी तइ कारणसँ।"

गजेन्द्र ठाकुरजी 2012 इस्वीमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक वायोग्राफी लिखि चुकल छैथ। अत: ओ जहिना मण्डलजीक जीवन-शिल्प उपरोक्त वानगीमे प्रस्तुत केलैन तहिना हुनक रचना-शिल्पक सम्बन्धमे कहलैन अछि-

"यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखौल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक समाजिके क्षेत्रटामे नहि वरन आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्ति आनत।"

ओना तँ बहुत विद्वान-मनीषी लोकनिक कलम मण्डलजीपर चलल छैन, सम्प्रति सबहक जिक्र लेल यथोचित अवकाश नहि। तथापि जहिना प्रसिद्धि पाओल विद्वज्जन छैथ तहिना एकान्तवासमे संघर्षरत रचनाकार मण्डलजी नहि छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अत: एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक

श्रेष्ठ कविक रूपमे चर्चित श्री राजदेव मण्डल जे कि एकांकी, नाटक, कविता, कथा, पटकथा, उपन्यासादि साहित्यक सभ मौलिक विधामे हिनक कलम चलैत रहलैन अछि, जगदीश प्रसाद मण्डलक 'उत्थान-पतन' उपन्यासक आमुख सेहो लिखने छैथ। हिनक कहब छैन- "केहनो अकर्मण्य बेकती जँ पूर्ण मनोयोगक संग आर्थिक उन्नतिमे दत्तचित भऽ जाए तँ हुनक प्रगति होएब निश्चित भऽ जाइत अछि। ऐ दर्शनकेँ देखेबाक प्रयत्न लेखक (जगदीश प्रसाद मण्डल) पात्र श्यामानन्द द्वारा केलैन अछि। परिवर्तनशीलता संसारक निअम छी। सामन्तवादसँ पूँजीवाद आ पूँजीवादक गर्भेसँ समाजवादक जन्म सेहो होइत अछि। ई अलग बात जे पूँजीवादसँ साम्राज्यवाद सेहो पनपैत अछि।"

उपरोक्त वानगी सदृश एक आर वानगी जज साहैबक उद्धृत करब आवश्यक बुझै छी। जज साहैबक माने श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र, जे मैथिली साहित्यमे अपन बेछप स्थान बना चुकल छैथ। कथा, कविता, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा वृतान्त, शोध आलेख आदि अनेको विधामे नियमित लिखएबला साहित्यकार छैथ। ओ अपन ब्लॉग 'भोरसँ साँझ धरि'मे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'लहसन' उपन्यासक समीक्षा करैत लिखने छैथ-

"श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 'लहसन' उपन्यासकेँ पढ़लासँ पाठक थोड़बे कालमे समाजक निम्नतम पौदानपर ठाढ़ लोकक जिनगीक बारेमे बहुत किछु बुझि सकैत छथि। किछु एहन करबाक प्रेरणा प्राप्त कए सकैत छथि जाहिसँ मेवालाल सन-सन गरीब लोकसभकेँ गाम छोड़ि कलकत्ता सन महानगर पलायन नहि करय पड़नि। एहिसँ प्रेरणा लए समाजक समृद्ध लोकनि किछु करथि जाहिसँ गाम-घरसँ पलायन बन्द होअए आ गाम एकबेर फेर पल्लवित-पुष्पित भए जाए।"

अही तरहेँ मैथिलीक चर्चित विद्वान डॉ. योगानन्द झा लिखै छैथ, "श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन पाठककेँ एकटा निस्सन संदेश प्रदान कऽ ओकर साधारणीकरणमे सक्षम सिद्ध होइत अछि आ साहित्यक कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे हेतुकेँ प्रतिपादित करबामे समर्थ सिद्ध होइत अछि।"

अन्तमे पोथीक शीर्षक स्वातिसुतक परिपेक्ष्यमे अर्थात् स्वाति नक्षत्रक बून सितुआक मुँहमे जे मोती बनैए, तेकर चर्चा श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन रचनामे आइ धरि जइ-जइ ठाम केलैन ओकरा हम ऐठाम यथावत राखि रहल छी। परिवेशक संग परिपेक्ष्यकेँ बुझबाक हेतु किछु विस्तारसँ राखि रहल अछि। कोन गद्यांश केतएसँ आएल अछि तेकर विवरणक संग, जे कि फुटनोटमे अंकित कएल अछि-

1.

"बौआ रघुवीर, खेतो आ खेतियो की सबहक एके रंग अछि जे एके रंग नीक-बेजए हएत। रंग-रंगक खेतियो छै आ रंग-रंगक लाभो-हानि।"

पिताक बात रघुवीर नीक जकाँ नै बुझि सकल, तेकर कारण भेल जे ओ खेतकेँ खेते आ फसिलकेँ फसिले बुझैए। ई नै बुझि पबैए जे फसिल-फसिलकेँ पानिक खगतो कम-बेसी होइ छइ। कोनो एहेन होइ छै जे डाँर लग तक पानिमे ओफा करैए तँ कोनो एहेन होइ छै जे जड़ि-पनियामे ओफा करैए आ कोनो एहनो होइ छै जे ऊपरेसँ छिच्चा पाबि ओफा करैए आ तहिना कोनो एहनो होइ छै जे जड़िये-जड़ि पटौलासँ ओफा करै छै...।

फेर दोहरबैत रघुवीर बाजल- "काका, खेती तँ खेती भेल, तखन मौसमक असैर तँ एके रंग ने सभकेँ हएत।"

रघुवीरक प्रश्नक ओझरीकेँ सोझरबैत घुरना काका बजला- "बौआ, अनकर बात छोड़ह। अपन देखहक। काल्हि सजमैनक खेत पटौने छेलौं किने, माटि तँ गिलगर भइये गेल अछि, मुदा ऊपरका पात आ मुड़ी भीजबे ने कएल। अछैते नमीए ओ पियासल रहि गेल। ओना, लत्तीक माध्यमसँ हाल पीबे करत मुदा अपना मुहेँ पीलासँ जे पानिक तृष्णा मेटाइ छै से थोड़े हएत। जे झकास झकैस रहल अछि ओ मुँहमे अमृत दऽ रहल अछि। जेते बाढ़ि आठ दिनमे हएत तेते एके दिनमे हएत। पाँचे दिनमे देखियहक जे दोबरा-तेबरा जाएत। जखने लत्ती बढ़ियाएत तखने ओइमे गिरहे-गिरह कनोजैरो चलत, फुलो चलत आ

फुलबतियो चलत। यएह ने भेल अमृत बरिसब।”

अपना जनैत घुरना काका रघुवीरकेँ बुझबैत कहलैन मुदा बाल-बोध रघुवीर नीक जकाँ तैयो ने बुझि पेलक। बाजल- “काका, पानि तँ पानि भेल, अमृत केना भेल?”

रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना कक्काक मनमे तामस नै भेलैन, भेलैन ई जे अखन रघुवीर बाल-बोध अछि, पानिक तरी-घटी नीक जकाँ नै बुझि रहल अछि...।

बुझबैत कहलखिन- “बौआ, देखबहक जे स्वाति नक्षत्रक बुन्न सितुआक मुँहमे पड़ने मोती, बाँसक मुँहमे पड़ने वंशलोचन, केरा मुँहपर पड़ने करपूर आ साँपक मुँहमे पड़ने बीख बनि जाइए। रहैए एके चीज मुदा जगह-जगहपर बदैल जाइए।”

पिताक बात रघुवीर नीक जकाँ ने बुझबे कएल आ ने सोलहन्नी नहियेँ बुझलक। अधखिज्जू जकाँ अदहा-छिदहा बुझबो केलक आ अदहा-छिदहा नहियेँ बुझलक। बाजल- “काका, एना किए होइए?”

रघुवीरक प्रश्न सुनि घुरना कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक रघुवीर ने नीक जकाँ बुझबे केलक आ ने नहियेँ बुझलक। बुझबो तँ असान नहियेँ अछि, ओझराएल तँ ऐछे...।

सोझरबैत बजला- “बौआ, जहिना गाम-गामक पानि आ बोल किछु ने किछु बदलिये जाइए तहिना ने मासो-नक्षत्रक अछि।” [1]

2.

जिनगी चलबैक काज जिनगीए रोकि देत तखन आगू मुहेँ गाड़ी ससरत केना? लगले आगूमे ठाढ़ दीपकपर नजैर पहुँचते मनमे उठलैन, काल्हिए भरि समय अछि तैबीच दोसर काजमे समय गमाएब उचित नहि। जिनगीक बहुत पैघ काजक परीक्षा छी। काल्हि दिन बेटाक मुहेँ सुनब केते ग्लानिक बात हएत

[1] **बाल-गोपाल, 2014, झकास, पृष्ठ संख्या: 43-44**

जे कहत पढ़ैक खर्च पिताजी नै जुमा सकला तँए आगू बढ़ैमे बाधा भेल। ओना, जेकर पिता समयसँ पहिने मरि जाइ छथिन, ओ केना पढ़ि पौत। मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि। जिबठ बान्हि पढ़निहार तँ पढ़िये लैत अछि। खाएर जे हौउ, जैठाम एहेन परिस्थिति बनैए तैठामक प्रश्न ई भेल। ऐठाम तँ से नै अछि। अपन मनक अभिलाषा अछि जे बेटाकेँ स्नातक बना दुनियाँक बीच ठाढ़ करी। सघन बोनमे हराएल जकाँ माइक मुँह देखि दीपक बाजल-

"बाबूजी, आइ जेते खर्चक पाबैन भऽ गेल अछि, ओहेन खर्चक पाबैन पूर्वज केना बनौलैन जे परिवार-लोक तंग होइत रहैए।"

दीपकक प्रश्नक गंभीरता रविकान्तक मनकेँ ओहिना घकेल देलकैन जहिना कियो घारक महारपर सँ बहैत बीच धारमे धकेल दइ छइ। मुदा अपन गुरुतर भार देखि रविकान्त बजला- "बौआ, तोहर प्रश्न ओहेन छह जेहेन मनुक्ख आ मनुक्खक छापल कागतक चित्र हुअ। अदौसँ रहल जे आजुक श्रमक फल आजुक जिनगीकेँ केते फलित केलक। तँए किछु बँचा कऽ काल्हि लेल राखब अनुचित भेल, एहेनठाम पाबैन-तिहार केना हएत? मुदा...।"

विस्मित होइत पिताकेँ देखि दीपक बाजल-

"मुदा की?"

एक दिस काज आ दोसर दिस आराम कुर्सी, तैबीच जहिना कियो ठकुआ जाइत तहिना रविकान्त ठकुआ गेला। बेटाक जिज्ञासा भरल प्रश्न स्वाति नक्षत्रक अमृत बून जकाँ भऽ गेलैन, जइसँ एक दिस मोती बनैत तँ दोसर दिस बिष सेहो बनैत अछि। ओना, केकरो प्रश्नक उत्तर पाबि जे संतोख होइ छै ओ वएह उत्तर लदलासँ कम होइ छै, तँए एक दिस दीपककेँ बुझा देब रविकान्त जरूरी बुझैथ तँ दोसर दिस जिनगीक एक सीढ़ी टपैक काज देखैथ। दुनूमे सँ कोनो छोड़बैबला नहि। कारण, जँ समयपर पाइक ओरियान नै हएत, फारम नै भराएत तँ परीक्षा केना देत? तहूमे अपना हाथमे पाइ कम अछि कोनो ब्यौंत करए पड़त। अनका हाथक काजक ठेकाने केते। मुदा दीपको तँ परीक्षामे बैसैबला विद्यार्थी छी, अखन जेते ओकरा बरावरीकेँ भरल जेतै, तेते ने परीक्षामे असान हेतइ। ताल-मेल बैसबैत रविकान्त बजला- "बौआ, किसानी जिनगीमे

किसानसँ लऽ कऽ काज केनिहार धरि अगहनमे धान घर अनैए। चाहे खेतक उपजा होइ आकि बोइन आकि आरो-आरो उपए, जेना-जेना अगहनक पछाइत समय आगू बढ़ैए तेना-तेना खर्च होइत जाइ छै, माने घटबी होइ छइ। एक दिस, भदबारिमे जे भदइ-धान आकि मरूआ होइ छै ओकरा पाबैन-तिहारमे अशुद्ध मानल जाइए। दोसर दिस आसीनक पनरह दिन खएन-पीअनि होइए आ ऐगला पनरह दिन दुर्गापूजासँ कोजगरा धरि होइए। तहिना कोजगरा प्रात जे कातिक चढ़ैए, ओकरा धर्ममास मानि अनेको तीर्थ-व्रत आ पाबैन-तिहार होइए। एहेन स्थितिमे की कएल जाए..? मुदा अखन बेसी कहैक समय नै अछि। केकरो हाथे बच्छा बेच पहिने तोहर काज आगू बढ़ा देबह पछाइत कहियो निचेनसँ आगूक बात कहबह।”[2]

3.

परोपट्टामे बड़ी लाइनक गाड़ी आ बिहारकेँ महानगरसँ जुड़ैक बाटक चर्च सुनिते लोक, सुतल गाए जकाँ कान पटपटौलक। एन.एच.57क दूरबीनक काज शुरू होइते अन्नक संग कुअन्नो सौनक मेघ जकाँ सिसकए लगल। दूरबीनसँ देखिनहार इंजीनियर सभसँ गामक लोक सभकेँ भेँट भेलइ। जहिना साँपक मुँह साँप चटैए तहिना लोक पुछब शुरू केलक। गामक लोको तँ बुधिक बखारीए छी, मरूआक छी आकि तीसीक, धानक छी आकि चाउरक से बुझैक काजे कोन छइ। सरकारी छी सरकार बनबैए। कमीशनक कारोबार हेबे करतै। जहिना सीढ़ीनुमा ढाल अछि तहिना कमीशनो चढ़बे करत। मुदा से बिनु चाह-पान खुऔने थोड़े हएत। भाइ! मिथिला छिऐ, हमरा गाम अहाँ काज करए एलौं आ कुशलो-छेम नै पुछी, चाहो-पान नै कराबी तखन हमरा सबहक सेखीए की रहत। बहरवैया इंजीनियर मिथिलाकेँ पवित्र भूमि बुझबे करैए। भाषा नइ बुझैए तँ नै बुझह मुदा पवित्र बुझि पावन तँ करबे करत। सोझ मतिये बजबो करैत- “विदेशी पूजीक सहयोगसँ बनि रहल अछि, पाइक कमी नै छै, इलाका

---

[2] **पतझार, 2014, पाइक मोल, पृष्ठ संख्या: 17-19**

धुधुआ जाएत।”

नक्शा बनला पछाइत जखन जमीनक प्रश्न उठल तँ हजारो बर्खक मुइलहा जमीन सबहक मुँहमे स्वाति नक्षत्रक अमृत खसल। साए-सैंकड़ा रुपैआक कट्ठा जमीन हजार-लाखमे कूदल। गाम-गाम चाह-पानक दोकान चौकक निर्माण केलक। सड़कक बीच जे जमीन पड़ल ओकर हस्तान्तरण शुरू भेल। भेल दुनू, किछु गोरेक जमीन लूटा गेल तँ किछु गोरे लूटबो केलक। लूटलक ई जे ताल-मेल बैसा टटघरकेँ कोठा मकानक दाम लेलक। खाली जमीनक दामेक लाभ भेल से नहि, गाम-गामक रस्ता-बाटक सम्पर्को बनल। मुदा गाम-गामसँ पड़ाएल लोक दुआरे पाइक जेहेन मोल हेबा चाही से नै भेल। संगे जइ गतिये हेबा चाही सेहो नै भऽ रहल अछि।[3]

4.

“बौआ, जखन समाजमे छी तखन बहुत बात बुझऽ देखऽ पड़तह, मुदा से नहि, लोके-लोक परिवार बनै छै, परिवारे-परिवार समाज बनै छै आ समाजे-समाज देश-बनै छइ। ई भेल अपन जिनगीक बाट-घाट। अही बीच अपनो जीबैत चलबह जइसँ परिवारोकेँ जिनगी भेटतह आ ओहो जीबैत चलतह।”

पिताक विचार सुनि रघूकेँ जेना जेठुआ बम्बै आमक बोनेलहा सुआद भेटल होइ तहिना बिहुसि उठल- “बाबू, अहाँ खाली दहिना हाथक ओंगरीक इशारा करैत ने चलू, जेते देहमे दम अछि तइसँ पाछू नै हटब।”

सौनक पहिल फुहार जकाँ सोनाय कक्काक मनमे पड़लैन। आँखि उठा रघूक आँखिपर दैत बजला- “बौआ, एकाएक समयमे भुमकम आबि गेल अछि.! अइमे केना थीर भऽ कऽ रहबह, एकर परीक्षाक कठिन समय आबि गेल अछि।”

रघू बाजल- “ई तँ भेल संकट, मुदा एकर मोचन केना हएत से ते अहीं ने

---

[3] **पतझार, 2014, अपन सन मुँह, पृष्ठ संख्या: 49-50**

विचारि कऽ कहब।”

विचारक बाट बेटाकेँ पकड़ैत देखि सोनाय कक्काक मनमे स्वाति नक्षत्रक बून बाँसमे पड़ि गेने जहिना वंशलोचन बनि जाइ छै तहिना बुझि पड़लैन। छाती उघारि बजला- “बौआ, आठ कट्ठा जमीनबला कियो अपन मोल बुझैए.! अपने सभ बिकाए चाहैए.! कीनिनिहारोक कमी छै, जे नइ कीनत। अहिना मनुक्खक खरीद-बिकरी दुनियाँमे होइ छै.! मुदा दुनियाँ-दारीक बात छोड़ह।”

बात छुटैत सुनि रघूकेँ मनमे भेल जे जखने बात छुटत तखने काज छुटत, जखने काज छुटत तखने घरक गति छुटत जइसँ परिवारक नोकसान हएत...।

मुदा ई नइ बुझि पेलक जे गामेक बाधक खेत जकाँ परिवारमे छोट-पैघ, नीच-ऊँच, धार-धूर सभ किछु रहै छइ। तहीमे जँ इचना माछ जकाँ ओझरा जाएब तखन समाजक परिवार केना बनत?

विचारक जे दिशा अछि ओ काजक दिशाक अनुकूल चलैए। मुदा ऐठाम बोनिहारक ओकाइतबला सोनाय काका अपन स्वावलंबी जिनगी बना जीबैत एला अछि, आ आइक परिस्थितिमे केना ठाढ़ रहता, यएह विचार मनक मोइन बनि फुटऽ चाहै छैन, मुदा धकमका रहला अछि। धकमका ऐ दुआरे रहला अछि, जे दूटा बच्चा स्कूल जाइबला अछि ओकरा प्राइवेट स्कूल जाए देब आकि सरकारी। सार्वजनिक विद्यालयमे केतौ मकान नइ छै, तँ केतौ शिक्षक नहि, केतौ शिक्षक अछि तँ पढ़ौनिहार नहि...।

..एहेन स्थितिमे समयसँ मुकाबला करैक संस्कार पोतामे केना औत? मुदा लगले मन घुमि परिवारेक बीच आबि गेलैन। बजला- “बौआ, जेतबे खेत-पथार छह तेकरे नीक जकाँ परेखह। केहेन काज आ केतेटा काज सम्हारैक शक्ति छह। तइ हिसाबसँ अपनाकेँ असथिर रखैत आगू बढ़ैक कोशिश करह।”[4]

---

[4] **मधुमाछी, 2015, दनगर घास, पृष्ठ संख्या: 24-25**

5.

ने कियो बजनिहार आ ने कियो सुननिहार। मुदा किछुकालक पछाइत चुप्पी तोड़ैत बिशेसर काका बजला- “रवि, एना बात नइ बुझब। जड़िसँ सभ बात कहह।”

बिशेसर कक्काक विचारसँ रवि भाइक मन थलथलाए लगलैन। थलथलाइत मन दलदलाइत रूप पकैड़ फुटल- “काका, दू भाँइक भैयारी अछि से तँ बुझले अछि?”

समर्थन करैत बिशेसर काका बजला- “ऐमे के नइ कहतह।”

रवि भाय बजला- “आठ बीघा जमीन दुनू भाँइक बीच अछि।”

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला-

“पहिने अपन संकल्प कहह। खेत-पथार कोन चीज छी जे तइले परान गमेबह।”

बिशेसर कक्काक बात सुनिते रवि भाँइक मनमे जेना स्वाति नक्षत्रक पहिल बून खसल होनि तहिना मीठपन जगलैन। बजला- “काका, सभ दिन अहाँ सबहक संग रहैत आएल छी, अहाँमे बेसी कलेवर अछि तँए बेसी संकल्प अछि मुदा हम ओहन नइ छी तँए कनी कम अछि।”

अपन संगीक तुलित विचार सुनि बिशेसर कक्काक मनमे उठलैन जे रविक चित्त तँ तखन ने बुझब जखन प्रश्नक पाछू समय कम आ उत्तर पबै पाछू बेसी विचार करब। मुदा ऐठाम तँ रवि प्रश्नक जड़ि दिस बढ़िये ने रहल अछि। बजला- “रवि, पहिने संकल्प बाजह।”

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाइक मन गवाही देलकैन जे भरिसक अपनापनमे पुछि रहला अछि...।

रवि भाय बजला- “काका, जहिये अहाँक संगतमे एलौं तहिये मनमे रोपि लेलौं जे दोसराक पमौजी नइ करब, अपन स्वतंत्र जीवन धारण करब।”[5]

---

[5] **क्रान्तियोग, 2017, खेतक बँटबारा, पृष्ठ संख्या: 49-50**

6.

जेठ मास छी दशराहा परसुए भेल। भूत-प्रेतक बास गाछी-बिरछीमे होइ छइ। अखन तँ दू माससँ सभ गाछी-बिरछीमे आम-जामुनक ओगरवाह बैसले हएत, तखन तँ भूतो-प्रेत ने ओगरवाहक डरे पड़ा गेल हएत। ओना, जखन आम-जामुन गाछमे लटकल रहैए आ ओगरवाह बीच गाछीमे मचान बना जगलो रहैए आ सुतलो रहैए तखन कहाँ केकरो भूत लगै छइ? जखन आम-जामुन गाछी-बिरछीमे नइ रहल तखन पतखरड़नी सभकेँ कहियो काल बँसबिट्टीमे चुड़ीन-तुड़ीन लगितो अछि, मुदा सेहो मास तँ नहियेँ छी..!

केतबो मनकेँ असथिर करी तैयो किछु-ने-किछु उपकिये जाए। अपना घरसँ कनी पाछूए रही कि मनमे फेर उठल- जँ कहीं नेबुआवाली भौजी झुठे कहने हेती, तखन? फेर लगले भेल जे भूतो तँ भूत छी, कोनो कि एक्के रंगक आकि एक्केटा अछि। रंग-बिरंगक अछि। मुदा कोन रंगक अछि ओ तँ देखला-बुझला पछातिये फरिछाएत, तइले अनेरे मनकेँ भरियौने छी। मन हल्लुक होइते लोकक मनकेँ मन देखए लगल। लोकक मनपर मोन पड़िते मन थीर भेल। थीर होइते उठल- कहू! समय ओते आगू बढ़ि गेल जे लोक अँगनाक मड़बासँ ऊपर उठि हवाइये जहाजमे बिआहो करैए, भोजो-भात करैए, मुदा गाम-घरमे अखनो भूत-प्रेत लगिते छइ! एक्कैसमियो सदीमे जँ अहिना भूतमे लोक भुतियाइत रहत तखन ओझा-गुनी केतए-सँ औत। मन ठमैक गेल।

ठमैकते मनमे उठल, परसू जेठक दशराहा छल। एक तँ तीन माससँ एको बून पानि नहि पड़ल, ओहिना वायुमण्डल गर्म अछि, तैपर रौदो तेहेन होइए जे माटिक रस तेना चुइस नेने अछि जे रसे-बेरस भऽ गेल छइ। दिनक दसे बजेसँ बाध-बोनमे लू चलए लगै छइ। भऽ सकैए जे कोनो काजे पत्नी बाध दिस गेल हेती आ लू-तू पकैड़ नेने होनि जइसँ मन गरमा गेल होनि आ बताहि जकाँ आकि भूतलग्गू जकाँ बोलीक बानि भऽ गेल होनि। किएक तँ मौसमक हिसाबसँ सभ किछु नहियोँ तैयो बहुत किछु तँ बदलियो जाइए। ओना, मौसमो-मौसमोक अपन-अपन चालि-प्रकृति छइ। बरसातक पछाइत जे स्वाति नक्षत्र

अबैए आ ओकर जे बून छै ओ जँ केराक मुँहपर पड़त तँ कपूर बनत, सिप्पीक मुँहपर पड़त तँ मोती बनत आ साँपक मुँहपर पड़त तँ बीखे बनत किने। भलेँ एक्के नक्षत्र आ एक्के बर्खाक बून किए ने हौउ। तहिना ने जाड़क पछातिक मौसमक बून आकि गरमीक पछातिक मौसमक बूनमे सेहो अन्तर हेबे करत..?

रंग-रंगक विचार मनमे उठिये रहल छल ता घर लग पहुँच गेलौं आ पत्नीकेँ दलानक आगूमे ठाढ़ देखलयैन। चुप-चाप ठाढ़ छेली तँए बोलक बाइनिक कोनो आभास नहियेँ भेल। ओना, अखन धरिक जिनगीमे दुनू परानीक बीचक जे सम्बन्ध रहल अछि ओइमे कहियो कोनो खटास नहियेँ आएल अछि जइसँ कोनो छोटो-क्षीण अबिसवास जगैत। ओना, वैचारिक रूपमे कहियो काल विचार-भेद जरूर होइए मुदा ओकर समाधान तँ परिवारक चलैत जिनगीक धारक क्रियाक रूपमे भइये जाइए।

हमरा देखिते पत्नी बजली- “एते रौदमे किए चललौं। कनीकाल मधबनियेँमे बिलैम जाइतौं से नहि?”[6]

7.

“सिंहेश्वर, अखने कनी पहिने भाँज लगल जे फकीरबा बाबा दुनियाँ छोड़ि देलैन। अपने ने चलि गेलाह, मुदा...।”

अनुपलाल कक्काक विचारकेँ स्वीकारैत बजलौं- “चलू, जखन ओछाइन छोड़ि देलौं तखन तैयारे-तैयार छी।”

दुनू गोरे संगे विदा भेलौं। कनियेँ आगू बढ़लौं कि अनुपलाल काका बजला- “सुनैमे आएल अछि जे शुभ मुहूर्तमे फकीरबा बाबाक मृत्यु भेलैन अछि।”

अखन तक अपने ‘मुहूर्त’ नइ बुझै छेलौं, ओना खगतो ने कहियो भेल। तैठाम ‘शुभ’ आ ‘अशुभ’ केना बुझब? बजलौं- “की ‘शुभ मुहूर्त’ कहलिऐ काका?”

---

[6] **त्रिकालदर्शी, 2017, भूतलग्गू आकि भविसलग्गू, पृष्ठ: 11-13**

अनुपलाल काका बजला- “बारह बजे रातिक पछाइत आ एक बजेक बीच प्राण तियाग केलैन।”

अखन तक अपने यएह बुझै छेलौं जे मरण-हरणमे की ‘शुभ’ हएत आकि अशुभ हएत! यमराजक घरसँ जखने रसीद कटत कि दूत पहुँच निलामी जमीन जकाँ ढोल्हो दऽ देत। ओना, अखन धरि अनुपलाल कक्काक प्रति जे बिसवास मनक भीतर रहल अछि ओ एहेन रहल अछि जे समाजक भातिजकेँ पित्तीक प्रति हेबा चाही। अपनो मन सदिकाल कहैले तैयार रहैए जे अनुपलाल काका नीक छोड़ि अधला कहियो ने केलैन अछि। चाहे ओ विचारक क्षेत्र हो वा जीवनक कोनो आनो क्षेत्र...। बजलौं- “काका, की कहलिऐ ‘शुभ मुहूर्त’?”

‘शुभ मुहूर्त’केँ शुभ विचारमे रंगैत अनुपलाल काका मने-मन हँसबो करैत रहैथ आ हँसपनसँ बजबो केलैन- “सिंहेश्वर, जहिना स्वाति नक्षत्रक बून बाँसमे बंशलोचन, सितुआक मुँहमे मोती आ केरा मुँहमे पड़ने कपूर होइए तहिना मनुक्खोक जन्म पनिगर समुद्रमे लाल होइए। आ तहिना चोरो-चहार घरक सीनसँ लऽ कऽ पॉकेट होइत गरदैन काटै तक पहुँचते अछि। यएह प्रभाव ओ मुहूर्त छी। केकरो शुभ, केकरो अशुभ। मुदा समय तँ अपना गतिये अपना घुरीपर चलैत रहल अछि आ आगूओ चलत।”

अपना जनैत अनुपलाल काका एकसूरे बाजि गेला मुदा अपने बुझलौं साढ़े बाइस। मुदा तैयो महराइ गौनिहार महराजकेँ जँ एकटा देवानजी–माने पलगाँइ–नइ रहत तँ महराइक राग केना मिलत। भलेँ ओ राजा-रजबारक देवानजी जकाँ नै हुअए जे हिसाब जोड़ै काल ‘एकानबे’केँ ‘एक’ लिख हाथमे जे ‘नब्बे’केँ ‘नअ’ बना रखै छला ओ हाथेमे रहि जाइ छेलैन, तेहेन नहि। तेकर कारणो अछि जे ओ राजा-रजबारमे रहै छला आ महराइक महराजक मुँह-लगुआ देवानजीक संगे-संग सूर-मे-सूर सेहो मिलैबते छैन। जे महराज महि कऽ महि-महि मथनीमे घोरै छैथ..! रागमे तान मिलबैत बजलौं- “हँ, से ठीके किने!”[7]

---

[7] **खिलतोड़ भूमि, 2019, फकीरबा स्थान, पृष्ठ संख्या: 09-11**

8.

अखन एतबे बुझह जे समाजमे पसरल जे जाति-सम्प्रदाय अछि तइसँ बहुत ऊपर उठल विचार लक्ष्मीनाथ गोसाईंक छेलैन। ओ जहिना देशक प्रमुख देवस्थानक भ्रमण केलैन तहिना मिथिला-भ्रमण सेहो केलैन। अखन से सभ नहि। लक्ष्मीनाथ गोसाईंकेँ जहिना क्रिश्चन धर्मबला शिष्य जौन-वरिआही कोठीक छेलैन तहिना मुसलमानी सम्प्रदायक मुंगेरक मुहम्मद गौस सेहो छेलैन, तहिना प्रयागक राजाराम शास्त्री सेहो छेलैन। अखन एतबे। किए तँ जन-जनमे बास करैबला लक्ष्मीनाथ गोसाईं जन-जागरण केना केलैन, मुख्य विषय से अछि।”

ओना, जन-जागरण शब्द दुनू गोरे सुनने अछि मुदा ओकर बेवहारिक पक्ष की अछि तइसँ ने तेतरेकेँ आ ने गुलटेनेकेँ भेँट भेल छल। एक तँ नव शब्द, दोसर ओइ शब्दक माने जन-जागरण शब्दक बेवहारिक रूप सुनि दुनूक मनमे एकटा आरो नव चेतनाक जन्म भेल। ओ भेल ई जे जेते शब्द अछि की ओकर बेवहारिक पक्ष माने क्रियागत पक्ष सेहो अछि? मुदा बाजल दुनूमे सँ कियो ने किछु। तेकर कारण भेल जे दीनानाथ बाबूक मुहेँ सुनि चुकल छल जे जेतबे समय घन्टीक (ट्यूटोरियल क्लासक) शेष बँचल अछि तेतबे ने कहि सकबह। दुनूक मनमे छेलैहे जे पहिनहिसँ जे कहैत आबि रहला अछि पहिने ओ सुनब प्रमुख भेल। गुलटेन बाजल-

“तीनटा बात तँ मोटा-मोटी आबिये गेल, शेष चारिम बाँकी अछि। तेकर उत्तर बुझला पछाइत जँ समय बँचत तँ रस्तो-रस्तो ऐ पश्नकेँ बुझि लेब।”

गुलटेनक बात सुनि दीनानाथ बाबूक मनमे उठलैन जे जखन मनक पिपासा एते उग्र भऽ जगि गेल छै तखन अपनो किए ने स्वाति नक्षत्रक बून जकाँ बरैसिये जाइ। मुदा लगले मन बिचड़ैत विचार देलकैन जे कोनो रोगक दबाइ खोराके-खोराक देब अधिक हितकर होइए, तहूमे जे सामाजिक रोग गाम-समाजक बीच पसरल अछि तेकरा जँ रानी सरंगाक खिस्सा जकाँ भरि राति सुनाइये देब तइसँ जे लाभक इच्छासँ सुनबए चाहि रहल छी से थोड़े

हएत। ओ तखने हएत जखन एक-एक डेगकेँ हाथसँ नापि, हाथकेँ बीतसँ नापि आ बीतकेँ आँगुरसँ नापि ओकर रूप प्रकट करब। से तँ तखने सम्भव अछि जखन ओकर वैचारिक पक्षक संग बेवहारिक पक्ष सेहो राखल जाए। दीनानाथ बाबू बजला- "पहिल आ दोसर-तेसर विचार बुझैमे केतौ कोनो बाधो बुझि पड़ि रहल छह?"

गुलटेन बाजल- "नहि।"

तेतरकेँ सकपकाइत देखि दीनानाथ बाबू बजला-

"तेतर तोरा?"

तेतर बाजल- "हँ। दोसर आ तेसर माने जाति आ सम्प्रदायक बीच स्पष्ट अन्तर नहि बुझिमे आएल।"

समयकेँ नजैरमे रखैत दीनानाथ बाबू बजला- "दुनूक बीच अन्तर की अछि से नहि बुझि पेलह। मुदा दुनू की छी, केहेन अछि से तँ बुझबे केलह?"

तेतर- "हँ।"[8]

9.

"मिथिलाक धरती धरती छी, ओ ने कहियो बाँझ भेल हेन आ ने कहियो बाँझ हएत। ई दीगर बात जे माटिये जरि कऽ पाथर बनि पहाड़ जकाँ ठाढ़ो अछि आ केतौ माटिसँ दोखरा बाउल बनि सेहो चमैकते अछि।"

दिनेशक संग श्याम छत्तर भाय लग पहुँच बाजल- "भैया, गाम दिस ने अखन अधरतिया कहियौ कि भोर मुदा शहर-बजारमे भिनसर भऽ गेल, नीक हएत जे अहीठाम मुँह-हाथ धोइ किछु खइयो लिअ आ चाहो पीब लिअ।"

छत्तर भाय बजला- "तोरो बात मानि लइ छिअ। तीनू भाँइ संगे-संग चाहो पीबह आ बच्चा सभकेँ बिस्कुट दऽ दहक।"

---

[8] **कर्ताक रंग कर्मक संग, 2020, मुराम जगह, पृष्ठ: 108-109**

केहनो बेर-बिपैत किए ने पड़ल रहए मुदा शब्दोक तँ अपन महत् अछिए। श्याम बाजल-

“भाय साहैब, सबहक हिसाब जोड़ा गेल आ भौजीकेँ किए छोड़ि देलिऐन?”

दिनेशोकेँ सुतरलैन, बजला- “छत्तर भाय अर्द्धनारीश्वर सेहो छैथ किने; अपनेमे हिसाब जोड़ि बजला अछि।”

स्वाति नक्षत्रक बून जहिना केतौ वंशलोचन तँ केतौ कपूर तँ केतौ मोती गढ़ि लइए तहिना दुनू परानी छत्तर भायकेँ भेलैन। चाह पीला पछाइत दिनेश श्यामकेँ कहलैन- “बौआ, टेम्पूमे सभकेँ बैसा बुधियार भाय ऐठाम चलि जा।”

ओना, छत्तर भाइक मनमे लघुअंश शंका जगबे केलैन। शंकाक अनेको कारण मनमे उठि रहल छेलैन जे बात दिनेश सेहो बुझलैन। अपन वस्तु-स्थिति स्पष्ट करैत दिनेश बजला-

“छत्तर भाय, परोछक बात छी तँए बेसी नहि कहब मुदा एते कहैमे कनियोँ हिचक नहि अछि जे बुधियार भायमे अखनो बेवहारिक विचार छैन्हे। अपनो कहबे करै छैथ, जेते सेवा करै छी तेते तँ मैथिल छीहे किने। केकरो डिगडिगिया पीटने होइ छै, ओ तँ होइ छै जिनगीक रस्तामे भटकैतकेँ बाँहि पकैड़ रस्तापर आनि स्वतंत्र रूपेँ स्वतंत्र बनैक कामना करैत आगू बढ़ाएबसँ.., मुदा से सभ नहि, अखन सात परानीक परिवार अछि आ तीनियेँटा कोठरी अछि, अहाँक संग परिवार अछि तँए एक-आध घन्टा ठहरैक प्रश्न नहि अछि मुदा ओइठाम सभ बेवस्था बुधियार भाय केने छैथ तँए बेसी नीक हएत।”

एक तँ ओहुना सभ दिन सबेरे उठिते छी तोहूमे आइ आरो सबेरे उठल छेलौं। टेम्पूकेँ आगू बढ़बैत दिनेश मोबाइलसँ कहि देलक जे ‘सभ तूर छत्तर भाय छैथ’, दिनेशक फोन कानमे पड़िते पत्नीकेँ बजा पुछलयैन-

“खाइ-पीबैक समान की सभ अछि?”

भाय मिथिलाक सभ दिनसँ एहेन चलैन रहल अछि जे बहरबैयाक सेवा कोन रूपेँ हुअए, तँए सेवाक सभ विचारपर नजैर राखब पुरुखक काज छीहे।

चाह-पानक अन्तिम हिसाब जोड़िते रही कि टेम्पू गेटपर लगि गेल। टेम्पूक संग श्यामकेँ विदा करैत बजलौं- “छत्तर भाय, दुनू भाँइ एक कोठरीमे रहब, धिया-पुता सभ धिया-पुताक संग दोसरमे आ भौजी दुनू दियादिनी एकठाम तेसर कोठरीमे रहती।”

दुनू हाथक इशारा दैत छत्तर भाय बजला- “कोनो हर्ज नहि।” [9]

10.

घरसँ निकैलते शम्भु घरक सभ किछु बिसैर गेल। खौजरियो बिसैर गेल। बिसैर नइ गेल मनसँ हटि गेलइ। तीर्थानुसार नव चानक नव ज्योति भेटलै। जहिना ताड़ी देनिहार खजुर लपैक कऽ ताड़ पकैड़ लैत, तहिना शम्भुक खौजरी-तबला पकैड़ लेलक। तबला पकैड़ते खौजरीए-क हाथसँ शम्भु बजबए लगल। बजबैत केते दूर गेल तेकर बोध नै रहलै। दुनियाँक बीच हेरा गेल। जेमहर देखैत दिन छोड़ि किछु ने देखैत। बाध-बोन, गाछ-बिरीछ, पोखैर-झाँखैर, हल्लुक-सुखाएल धार-धूर तँ सभ गाममे रहिते छइ। आड़ि-धूर बनौनिहार आकि नक्शा-खतियान देखनिहार ने खेत-पथार, गाम-घरक बात बुझैत, जे नइ बुझैत ओ दिन-राति छोड़ि आरो की बुझत, तहिना शम्भुओ। बीच बाटपर शम्भुक मन हुदकए लगलै। हुदकैत गामक कीर्तन मण्डलीक अगुआक मुँहक बात मोन पड़लै। मोन पड़लै जे पचगछियामे बड़का-बड़का साजो-बाज छै आ बजोनिहारो। खैयो-पीबैले देल जाइ छै आ रहैयोक बेवस्था छइ। जहिना कोनो बीज भूमिकेँ छेदि अँकुरि ऊपर आबि अपनाकेँ वृक्षक पूर्व रूप बुझि इतराइए तहिना ने बच्चोक बुधिक अँकुर जगैए, शम्भुओकेँ सएह भेल। उत्साहित भऽ घरसँ निकैल विदा भऽ गेल मुदा खास जगहपर पहुँचैले जानकारीक जरूरत भेलइ। ओना, जँ खास जगह नहि, आम जगह देखए चाहब तँ कोनो परिचयक जरूरत नै होइत। जएह देखब, जेतबे देखब, जेतए देखब सहए दुनियाँ। जेहेन आँखिक ज्योति तेहने रंगक दुनियाँ। मुदा

[9] **गामक सूरत बदैल गेल**, 2020, **पृष्ठ संख्या: 13-14**

पंचगछिया जाइले तँ जानकारी बनाएब जरूरी अछि। मनमे उठलै जखन पुछि-पाछि लोक केतए-सँ-केतए चलि जाइत अछि, तखन हम किए ने जा सकै छी। जहिना आन बाट-घाट टपि लोक अपन स्थानपर पहुँचैए तहिना हमहूँ किए ने पहुँचब। पेटक भूखक सँग मनोक भूख कमलै। भूख कमिते संकल्प शक्तिक उदय भेलइ।

पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायणजी जेहने संगीत कलाक मर्मज्ञ तेहने साधको। संगीत कलाक सिनेही रहने 'संगीत कला केन्द्र' स्थापित केने छैथ। जइसँ मिथिलांचलक अनेको गायक, वादक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पौलैन।

एगारह-बारह बर्खक शम्भुकेँ केन्द्र लग पहुँचलोपर भीतर जाइक हिआउ ने डटइ। कातमे ठाढ़ शम्भु ओइ भूखल-पियासल मरूभूमिक चिड़ै जकाँ जे दूर-दूर धरि अन-पानिक छुति नै देखैत, समुद्रक ओइ सीप जकाँ मुँह बाबि जे स्वाति नक्षत्रक बूनक आसमे रहैत। ..तखने माँगन मण्डल निकलला। अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक संगीत मर्मज्ञ। शम्भुपर नजैर पड़िते आँखि आकर्षित केलकैन। मुदा चेहरा अपन भूख देखौलकैन। बिना किछु पुछने-आछने शम्भुक बामा बाँहि पकैड़ केन्द्रक भीतर आनि माँगैन मण्डल खेनाइ खुऔलखिन। खेनाइ खेलापर शम्भुक मन असथिर भेल।

माँगन पुछलखिन-

"बाउ, की नाओं छी?"

"शम्भु।"

"परिवारमे के सभ छैथ?"

"बाबू, माए।"

"भाइयो-बहिन छैथ?"

"हँ।"

"आइ रहि जाउ काल्हि निचेनसँ गप करब।"

"बड़बढ़ियाँ।"[10]

---

[10] **शम्भुदास, 2013, पृष्ठ संख्या: 61-62**

11.

हँसैत करिया काका बजला- “पण्डित, तोहूँ जीवनीसँ अनाड़ी भऽ जाइ छह। रघू भैयाक काज अनकर बुझै छहक जे पुछैले एलह?”

“नइ नै से तँ नहियेँ बुझै छी। तखन तँ काजे छिऐ चारि गोरेमे चरचा भेने छुटल-बढ़ल सभ बात सभकेँ नजैरपर आबि जाइ छइ। अखन जाइ छी...।”

कहि पुन: कुसुमलाल मुस्की दैत बाजल- “काजक तेहेन छिगड़ी-तान भऽ गेल अछि जे घरमे करू आकि समाजमे। सभ दिन सभ कियो एकठीन बैस कऽ जे हाँ-हाँ-हीं-हीं करैत रहलौं ओ जे आब ऐ अवस्थामे छुटि जाएत से केहेन हएत? की अखनेसँ मुरदा बनि घरमे ओझरा जाइ? के खुट्टा गाड़ि कऽ रहैले आएल अछि जे सभ दिन रहबे करत। तखन तँ जाबे घटमे पराण अछि ताबे ऐ दुनियाँक लीला देखै छी।”

करिया काका टोकलखिन- “एँह, तूँ तँ तेहेन गप पसारि देलह जे चाहो पीब बिसैर गेलौं।”

करिया कक्काक इशारा पानिकेँ आगू बढ़ाएब छेलैन। मुदा पानिक गति तँ हरिदम निच्चे-मुहेँ चलैए।

देवनन्दन आशाकेँ सोर पाड़लखिन। अँगनामे शीला बुझि गेली। आशाकेँ कहलखिन- “बाउ, दरबज्जापर बाबूजी शोर पाड़लैन, सेहो बुझि लेब आ कए गोरे छैथ सेहो गनि आउ।”

दरबज्जाक कोणपर आशा गैनिए रहल छल कि फाँड़ बन्हने, माथपर तौनी नेने राजेसरकेँ अबैत देखि करिया काका जोरसँ बजला- “आबह-आबह राजेसर। चाह छुटि जेतह?”

चारि लग्गा फरिक्केसँ राजेसर बाजल- “करिया भैया, जहिना स्वाति नक्षत्रक अमृत रूपी जल सैकड़ो हाथ समुद्रक पानिमे टपैत सितुआक मुँहमे पहुँच मोती बनि जाइत तहिना जइ अन-पानिमे हमर अंश चलि गेल अछि ओ घुमैत-फिड़ैत हमरे लग चलि औत।”

कहि हाथ उठबैत फेर राजेसर बाजल- “दाना-दानामे लिखल अछि खेनिहारक नाओं।”

“अच्छा आबह, तोहर काज तँ आइ भोरे छेलह?”

करिया भैयाक बात सुनि चानिपर उल्टा हाथ लैत राजेसर बाजल-

“भाय साहैब, केते तील ऐ गामक खेने छिऐ से नइ कहि। लोको सभ तेहेन बिजकाठी भऽ गेल अछि जे झगड़ो करूँ तँ दिन-राति कखनो छुट्टी नइ भेटत। कियो कि एक्को मिनट चैनसँ केकरो रहए दिअ चाहै छइ। घर-सँ-बाहर घरि एक्के रमा-कठोला।”

“अच्छा खिस्सा छोड़ह। काजक गप करह?”

मुस्की दैत राजेसर बाजल- “भाय, एना आन जकाँ किए बुझै छी। जखने माया-जालमे पड़ल छी तखने तँ तबाही रहबे करत किने, तँए कि समाजक काज छोड़ि देब। हमरा सबहक खुट्टा जहिना रघु भाय छला तहिना हुनकर अन्तिम काज सेहो खुट्टा जकाँ हेतैन।”

राजेसरक बात सुनि देवनन्दन चौंकला। हिनका–पिता– सबहक दोहरी चालि जिनगीक छैन। जीवनक एक चालि छैन आ लोकक बीचक दोसर। जेना सौंसे गामक ठकदरूआ ई सभ होथि आ हिनका सबहक ठकदरूआ सौंसे गाम होनि..! मुदा साकांक्ष होइत तीनूक–करिया काका, कुसुमलाल आ राजेसरक–गप-सप्प धियानसँ सुनए लगला। तखने शीला तस्तरीमे चारि कप चाह नेने पहुँचली। खाली चाह देखि कुसुमलाल मुस्की दैत बाजल-

“आँइ यौ करिया भैया, कुम्हारक टेमकेँ अहाँ अहिना बुझै छिऐ। जेते काल चाह दुआरे बैसलौं तेते कालमे तँ केते ने बैंक गढ़ि नेने रहितौं।”

कुसुमलालक इशारा बुझि शीला तस्तरीकेँ पतिक आगू चौकीपर रखि चोट्टे आँगन घुमि बिस्कुटक पॉकेट फाड़िते दरबज्जापर पहुँचली। बिस्कुट देखि करिया काका बजला- “कनियाँ, अहाँ पानि नेने आउ हम बिस्कुट बाँटि लइ छी।”

सोलहो बिस्कुटमे सँ पँच-पँचटा कुसुमलाल आ राजेसरकेँ देलखिन।

तीन-तीनटा अपने दुनू गोरे देवनन्दन सहित लऽ दुनू गोरे दुनू गोरे दिस देखए लगला। स्वादिष्ट नमकीन बिस्कुट मुँहमे लइते राजेसर बाजल- “चारि बजे भोरेसँ भाय खटै छी। खाइयोक छुट्टी नै भेल। मुदा भगवानो तेहने अहारो देलैन। भऽ गेल भरि दिनका कोइला-पानि। दस बजे राति तलिक घुमि कऽ तकैयोक काज नहि।”[11]

12.

“एकटा बात अखने कहि दइ छी, पैघ लोकक काज छिऐन तँए जेते कमसँ कम लोक बुझि सकैथ, तिनकेटा भनक लागए देबैन।”

लड़ूलालक विचार सावित्रीक मनक विचारमे जेना झन-दे लगलैन। झन-दे लगैक कारण भेलैन जे बेटा-बेटीक बिआह तँ एक परिवारक नहि सभ परिवारक अनिवार्य यज्ञ छी, तखन झाँपि कऽ रखैक कोन खगता अछि। तहूमे बेटा-बिआहक यज्ञ छी, तखन झाँपिकऽ रखैक कोन खगता अछि। दसटा बरियातियो जेबे करत आ दसटा गीतिहारि सेहो कुमरम-सँ-बिलौकी तकक गीत गेबे करती, तैठाम कम-सँ-कमे लोक तक विचार केना रहत। मुदा लगले अपन विचारकेँ समेट मनेमे राखि सावित्री विचारली जे जे अपन समाज छी, तिनकासँ जँ मुँह छिपा कऽ राखब से उचित नहि। तँए जहिना पाँच गोरे ओ सभ माने कन्यागत कमिश्नर साहैब सभ, औता तहिना अपन समाजक पाँच गोरेक विचारकेँ राखब नीक हेबे करत किने। एहेन विपत्तिक बीच बीतल पनरह सालक बीचक, समय जखन हँसी-खुशीसँ काटि लेलौं, तखन आब तँ सहजे बेटा स्वामी तुल्य भऽ गेल अछि, तखन ऐगला जीवने केतेटा अछि जे नहि कटत..! सावित्री बजली-

“कोनो कि ढोलहो देबाक अछि, तखन तँ जे अपन पारिवारसँ सम्बन्धित लोक छैथ, ओ तँ बुझबे करता किने।”

---

[11] **जीवन-मरण, उपन्यास, 2009, पृष्ठ संख्या: 96-98**

चलैत-चलैत लड्डूलाल बजला- “चारि बजे, हुनका सभकेँ बजा लेबैन।”

सावित्री- “बड़बढ़ियाँ।”

तेसर दिन चारि बजे देवनो आ विचारचनो सावित्री ऐठाम जखन पहुँचला तँ पता चललैन जे कन्यागतक गाड़ी रस्तामे पञ्चर भऽ गेलैन तँए पनरह मिनट विलमसँ पहुँचता। कचहरिया लोक जकाँ विचारचनक मन छैन्हे, बजला- “अजीव खेल दुनियाँक अछि, भाय साहैब।”

‘अजीव खेल’ सुनि अकचकाइत देवन बजला- “से की विचारचन?”

विचारचन बजला- “भाय सहाएब, अहाँ सभ दिन तँ ओहन रहलौं जे ने दौड़ चली आ ने ठेँस खसी। तँए कोट-कचहरीक जानकारी नहि अछि, मुदा हमरा तँ से नहि अछि, जाबे कचहरियो नहि जाएब ताबे कचहरीक आ जाबे जहल नहि जाएब ताबे जहलोक कारगुजारी केना बुझब।”

विचारचनक विचार सुनि देवन बजला-

“हँ से तँ ठीके कहै छह।”

देवन अपन बात बाजल छला मुदा विचारचनकेँ बुझि पड़लैन जे नव बात बजलौं तँए अपन गुरुत्व बढ़ि रहल अछि। ..भावमुखकेँ गुरुमुख बनबैत विचारचन बजला-

“भाय सहाएब, एक दिन कचहरीमे हाजिर नइ हएब तँ वारन्ट भऽ जाएत, मुदा कचहरीक जे कलपलदार छैथ ओ महीनाक कोन बात जे सालक-सालो हाजिर नहियौं हेता तैयो कोनो बात नहि। यएह ने भेल दुनियाँक अजीव खेल।”

ओना, जहिना देवनक मनमे कमिश्नर साहैबक आगमन नचै छेलैन तहिना विचारचनोक मनमे नचिते रहैन मुदा खाली समय देखि अपन-अपन विचारे अपन-अपन खाना भरि रहल छला। सावित्री, रघुनाथ आ छोट बेटी सुनीता सेहो बैसल छल। देवनक मनमे भेलैन जे तैबीचमे, माने जाबे घटक सभ नहि एला अछि, रघुनाथक पेटक विचार बुझि लेब नीक रहत। मुदा लगले अपने मन कहलकैन, अपनासँ सम्बन्धित प्रश्न औत अपने सहए जवाब ने देब।

तहिना जिनकर सम्बन्धित जे प्रश्न रहत से सएह ने जवाब देता। हँ, बीचमे एकटा विचार जरूर अछि जे सोझहामे जँ किछु उटपटाँग भऽ जाएत तँ तेकर दोखी अपनो हेबे करब किने। लगले सूरे मनमे उठलैन, माने देवनक मनमे- जहिना स्वाति नक्षत्रक अकाससँ टपकल जलक बून समुद्र सन गहींरमे अपन रास्ता बनबैत जमीनपर बसल सितुआक खुजल मुँहमे पड़ि मोती बनि जाइए तहिना ने विचारोक मोतीकेँ जीवनक मर्मक तात्त्विक विश्लेषण करैत पकड़ले जा सकैए। जँ केतौ जवाब ले-ऊँच रहत तँ ओकरा पहेट एकरस तँ बनाएले जा सकैए। देवनक अपन मन मानि गेलैन जे अखन तकक जे स्थिति अछि ओ अनुकूले अछि।

सवा चारि बजे कमिश्नर साहैबक एकटा संगी कमिश्नर, तेसर अगुआ पेशकार आ एकटा अपन घटक आ दोसर लड्डूलालकेँ सेहो पकैड़ लेलैन, पाँचो गोरे सावित्री-ऐठाम पहुँचला। अबिते हाथ-पएर धोइक आग्रह घरबैया दिससँ भेलैन, कहब जे करोना दुआरे? नहि, अपन पूर्वजक देल विधो आ बेवहारो दुआरे। मुदा कियो जूत्ता खोलैले तयारे नहि भेला तँ पएर की धोता।[12]

ऐ बेरक गोष्ठी, माने सगर राति दीप जरय'क कथा गोष्ठी, काल्हिये छी आ बेरमा गाममे छी। 'सगर राति दीप जरय'क इतिहासमे बेरमा गामक भूमिका स्मरणीय अछिए, मुदा अखन से सभ नहि, अखन एतबए...।

- उमेश मण्डल

तुलसी भवन, निर्मली (सुपौल)

29 दिसम्बर 2023

[12] **संकल्प, उपन्यास, 2021, पृष्ठ संख्या: 118-120**

स्वाति नक्षत्रक बून जहिना केतौ
वंशलोचन तँ केतौ कपूर तँ केतौ मोती गढ़ि
लइए तहिना दुनू परानी छत्तर भायकेँ भेलैन।
चाह पीला पछाइत दिनेश श्यामकेँ कहलैन-
“बौआ, टेम्पूमे सभकेँ बैसा बुधियार
भाय ऐठाम चलि जा।”

चारि बजे भोरमे छत्तर भाय पाँचो तूर हावड़ा स्टेशन पहुँचला। दिनेश भाय अपन पितियौत भाए, श्यामक संग स्टेशनेपर रहैथ। जहिना दिनेश भाइक नजैर छत्तर भायपर छेलैन, तेना छत्तर भाइक नहियेँ छेलैन, मुदा सोल्होअना नहियेँ छेलैन सेहो बात नहियेँ अछि। चारि-छहअना छेलैन्हे। दस-बारहअना जे नइ छेलैन तेकर कारण छत्तर भाइक मनमे अनेको छेलैन। पहिल छेलैन, जे बेर-बिपैतमे अपनो परिवारक लोक छोड़ि दइए, दिनेश तँ सहजे गाँआँ छी। तैसंग दोसर विचार ईहो उठै छेलैन जे अपने तँ ओहन नहि भेल अछि मुदा गौंआँ-घरूआ मुहेँ सुनिते आबि रहल छी जे शहर-बजारक रहनिहार, हेराएल-भोथियाएल गौंआँ-घरूआकेँ देखि या तँ अढ़ दबि जाइए वा ठोह फाड़ि मुहेँपर कहैए, तोरा नइ चिन्है छिअ।

एक तँ बाढ़िक बिपैतिक मारल छत्तर भाइक मन, तैपर अनभुआर जगहमे प्रवेश भेने आरो मरियाएले भेल जा रहल छेलैन। मुदा ओही मरणशील विचारमे जीअनशील विचार सेहो जगलैन। जगिते मनमे उठलैन जे जखन मोबाइलसँ दिनेशसँ सम्पर्क भेल आ ओ कहि देलक जे स्टेशनपर रहब तखन सोझा-सोझी एते झूठ केना बाजत। केतबो दुनियाँक आकि समाजेक परिवेश किए ने बदैल गेल अछि मुदा लोको-लाजक तँ अपन महत छइहे।

गाड़ीसँ उतैरते छत्तर भाय चकोना होइत स्टेशनपर तकलैन कि

श्यामपर नजैर पड़लैन। श्यामकेँ देखिते छत्तर भाइक विचारक धरतीसँ ओहने सुगन्ध निकललैन जेहेन रौदसँ जरल जमीनमे अकासीय वृष्टिक बून पड़ने सुगन्ध निकलैए। विश्वस्त मन गवाही देलकैन जे दिनेश अपने नहि भेटल तँ नहि भेटल, श्यामो कि कियो आन छी। तैबीच दहिना हाथ उठबैत छत्तर भायकेँ शोर पाड़ैत श्याम बजला- "छत्तर भैया, यो छत्तर भैया, ओतइ रहू। दिनेश भायकेँ बजेने अबै छिऐन।"

दिनेशक नाओं सुनि छत्तर भाय पत्नी दिस ताकि बजला-

"मिथिलाक धरती धरती छी, ओ ने कहियो बाँझ भेल हेन आ ने कहियो बाँझ हएत। ई दीगर बात जे माटिये जरि कऽ पाथर बनि पहाड़ जकाँ ठाढ़ो अछि आ केतौ माटिसँ दोखरा बाउल बनि सेहो चमैकते अछि।"

दिनेशक संग श्याम छत्तर भाय लग पहुँच बाजल-

"भैया, गाम दिस ने अखन अधरतिया कहियौ कि भोर मुदा शहर-बजारमे भिनसर भऽ गेल, नीक हएत जे अहीठाम मुँह-हाथ धोइ किछु खइयो लिअ आ चाहो पीब लिअ।"

छत्तर भाय बजला-

"तोरो बात मानि लइ छिअ। तीनू भाँइ संगे-संग चाहो पीबह आ बच्चा सभकेँ बिस्कुट दऽ दहक।"

केहनो बेर-बिपैत किए ने पड़ल रहए मुदा शब्दोक तँ अपन महत् अछिए। श्याम बाजल-

"भाय साहैब, सबहक हिसाब जोड़ा गेल आ भौजीकेँ किए छोड़ि देलिऐन?"

दिनेशोकेँ सुतरलैन, बजला-

"छत्तर भाय अर्द्धनारीश्वर सेहो छैथ किने; अपनेमे हिसाब जोड़ि बजला अछि।"

स्वाति नक्षत्रक बून जहिना केतौ वंशलोचन तँ केतौ कपूर तँ केतौ

मोती गढ़ि लइए तहिना दुनू परानी छत्तर भायकेँ भेलैन।

चाह पीला पछाइत दिनेश श्यामकेँ कहलैन- “बौआ, टेम्पूमे सभकेँ बैसा बुधियार भाय ऐठाम चलि जा।”

ओना, छत्तर भाइक मनमे लघुअंश शंका जगबे केलैन। शंकाक अनेको कारण मनमे उठि रहल छेलैन जे बात दिनेश सेहो बुझलैन। अपन वस्तु-स्थिति स्पष्ट करैत दिनेश बजला-

“छत्तर भाय, परोछक बात छी तँए बेसी नहि कहब मुदा एते कहैमे कनियोँ हिचक नहि अछि जे बुधियार भायमे अखनो बेवहारिक विचार छैन्हे। अपनो कहबे करै छैथ, जेते सेवा करै छी तेते तँ मैथिल छीहे किने। केकरो डिगडिगिया पीटने होइ छै, ओ तँ होइ छै जिनगीक रस्तामे भटकैतकेँ बाँहि पकैड़ रस्तापर आनि स्वतंत्र रूपेँ स्वतंत्र बनैक कामना करैत आगू बढ़ाएबसँ.., मुदा से सभ नहि, अखन सात परानीक परिवार अछि आ तीनियेँटा कोठरी अछि, अहाँक संग परिवार अछि तँए एक-आध घन्टा ठहरैक प्रश्न नहि अछि मुदा ओइठाम सभ बेवस्था बुधियार भाय केने छैथ तँए बेसी नीक हएत।”

❑ गामक सूरत बदैल गेल, 07 सितम्बर 2020

जिज्ञासा रंग-रंगक होइ छै, जे सभक मनमे
रहितो अछि आ जगितो तँ अछिए, मुदा जीवनक जिज्ञासा
जागब सभसँ बेसी नीक भेल। दुनियाँमे रहैक इच्छा खाली
पंचभौतिक मनुक्खेटा केँ नहि, धरतीपर जनमल जीवमात्रक
इच्छामे सन्निहित रहैत अछि, जखन कि ईहो जनैए जे जखन
धरतीपर जन्म लेलौं तखन मरब अनिवार्य अछिए। बुझल
अछिए जे राम सन बेटा रहितो दशरथ मरि गेला, माने
रामो बँचा नहि सकलैन। कृष्ण सन मामा,
अर्जुन सन पिता, तखन अभिमन्यु काँचे
उमेरमे मरि गेला।

आइ दुनू भाँइ संगे गोपालबाबूक डेरापर चलू। जँ अपना सभकेँ समय भेटत तँ बड़बढ़ियाँ, समय भेटबक माने भेल जे जँ कियो दोसर गोटा हुनका लगमे हेतैन तखन तँ नहि, मुदा जँ असगरे हेता तखन किए ने समय भेटत, भेटबे करत। यएह सोचि दुनू गोरे स्कूलसँ एला पछाइत घरपर जा जलखै करिकऽ डेराक आगूक रस्ता धेने आबि जखन गोपालबाबूक दरबज्जा दिस तकलक कि गोपालबाबूकेँ असगरे बैसल देखलकैन।

जहिना मुनीलाल आ धुनीलाल गोपालबाबूकेँ असगरे बैसल देखलकैन तहिना गोपालबाबू सेहो बाट चलैत बटोहीक रूपमे मुनीलाल आ धुनीलालकेँ देखलैन। देखिते मनमे भेलैन जे शोर पाड़िऐ, मुदा अपने शिष्टमन विचार देलकैन जे ई शिष्टाचारसँ अलग विचार भेल। शिष्टाचारसँ अलग विचार ई भेल जे अगर ओ (मुनीलाल-धुनीलाल) परिवार वा समाजक कोनो काज करैले जाइत हुअए तखन बीचमे बाधा पहुँचाएब भेबे कएल किने। दोसर ईहो तँ अछिए जे आगूसँ केते बाजी? सभकेँ सभ बात अनुकूले नइ ने होइ छइ...।

मने-मन गोपालबाबू विचारिये रहल छला कि तैबीच मुख्य सड़कसँ उतैर दुनू गोरे गोपालबाबूक डेरा दिसक रास्ता पकड़लक। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि, डेरा आ घर की भेल? डेरा ओ भेल जे किछु दिन रहैबला भेल, मुदा घर तँ से नहि छी, ओ तँ एक पीढ़ीक जीवनक कोन बात जे एक वंशोक रहैबला छी।

गोपालबाबूक दरबज्जासँ दस डेग आगूएसँ मुनीलाल आ धुनीलाल दुनू गोरे अपन-अपन हाथ जोड़ि प्रणाम करैत बाजल- "प्रणाम गुरुदेव।"

ओना, 'गुरुदेव' सुनि गोपालबाबूक मन उड़िकऽ कबीरदासक साखीपर पहुँच गेलैन- 'गु अन्धिआरी जानिये, रु कहिये परकास। मिटै अज्ञानता ज्ञान ते, गुरु नाम है तास'। उड़ल विचारकेँ धरतीपर ठाढ़ करिते गोपालबाबूक मनक विचार बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे भरिसक दुनू विद्यार्थीमे नम्रताक उदय भऽ रहल छै तँए विनम्र शब्दक प्रयोग केलक अछि। कहलो तँ जाइते अछि जे फल्लाँ ऊपर जेहने श्रद्धा अछि तेहने विश्वास सेहो अछि। एक शब्दमे एकरा श्रद्धायुक्त विश्वास वा श्रद्धापूर्ण विश्वास सेहो कहल जा सकैए। खाएर जे कही मुदा एक हाइस्कूलक शिक्षकक जे रूप होइए तइ अनुकूल गोपालबाबू आशीर्वाद दैत बजला-

"रस्तापर तोरासभकेँ जखन दच्छिन मुहेँ बढ़ैत देखलियह तखन बुझि पड़ल जे कोनो काजे केतौ जा रहलह हेन, मुदा जखन रस्तासँ उतैर एमहर मुहेँ अबैत देखलियह, तखन बुझि पड़ल जे अहीठाम आबि रहल छह।"

बालमन मुनियो लाल आ धुनियो लालक तँए निष्कपट विचार व्यक्त करैत दुनू संगे बाजल-

"गुरुदेव, जहिया अपनेक डेरापर आबि जीवनक गप-सप्प केलौं, तहियासँ मन उबियाइये रहल अछि जे दोसर दिन फेर जाइ, मुदा अपने तँ चारि साएसँ ऊपरे विद्यार्थीक गुरु छिऐन, तैठाम अप्पन हिस्साक समये केते अछि, तइ दुआरे नइ अबै छेलौं।"

दुनू गोरेक विचार सुनि गोपालबाबू आह्लादित भेला। आह्लादित

होइते मनमे उठलैन जे जरूर दुनूक मनमे जीवनक जिज्ञासा अछि। ओना, जिज्ञासा रंग-रंगक होइ छै, जे सभक मनमे रहितो अछि आ जगितो तँ अछिए, मुदा जीवनक जिज्ञासा जागब सभसँ बेसी नीक भेल। दुनियाँमे रहैक इच्छा खाली पंचभौतिक मनुक्खेटा केँ नहि, धरतीपर जनमल जीवमात्रक इच्छामे सन्निहित रहैत अछि, जखन कि ईहो जनैए जे जखन धरतीपर जन्म लेलौं तखन मरब अनिवार्य अछिए। बुझल अछिए जे राम सन बेटा रहितो दशरथ मरि गेला, माने रामो बँचा नहि सकलैन। कृष्ण सन मामा, अर्जुन सन पिता, तखन अभिमन्यु काँचे उमेरमे मरि गेला। अखन महाभारतक चर्च करैक समय नहि अछि जे कहितौं, केना श्रीकृष्ण आ पाण्डव अमरकंका गेला आ पद्मनाभ केना द्रोपदी हरण केलक। केना दुनूक बीच लड़ाइमे पाण्डव हारल आ कृष्णक कहलापर पुन: लड़ाइ भेलापर जीतलक...।

❑ दुख-सुख, 07 अक्टूबर 2023

भाय, चान-चकोरीक मिलानमे देखए पड़त ने
जे एकटा अकासमे अछि आ दोसर धरतीपर। धरती-
अकासक केते दूरी अछि से तँ जखन प्रकृतिक त्रिगुणात्मक
चालि देखि अपनो चालि बनाएब तखन ने, मुदा से तँ धरती
परक लोककेँ कठिन अछिए। एकर माने ई नइ बुझब जे
यएह शक्ति राक्षसो नइ बनबैए, मनुक्खेटा बनबैए
आ देवतो नइ बनबैए।

अदौसँ दुनियाँमे आश्चर्यक नमहर शृंखला अछिए। सभकेँ बुझले अछि जे गाछक रगड़सँ आगि उठि, नमहर-नमहर जंगलकेँ डाहि खेत बनौलक। अखनो पूर्वांचल देशमे, पहाड़ी-जंगली इलाकामे, झूम प्रथासँ खेती होइए। माने ई जे पहाड़ी जमीनपरक बोन-झाड़केँ डाहि, ओइसँ जे छाउर-राख होइए तैपर खेती करब। खाली आगियेक उत्पति भेने आश्चर्यक सीमा समाप्त भऽ गेल से बात नहि, आश्चर्यक नमहर शृंखला अछि। मुदा इतिहास रूपमे जइ शृंखलाकेँ देखै छिऐ तइसँ एकटा दोसरो आश्चर्यक शृंखला अछि। ओ अछि जे एक दिस जन्मेसँ बुझू, आ दोसर दिस गोटि-पंगरा चारि साए बर्खक मनुक्ख जे धरतीपर अछि तैठाम तक, माने खिच्चा उमेर भेल बीस बर्खसँ पूर्वक आ बीस बर्खसँ ऊपरक भेला डम्हाएलसँ बूढ़ धरि वा काँचसँ पाकल धरि। अन्तर बुझितो छी आ देखतो तँ छीहे, जहिना खिच्चा आमक चटनी बनैए आ जुआएल-डम्हाएलक अँचारो बनैए आ पकाकऽ सेहो, चोकरे सही, ओकरा लोक खाइए। तहिना मनुक्खोक तँ अछिए किने, बाल-बोधसँ चेष्टगर, सियान, जुआन आ अधबेसूसँ लऽ कऽ बूढ़ तक छथिए तँए सबहक, आन विचार जे हुअए मुदा जीवन तँ एक अछिए। सबहक अपन-अपन जीवन अछि। ओतेक जीवनक बीच केते गोरे जीवनकेँ जीवन बुझि जीब रहला अछि आ केते अजीवन बना जीब रहला अछि। यएह छी आश्चर्यक दोसर शृंखला, जे जीवन जीबिनिहारो

जीवनकेँ सभ बुझि नहि पेब रहला अछि, ई आश्चर्यक घटना भेबे कएल किने। खाएर जे भेल आकि जे होइए, ओ दुनियाँ आ दुनियाँबला जानए। तइसँ गोपालबाबू आकि मुनीलाल-धुनीलालकेँ कोन मतलब छैन।

स्कूलसँ एला पछाइत, ओसराक कुरसीपर बैसल-बैसल गोपालबाबूक मनमे जगलैन, आइ पनरह दिन भऽ गेल मुनीलाल आ धुनीलालसँ भेँट भेना। ओना, स्कूलक क्लासमे दुनूकेँ देखै छिऐ, मुदा ने अपने किछु कहै छिऐ आ ने वैहसभ लग अबैए। जखन कोनो समस्या सोझामे अबैए तखन ने ओकरा समाधानक लेल समधानिकऽ समाधान करैबला उठिकऽ ठाढ़ होइए..।

लगले गोपालबाबूक मनमे तेसर विचार उठिकऽ ठाढ़ भेलैन। ओ ई जे अपने मन कहलकैन, दुनियाँमे सहयोगी वएह ने भेला जे सभ विचार, सहयोगीक, मानियेँ लैथ आकि नहियेँ मानैथ, मुदा दुनूक बीचक रस्ता पकैड़ जँ चलता तँ जीवन आइ ने काल्हि भेटबे करतैन। गोपालबाबूक मनमे तृप्ति जगलैन जइसँ श्रद्धा सेहो जगबे केलैन।

जहिना मुनीलाल तहिना धुनीलाल अपना-अपना मने सोचैत जे जइ विद्यालय (हाइस्कूल) मे गोपालबाबू शिक्षक छैथ, तइ विद्यालयमे चारि साए विद्यार्थी अछि, तइमे एक गोटाक हिस्सा, माने छुट्टी समयक हिस्सा, मासमे एकाध घन्टा हएत, सएह ने हएत। तइमे जँ पनरह दिनसँ भेँट नहि केलिऐन तँ उचिते ने केलिऐन। भाय, चान-चकोरीक मिलानमे देखए पड़त ने जे एकटा अकासमे अछि आ दोसर धरतीपर। धरती-अकासक केते दूरी अछि से तँ जखन प्रकृतिक त्रिगुणात्मक चालि देखि अपनो चालि बनाएब तखन ने, मुदा से तँ धरती परक लोककेँ कठिन अछिए। एकर माने ई नइ बुझब जे यएह शक्ति राक्षसो नइ बनबैए, मनुक्खेटा बनबैए आ देवतो नइ बनबैए।

❑ दुख-सुख, 07 अक्टूबर 2023

केते गोरे मुँह खोलि बजितो छैथ जे गामक जीवन नर्कक जीवन छी। बजै-गबैक क्रममे सभ बजबे-गेबे करै छैथ, मुदा जीवनक निर्माण जइ नजरिये समाजक हएत, समाज ओहने रूप-रंग धारण करत। देखिते छी जे अदौसँ अपना ऐठाम पारिवारिक सम्बन्ध परिवारमे केहेन रहल अछि। एकदिस कियो मातृभूमि-पितृभूमिक गीत गबै छैथ तँ दोसर दिस जन्मभूमिक सेवक अपनाकेँ मानि कालिदास जकाँ उल्टे गाछक डारिपर बैस डारिकेँ काटैले तैयार छथिए।

कोनो वौसो आ भावनाओकेँ मूर्त्त-अमूर्त्तक रूपमे सभकियो दुनियाँक दर्शन करै छी। दर्शन करै छी माने अपना आँखिये देखबो करै छी आ मने-मन विचारो तँ करिते छी। घर-आँगनक बच्चासभ झूमि-झूमि अँगनामे खेलाइत गबितो अछि जे 'खेलै छेलिऐ, धूपै छेलिऐ, रोपै छेलिऐ धान आ मने-मन विचारै छेलिऐ जेबे जगरनाथ'। सभ चाहै छी जे औझुका दिन मंगलमय हुअए।

दरबज्जाक आगूक दूरापर लतरल-चतड़ल दुभि-घासकेँ रामनिहोरा काका साफो करै छला माने छीलियो रहल छला आ मने-मन विचारियो रहल छला जे समाजक, माने लोकक, कोनो नक्शो-खतियान बनल अछि आकि बोन-झाड़क नील गाए जकाँ, जे ने पोसा अछि आ ने दूध दइए, मुदा बाधक-बाध खेतकेँ चरिकऽ स्वाहा कऽ दइए। माने जजातकेँ तेना नष्ट करैए जे तंग-तंग होइत किसान गामक खेत-पथार छोड़ि शहर-बाजारमे नोकरी करैले मजबूर भऽ रहला अछि, एहेन विचार किसान अपनो नहियेँ कऽ रहला अछि, लोकक एहेन धार बनले जा रहल अछि जे गामक जीवन कोनो जीवन नहि रहि गेल अछि। केते गोरे मुँह खोलि बजितो छैथ जे गामक जीवन नर्कक जीवन छी। बजै-गबैक क्रममे सभ बजबे-गेबे करै छैथ, मुदा जीवनक निर्माण जइ नजरिये समाजक हएत, समाज ओहने

रूप-रंग धारण करत। देखिते छी जे अदौसँ अपना ऐठाम पारिवारिक सम्बन्ध परिवारमे केहेन रहल अछि। एकदिस कियो मातृभूमि-पितृभूमिक गीत गबै छैथ तँ दोसर दिस जन्मभूमिक सेवक अपनाकेँ मानि कालिदास जकाँ उल्टे गाछक डारिपर बैस डारिकेँ काटैले तैयार छथिए। एकरा अपना सभ छाँह-छूँह मानि लिअ। अहूँ बुझै छी आ हमहूँ बुझै छी जे जहिया शताब्दीक गिनती शुरूहो ने भेल छल ई तइसँ पहिलुका बात छी, तँए एकरा छाँहे-छूँह मानब नीक हएत।

अपना ऐठाम पौराणिक कथामे राजा जनको भेल छैथ आ अष्टावक्रो भेले छैथ। सभकेँ बुझल अछिए जे अष्टावक्रक रूप देखि प्रवर समिति, माने जनकजीक विद्वत-समाज, दिल खोलि हँसै छला, भलेँ अष्टावक्रो अप्पन दृढ़ संकल्पपर दृढ़ ठाढ़ भेल असगरो बजैत रहला जे ‘मनुक्खकेँ काम पियारा हेबा चाही नहि कि चाम’। सभ जनै छी, अपना मने जे जे करैत होइ मुदा समाजक बीच मुँह लटकबैक नहियेँ अछि। लोके टाकेँ किए दोख लगाएब, देवियो-देवता आ भगवानो, माने प्रकृतिक रूप, कखन केहेन होइए, सेहो तँ अपने सभ ने बुझबै जे दइबला कखन लइबला बनि जाइए आ लइबला कखन दइबला। बुझल बात अछिए जे राजा भरथरीकेँ राजमाता पिंगला केना भीखमंगा बना देलकैन। तहिना ईहो बुझले अछि जे जन-मानसक परवाह केने बिना राजा हरिश्चन्द एकटा वौना भगवानक हाथमे सभकिछु सुमझाबैत अपने केना असमसान ओगरलैन।

❑ त्रिशंकु गाम, 28 जुलाई 2023

शब्दक भ्रम अपना समाजमे एतेक जर्बदस्त अछि जे धर्म सन अकाट्य सत्य रहितो शब्दक जालमे तेना ओझरा गेल अछि जे ओकर वास्तविक रूप किछु ने, मात्र एक शब्द रूप बनि ठाढ़ भऽ गेल अछि। धरतीपर सात अरब लोक अछि, सभकेँ अपन-अपन धर्मो अछि कर्म सेहो अछिए, जइसँ धर्मक सात अरब व्याख्या सेहो अछिए। देखिते छी जे एक्के महावीरजीकेँ चोरो चोरी करैकाल कबुला करैए जे जँ सुतरल तँ मिठाइ चढ़ेबह आ सिपाहियो तँ कबुला करिते अछि, जे हमरा क्षेत्रमे चोरी-चपाटी नइ हएत तँ मिठाइ चढ़ेबह। यएह खेल दुनियाँक लोको पसारने अछि आ प्रकृति सेहो पसारनहि अछि।

महादेवपुर गामक कार्यक्रमसँ, माने महादेवपुरमे रैदासक जयन्ती भेलासँ इलाकामे अनेको रंगक नव जीवन उठिकऽ ठाढ़ भेल। गामो ठाढ़ भेल, गामक समाजो ठाढ़ भेला आ गोपालबाबूक संग मुनियो लाल आ धुनियो लालक जीवन उठिकऽ ठाढ़ भेल।

गाम ठाढ़ भेल एना जे आइ धरि गाममे कहियो महापुरुष–आत्मज्ञानी-तत्त्ववेत्ता–क जयन्ती नइ भेल छल, जे भेने गामकेँ नव जीवन भेटल, तहूमे कार्यक्रमक जे संयोजक छला, ओ मंचेपर सँ घोषणा कऽ देलैन जे जाबे तक शरीरमे शक्ति रहत, जइसँ कार्यक्रम कऽ सकब, ताबे तक समारोह करैत रहब।

देखो-देखीसँ ते लोकमे उत्साहक संचार होइते अछि। एक्के-दुइये गामक सभ, माने जेते लोक कार्यक्रममे आएल छला, सभकियो अप्पन बैसारे परसँ, माने समारोहमे जे जैठाम बैसल रहैथ तहीठामसँ, उठि-उठि ठाढ़ भऽ भऽ बजला- “जाबे जीबैत रहब, ताबे अहिना रैदास बाबाक जन्मदिनक शुभकामना दैत रहबैन।”

समाजक लोकमे एक नव जीवनक संचार भेल।

भाषणकर्तामे मुख्य वक्ता गोपाले बाबू छला, तँए तेसर पहरमे माने

कार्यक्रमक तेसर सीढ़ी (स्टेज)मे हुनका समय भेटलैन। गोपालबाबू तँ ओहन वक्ता छैथ नहि जे वक्तव्य कागजपर लिखकऽ लऽ जेता आ मंचपर पढ़िकऽ सुना देथिन। ओ तँ ओहन वक्ता छैथ जे अप्पन रूटिंगक अनुकूल कार्यक्रम तैयार करै छैथ आ जे तैयार करै छैथ से लोकक बीचमे बजै छैथ। तँए कार्यक्रम करैसँ पहिने ने भाषण तैयार करै छैथ आ ने भाषणक पछाइत मोन राखै छैथ। आन जकाँ भाषणक पछाइत ई नइ बजै छैथ जे सभ बात तँ बजलौं मुदा असलाहा बात छुटि गेल।

कार्यक्रमक तेसर दिन, सुर्ज अस्ताचलगामी भऽ गेल छला। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर गोपालबाबू चाह पीबैक आसमे बैसल छला। पत्नी आँगनसँ हुलकी मारि देखि नेने छेलैन जे हाथ-पएर धोइ मुँह-आँखि आ नाक-कानकेँ जलसँ सिक्त कऽ आबि बैसल छैथ। पतिकेँ बैसल देखिते सुशीला चाह बनबए लगली।

सुशीला अप्पन विचारमे ई सुधार आनि नेने छैथ जे पुरुखक आगूमे बैस चाह पीब आकि कोनो चीज खाएब, जे अखन तक समाजमे वर्जित अछि, तेकर वर्जनक सीमाकेँ सुधारि एकरस बना लेने छैथ। तँए एक हाथमे गोपालबाबू ले आ एक हाथमे अपना ले चाहक गिलास नेने दरबज्जापर आबि पतिक हाथमे गिलास पकड़ाबैत अप्पन गिलास वामा हाथसँ दहिना हाथमे लैत चौकीपर बैसली।

ओना, दिनमे केते गोरेक मुहेँ सुशीला सुनि नेने छेली जे 'गोपालबाबू गामक जय-जय कऽ देलैन', तेकर उन-मुनी सुचित्रोकेँ छेलैन, तँए पतिक आगू निधोखसँ बैस, चाह पीबैक संग गपो-सप्प करैक मन बनौने छेली।

हाथ-पएर धोला पछाइत दरबज्जापर आबि गोपालबाबू चौकीपर बैसलो ने छला कि तखन मनमे परसुका वक्तव्य आबि गेल रहैन। वक्तव्यक समीक्षा करिते किछु शब्द सभपर धियान गेलैन। मने-मन अपसोच करए लगला जे जइ गाम-समाजक बीच कार्यक्रम भेल, तइसँ प्रतिकूल किछु शब्द बजा गेल जेकर व्याख्या हमरा कऽ देबाक चाहै छल, से नहि कऽ सकलौं। शब्दक भ्रम अपना समाजमे एतेक जर्बदस्त अछि जे

धर्म सन अकाट्य सत्य रहितो शब्दक जालमे तेना ओझरा गेल अछि जे ओकर वास्तविक रूप किछु ने, मात्र एक शब्द रूप बनि ठाढ़ भऽ गेल अछि। धरतीपर सात अरब लोक अछि, सभकेँ अपन-अपन धर्मो अछि कर्म सेहो अछिए, जइसँ धर्मक सात अरब व्याख्या सेहो अछिए। देखिते छी जे एक्के महावीरजीकेँ चोरो चोरी करैकाल कबुला करैए जे जँ सुतरल तँ मिठाइ चढ़ेबह आ सिपाहियो तँ कबुला करिते अछि, जे हमरा क्षेत्रमे चोरी-चपाटी नइ हएत तँ मिठाइ चढ़ेबह। यएह खेल दुनियाँक लोको पसारने अछि आ प्रकृति सेहो पसारनहि अछि। एक्के वस्तु अमृतो छी आ मृतो छी।

भाषणक बीच रैदासक जीवनक सम्बन्धमे जे गोपालबाबूक मुहसँ अपरिचित शब्द निकैल गेल छेलैन, जेना- साधक, तत्त्वज्ञानी, आत्मचिन्तक, पारस मणि आदि, तेकरा ओ मने-मन अपनहि विग्रह कऽ रहल छला। किछु होउ, केतबो झगड़ा-झंझट होउ आकि सिनेह-प्रेम, पति पत्नीक बीच एहेन वैचारिक आकर्षण तँ अछिए जे दुनू-दुनूक जीवनकेँ अप्पन जीवन बुझिते छैथ।

दू घोंट चाह पीलाक बाद सुशीलाक मनमे जेना उड़ी-बीड़ी जागए लगलैन। केते गोरेक मुहेँ अप्पन पतिक जय-जयकार सुनि नेने छेली। सुशीला बजली- “महादेवपुर गाममे की सभ भेल?”

पत्नीक विचार सुनि गोपालबाबू मने-मन विचारए लगला जे बिना कोनो कारणेँ टिटही थोड़े लगैए। किछु कारण जरूर अछि। विचारकेँ उनटबैत गोपालबाबू बजला- “अहाँकेँ के की कहलक, पहिने से बाजब तखन ने जे सभ भेल तेकर मिलानी करब।”

❑ नव जीवन, 19 अक्टूबर 2023

छठियारिक राति तँ समाजक दाइ-माइ बेटाकेँ असिरवाद दैते छैथ जे डॉक्टर बनबह, इंजीनियर बनबह। मुदा की आजुक परिवेशमे डॉक्टरी शिक्षा, जे पचासो लाखक बनि गेल अछि ओ दाइ-माइक असिरवादसँ थोड़े पूरत?

“गरीबक मनोरथ आ फुसि-घरक ठेकान ओहने ने बेठेकान होइए जेहेन धारक कातक चास आ धनीक लोकक घर लगक बास बेठेकान होइत अछि।”

खिस्सा जकाँ भुलिया पतिक बात सुनि बजली- “बेटा कि अहींटा-के छी आकि हमरो छी? ओ जँ बौक भऽ जाएत ते लोक हमरे ने ‘बौका माए’ कहत.!”

भुलियाक विचार सुनि सिंहेश्वरक मनमे एलैन जे अपना कि लोक ‘बौकाक बाप’ नहि कहत? सेहो तँ कहबे करत.! मुदा लगले अपने मन कहलकैन जे एना जँ छोट-मोट विचारमे ओझराएब तँ इचना माछ जकाँ खढ़े-पातमे लटकल रहि जाएब, समुद्रक आँखि कहियो देखि पाएब?

पत्नीकेँ आगूमे ठाढ़ देख, बजैक क्रममे सिंहेश्वर बाजि तँ गेला मुदा अपने मन वौड़ाए लगलैन। जहिना सामान्यजनक दृष्टि जेते आन दिस रहैए तेते अपना दिस नहि रहैए। कहलो गेल अछि जे देखा-देखी दुनियाँ चलै छइ। एकर बहुतो कथा-पीहानी अनेको ढंगसँ कहलो गेल अछि कहलो जाइते अछि.! वौड़ाइत-वौड़ाइत सिंहेश्वरक मन अपन परिवारपर अँटैक गेलैन। अँटैकते मनमे उठलैन जे हमहूँ तँ असगरे बेटा बापक रहिऐन, कहाँ पढ़ाएल-लिखाएल भेलैन? समस्या तक तँ सिंहेश्वरक मन पहुँच पबैन मुदा तइसँ आगू गेले ने होइन। पत्नीक प्रश्नक उत्तर दैत बजला-

“धिया-पुता कि कियो अनका भरोसे जनम्बैए आकि अपना बाहुँ-बलक भरोसे जनम्बैए।”

सिंहेश्वरक उत्साहपूर्ण विचार सुनिते भुलिया, जहिना पाकल आमक गाछक डारिपर कियो ठाढ़ भऽ अपन दुनू पैरक जोड़सँ आस मारैए जइसँ काँच-पाकल सभ आम भरभरा खसैए तहिना आस मरैत बजली- “विधाता जखन शरीरमे मनुक्ख सन रत्न पैदा करैक शक्ति देने छैथ तखन जे लोक दुइयेटा धिया-पुताक पछाइत ऑपरेशन करा लइए, से ई उचित भेल?”

बजैक क्रममे भुलिया बाजि तँ गेली मुदा ई बात बुझबे ने केलैन जे जखन अपनो पेट भरैक ने उपाए अछि आ ने तकर उपायक बाट पकड़ए चाहि रहल छी, तखन जँ काँकोरबा चालि पकड़ब तँ अपने अण्डा-बच्चा ने पेट खोखैर खा जाएत।

तैबीच पत्नीक बाजल बात सुनि सिंहेश्वरक देह फुनफुना गेल छेलैन जइसँ मनमे उठि गेल छेलैन जे पत्नीकेँ कहिऐन, ‘विधाताक जे दोख लगा अपनो पैरक धरती छोड़ि अकासमे ठाढ़ भऽ बाजि देलिऐ, से ई कहू जे जैठाम जिनगीक कोनो ठेकान नहि अछि जे कखन छी आ कखन नहि छी, तैठाम जँ दर्जन भरि धिया-पुताक भार अहाँपर छोड़ि मरब तखन मुइला पछाइत हमरा कोन-कोन गारि पढ़ब से अखन सोझहेमे कहि दिअ।’ मुदा सिंहेश्वरक अपने मन मनाही केलकैन जे सोझे गप्प-गप्पीसँ किछु ने होइए। तइ बिच्चेमे राजदेव सेहो पहुँच गेल। राजदेवकेँ देखिते सिंहेश्वरक मन ठहकलैन जे किए ने जेकर काज करए डेग उठेलौं आ तइ बिच्चेमे की भऽ रहल अछि से सभ बात तेकरो कहि दिऐ। बाल-बोध अछि तँए ओकर सीमाक जे जीवन अछि से जँ इमानदारीसँ बुझा कऽ कहि देबै तखन ओकरो मन मानत किने जे काज डोरियाएल अछि। पढ़ाइ-लिखाइक प्रश्न छी, केहन शिक्षा केहेन लोककेँ भेटइ। छठियारिक राति तँ समाजक दाइ-माइ बेटाकेँ असिरवाद दैते छैथ जे डॉक्टर बनबह, इंजीनियर बनबह। मुदा की आजुक परिवेशमे डॉक्टरी शिक्षा, जे पचासो लाखक बनि गेल अछि ओ दाइ-माइक असिरवादसँ थोड़े पूरत?

..सिहेश्वर बजला- “बौआ, तोहर किताबक पुरजी जेबीमे अछिए।

काल्हि देवकान्त बाबू ऐठाम गेला पछाइत आन-आन गप-सप्प तेना उठि गेल जइसँ ओहीमे अबेर भऽ गेने अपन काज पछुआ गेलह। मुदा आइ अखने चाह पीब निकलै छी, पहिने तोरे काज करब।”

ओना, राजदेवक मन पढ़ाइक गिरैत स्तर आ टुटैत परिवेश देखि बेकल भऽ रहल छेलै, तहूमे अपन जीवनक सभ पाया टुटैत देखि आरो मन विचलित छेलै, मुदा बाल-बोधक मनमे ऐ सँ बेसी आबिये की सकै छल। बाजल- “बाबू, किताबक दुआरे कखनो ने पढ़ै छी। जेते बुझल अछि तेतबेकेँ केते पढ़ब।”

बेटाक बात सुनि सिंहेश्वरक मन डोलि गेलैन जइसँ पत्नियोँ आ बेटोकेँ लगमे बैसबैत बजला- “बौआ, बाबूक जखन मरै बेर एलैन तखन लगमे बैसा जे कहलैन से पहिने कहि दइ छिअ। एकटा भूत जहिना मुड़ी मचोड़ि खा जाइए तहिना दोसर भूत सेहो ओहन अछिए जे मुड़ी सोझ करैत जीवन सेहो दइते अछि।”

अखन तक भुलिया चुड़ीन आ जीनक खिस्सा तँ सुनने छेली मुदा भूतक खिस्सा नहि सुनने छली जे भूत मुड़ी मचोड़ि खेबो करैए आ मुड़ीकेँ सोझ करैत दौड़ेबौ करैए। ओना, भुताहि गाछी सेहो सुननहि छेली। बजली-

“भूत तँ पवनक रूप भेल। ई केना दुनू काज करत? माने मुड़ी मचोड़बो करत आ मुड़ी सोझो करत?”

❑ कुण्ठा, छठम पड़ाव- 24 अक्टूबर 2021

कौलेज जकाँ हाइस्कूलमे घन्टीए-घन्टी हाजिरी नहियेँ बनौल जाइए जे ई काज गोपालबाबू करितैथ। क्लासमे आबि सोझे पंत[13] जीक कविताक पाँती शुरू केलैन- जग पीड़ित अछि अति दुखसँ जग पीड़ित अछि अति सुखसँ..।

निरविचारी शिक्षक भेने घन्टी बजैसँ पहिनहि गोपालबाबू मुड़ियारी दऽ दऽ ऐगला क्लास दिस तकैत रहै छैथ जे जखने क्लास खाली हएत, माने पहिलुका घन्टीक शिक्षक क्लास रूमसँ निकलता, तखने ऐगला क्लासमे अपने पहुँच जाएब। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे जँ दोसर घन्टीक क्लास सेहो रहल होनि, ओना से नइ रहने परिस्थितिमे अन्तर होइते अछि, मुदा से नहि, निरविचारी शिक्षक रहने गोपालबाबू क्लासमे अबिते अप्पन कर्तव्यपर धियान रखैत अप्पन काजकेँ समयसँ पूर्व करैक अभ्यास बनौनहि छैथ। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे कोनो काज समयेपर ने पूर्ति हएत आकि समयसँ पहिने पूर्ति भऽ जाएत? एहनो विचारकेँ नहियेँ काटल जा सकैए, मुदा एते तँ कएले जा सकैए जे समयक गतिकेँ माने समयसँ अपनाकेँ तेज गतिमे आनि ओही काजकेँ समयक हिसाबसँ पहिनौं तँ सम्हारले जा सकैए। खाएर जे हुअए मुदा गोपालबाबूक मनमे एते जिज्ञासा छैन्हे जे जैठाम अप्पन कर्मक गति अछि तैठाम अपनाकेँ चुकाएब कोनो दृष्टिये नीक नहि अछि, तँए ओइ अनुकूल अपनाकेँ सदैत काल बनौने रहब उचित बुझि निमरजना करै छैथ।

वर्गक विद्यर्थियो तँ विद्यार्थीए ने भेला, तँए कखनो क्लास भेला पछातियो आ कखनो क्लास शुरू होइसँ पहिनौं पिक्की सेहो मारबे करै

[13] **पद्म भूषण महाकवि सुमित्रानंदन पंत**

छैथ मुदा ऐठाम से नहि, गोपालबाबूक क्लास रहने सभ, वर्गक सभ विद्यार्थी, अपनाकेँ पहिनेसँ साकांच भऽ जाज्ञासु रूपमे, जहिना चिड़ैक गेल्ह अहराक चाहमे आँखि उठा-उठा माइयक बाट तकैत अछि, तहिना विद्यार्थी सभ गोपालबाबूकेँ तकैले आँखि उठबए चाहलक कि गोपालबाबू हाथमे किताब नेनहि क्लासमे प्रवेश केलैन।

कौलेज जकाँ हाइस्कूलमे घन्टीए-घन्टी हाजिरी नहियेँ बनौल जाइए जे ई काज गोपालबाबू करितैथ। क्लासमे आबि सोझे पंत जीक कविताक पाँती शुरू केलैन- जग पीड़ित अछि अति दुखसँ जग पीड़ित अछि अति सुखसँ..।

ऐठाम 'पीड़ित' शब्द कने मरखाह बुझि पड़ैत हएत मुदा तेकरा अखन छोड़ू। अखन एतबे जे ई जग माने ई दुनियाँ दुखोसँ पीड़ित अछि आ सुखोसँ पीड़ित अछि।

भरल क्लासक विद्यार्थीक बीच विषयक भाव जगल। एक्के दुनियाँ दुनू केना भऽ सकैए? प्रश्न तँ अछिए।

बाल मन जहिना मुनीलालक तहिना धुनीलालक सेहो छल। मुदा जखन शिक्षक पढ़ा रहल छैथ तखन बीचमे उठियो कऽ किछु बाजैत सेहो उचित नहियेँ होएत। ओना, तइसँ घात आकि अवघात आन-आन छात्रकेँ जे भेल होइ मुदा मुनीलाल आ धुनीलालक मनकेँ अकासमे उड़ा देलक, जइसँ कविताक ऐगला पाँतियो आ व्याख्याओक चर्च, कान ठाढ़ केला पछातियो दुनू गोरे ने किछु सुनलक आ ने बुझलक। प्रश्न तँ आसान नहियेँ अछि। किए तँ जे दुनियाँ दुखसँ पीड़ित अछि ओ सुखोसँ केना पीड़ित रहत आ जखन सुखसँ पीड़ित रहत तखन दुखसँ केना पीड़ित हएत?

खाली रेल गाड़ीक डिब्बा जहिना इंजन लागल स्टेशनसँ गुजैर जाइए मुदा चढ़निहार रस्तेमे छुटि जाइ छैथ, सएह स्थिति मुनीलाल आ धुनीलालक भऽ गेलइ। माने, जहिना कोनो उताहुल लोककेँ उताहुल काज सिरपर सवार रहै छैन तहिना मुनियो लाल आ धुनियो लालकेँ भऽ गेल। ओना, दुनू गोरेक मनक उतलपन अपना-अपना विचारे अपन-अपन छेलै,

केकर कोन रूपक छेलै से ने मुनीलाल धुनीलालक बुझैत आ ने धुनीलाल मुनीलालक बुझैत। बुझबो केना करैत, सात अरब लोककेँ सात अरब बुधियो-विवेक आ मनो तँ अछिए किने। बुझले अछि जे भरि दिनमे मन साठि हजारसँ ऊपर बेर टहलान मारैए। तैठाम ओ बुधि-विचारकेँ सदिकाल एकठाम थोड़े रहए देत, तखन तँ भेल जे बुधिये-विवेक ओकरा, माने मनकेँ गतानिकऽ पकड़ने रहए जे किम्हरो डोल-डाल ने हुअ देत। खाएर जे अछि से अछि। क्लास समाप्त होइते मुनीलाल धुनीलालकेँ कहलक- “धुनी, हम कने गोपालबाबूसँ भेँट करबैन।”

जेना मुँहक बात छीनि कियो अपना मुहेँ वएह बात बजैए, तेकरा तँ लोक यएह कहि ने सीमापर ठाढ़ करैए जे अहाँ हमर पेटक बात मुँहक बोलक माध्यमसँ छीनि हमरा मनक बात अहाँ बजलौं हेन। सह दैत धुनीलाल बाजल- “हुनकासँ हमहूँ भेँट करबैन।”

ओना, दुनू भाँइ जटायु जकाँ सुरुजेकेँ पकड़ैले अप्पन पाँखि नहि कटा, दुनू गोरे माने मुनियो लाल आ धुनियो लाल क्लास समाप्त होइते गोपालबाबूसँ मिलैले पाछू-पाछू विदा भेल। किछु दूर माने क्लास रूमसँ बैसाररूमक बीच, अपन-अपन डेग दुनू गोरे बढ़ा गोपालबाबूक लगमे पहुँच गेल। पहुँचते मुनिलाल बाजल-

“श्रीमान्, एकटा काज अछि।”

गोपालबाबू गायत्री मंत्र जकाँ मने-मन अप्पन ऐगला क्लास जपि रहल छला जे आब दसम क्लासमे घन्टी अछि, आइ की सभ पढ़बैक अछि...। तैबीच मुनीलालक बात सुनि पाछू उनैट ताकि बजला-

“अखन काजमे व्यस्त छी तँए अखन नहि, छुट्टी भेला पछाइत भेँट करिहह।”

जहिना तत्काल काज नहियोँ भेने जँ काजक आश्वासन भेटैए तँ मनक विश्वास जागिते अछि जे काज हेबे करत। तहिना दुनू गोरेकेँ माने मुनियो लाल आ धुनियो लालकेँ भेल। पाछू घुमैत, माने अपना क्लास दिस अबैत दुनू गोरे विचारए लगल। मुनीलाल बाजल- “धुनी भाय, भने नीक

भेल।”

मुदा धुनीलालक मन टुटै सन भऽ गेल छेलइ। किए तँ छुट्टी तँ छुट्टी छी। ओ जहिना काजकेँ छुट्टी कऽ दइए जइसँ जीवनक छुट्टी सेहो भऽ जाइ छै तहिना अप्पन अनन्त जीवनक रूपक बीच काजकेँ नीको तँ बनैबिते अछि। धुनीलालक मन टुटै सन ऐ दुआरे बनि गेल छेलै जे जहिना असीम पियासलकेँ पानि भेटने असीम संतोष होइ छै, तहिना ने नइ भेटने असीम असंतोषो होइते छइ। सएह धुनीलालकेँ भेल। ओम्हर गोपालबाबूक मन भीतरे-भीतर हर्खसँ हरखित होइत हरितम रूप पकैड़ अप्पन मान गढ़ि रहल छेलैन। गढ़ि रहल छेलैन, जहिना जनेउ अंगीकार करैसँ पहिने गठियौल जाइए जइसँ असीम बोनमे असीम रूपमे कोनो नव फूल-फल भेटने सेहो तहिना होइए। एकाएक गोपालबाबूक नजैरिक आगू भुकभुकाइत भगजोगनी जकाँ, जे अन्हार-इजोतक सीमापर ठाढ़ रहैए, हुअ लगलैन।

क्लास उसैरते गोपालबाबू ऑफिस रूमसँ निकैल मुनीलाल आ धुनीलालकेँ चारि साए विद्यार्थीक बीच ताकए लगला। जहिना गोपालबाबू मुनीलाल आ धुनीलालकेँ ओहन प्रेमी-प्रेमिका जकाँ, जे एक दोसरासँ मिलैले तेना उताहुल रहैए जे अरबो-अरब लोकक बीच एकाग्र भऽ ओइ पाछू लागि जाइए, तहिना दुनूकेँ ताकए लगला। एम्हर मुनीलाल-धुनीलाल सेहो भेँट करैले हिनका ताकिये रहल छेलैन। तीनूक नजैर एक-दोसरसँ मिलिते जहिना गोपालबाबू आगू ससरए लगला तहिना मुनीलाल आ धुनीलाल सेहो आगू बढ़ैत गोपालबाबूक लगमे चलि आएल। नजैर उठा जखन दुनू गोरेकेँ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे असीम पियाससँ दुनू गोरेक मन कछमछा रहल छइ। वर्षाक पानि जकाँ अकाससँ धरतीपर उतरैत गोपालबाबू बजला-

“बौआ, जहिना भूख-पियास तोरा सभकेँ लागल छह, तहिना अपनो लागल अछि, तँए तीनू गोरे संगे-संग डेरापर चलह। ओइठाम पहिने किछु खाएब आ चाह पीब, पछाइत गप-सप्प करब।”

शारीरिको आ मानसिको तृप्ति दुनू गोरेकेँ भेटिये गेल, तँए एक्के स्वरमे दुनू गोरे बाजल- “बड़बढ़ियाँ।”

डेरापर पहुँचते गोपालबाबू दुनूकेँ, माने मुनियो लाल आ धुनियो लालकेँ दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैसा अपने चापाकलपर पवित्र, माने अप्पन थाकल-ठेहियाएल शरीरो आ शरीरक भीतर मनोकेँ उर्जवान बनबैक प्रक्रियामे जुटि गेला। मुदा मन ओहू दुनू विद्यार्थीक क्रिया-कलाप देखि रहल छेलैन जे बच्चा अप्पन घर जकाँ बुझि, कोनो खगल काजकेँ पूर्तिमे लागल अछि आकि सोल्होअना हमरे दिस देखैए। भाय, दुनियोँ तँ दुनियाँ छीहे, सभकेँ बुझल अछिए जे जहिना धारक धारा पार करैमे कहल जाइए जे ‘खोलू धरिया, उतरू पार, ऐ नदिक यएह बेवहार’। तहिना दोसर दिस ईहो कहले जाइए जे ‘शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान’। आब अहाँ अगहन महिनामे खेतसँ पाकल धानक शीश आनि ओकर नीक जकाँ जुटिया साजि, मकरक मेलामे महादेव बाबाकेँ चढ़ा दइ छिऐन, तहिना बुझू।

नियमित परिवारमे, माने जँ परिवारक लोक परिवारक नियमकेँ बुझि अप्पन पारिवारिक जीवन बनबै छैथ, तँ ओ निश्चये परिवारक संचालन समुचित ढंगसँ आगू बढ़बै छैथ। गोपालबाबूक पत्नी, बुझू जे एक मैथिलानीक गुणसँ जहिना सम्पन्न छैथ तहिना मिथिलाक विधि-बेवहारसँ सेहो सम्पन्न छथिए। आब अहाँ कहब जे विधि-बेवहार तँ विधि-बेवहार छीहे, तैबीच मिथिला की? भोजपुरिया बरी कहियौ आकि अल्लापुरक बरी, बरी तँ बरी छी।

अपना मने बरी कहबै, तइले अहाँकेँ कियो डाँड़-बान्ह थोड़े करत, मुदा एते तँ कहबे करत जे भाय बरीक गाछ जनमैक जे बीजरूप अछि, माने हिन्दीक बीज, मैथिलीक बीआ वा बीहैन, ओकरा अल्लापुरसँ धर्मपुर तक, बिच्चैड़/बिच्चैन सेहो कहै छैथ। खाएर कियो अप्पन भाषाकेँ भाखा बना लेता। मिथिला बरीक जन्म स्थल छी, ऐठामक जे कमल फूल अछि, कमलक माने थल-कमलक नहि बुझब, पानिमे जे कमल फुलाइए, जेकर

जड़िक सीरकेँ बिसाँढ़ कहै छिऐ, जे गरीबक आहार सेहो छी। ओही गाछक ऊपरमे बरी फड़ैए। दधीचि ऋषिक हड्डीसँ जहिना देवगण हथियार बना, राक्षसगणकेँ पराजित केलैन तहिना कमलक फूल अप्पन भोज्य विन्यास बनि, फल कहियौ कि फड़, बना अप्पन बरी नाम धरा बरीकेँ मानलैन। खाएर जे अछि से अछि मुदा मुनिलालो आ धुनीलालो जेना अप्पन चाह-जलखै बिसैर गेल तेना अप्पन प्रश्नकेँ नइ बिसरल। ओ दुनूक मनमे बेर-बेर उठिये रहल छेलै- 'जग पीड़ित अछि दुखसँ आ जग पीड़ित अछि सुखसँ'। मुनीलाल बाजल-

"श्रीमान्, जग दुखो आ सुखोसँ जखन पीड़ित अछि, तखन लोक की भेल, दुखी आकि सुखी?"

मुनीलालक प्रश्न सुनि गोपालबाबूक मन मुस्की मारलकैन, मुदा मुँह खोलि हँसला नहि। बुझले अछि जे हँसी ओहन ठट्ठा छीहे, जे नीकोमे लोक हँसैए आ अधलोमे नइ हँसैए सेहो तँ सबहक आँखिक सोझेमे अछि, तँए एकरा झुठिआएलो नहियेँ जा सकैए। ..गोपालबाबू बजला-

"बौआ, आइ एतबे बुझह जे जहिना दुखक सीढ़ी बनल अछि तहिना सुखोक सीढ़ी बनल छइ। जहिना अनेको रंगक दुख अछि तहिना अनेको रंगक सुख सेहो अछि। दोसर दिन ऐसँ आगूक विचार करब।"

❑ सुख-दुख, 04 अक्टूबर 2023

सीतापुरमे जहिना अदौमे संयुक्त परिवार छल तहिना अखनो अछि मुदा से अछि मात्र पाँचेटा परिवारमे। ओना, ई कहब जे सभ दिनसँ पाँचेटा ओहन परिवार रहल से बात नहि अछि। पहिलुका हिसाबसँ ओइमे कमियो आएल आ बढ़ोत्तरियो भेल, जे अखन दस-बारह परिवारपर आबि अँटकल अछि। ओना, ओहू परिवारमे सभ तरहेँ एकरूपता नहियेँ अछि, किछु-किछु जहिना समता अछि तहिना विषमता सेहो अछिए, मुदा किछु अछि संयुक्त परिवार तँ अछिए।

सीतापुर मिथिलांचलक अदौक गाम छी, नवघरिया वस्ती नहि। ओना, कोसी-कमला धारक भीरमे नवघरक वस्तियो अछिए, मुदा ओहो नवघरिया गाम तँ नहियेँ भेल। ओना मनुक्खक पीढ़ी बदलने बुझिमे तेहेन आबिए सकैए। मुदा छी ओहो मिथिलांचलक प्राचीने गाम, जे कोसी-कमला धारक कटनियासँ कटि गेल आ धारकेँ घुसकने पुन: गाम बसि गेल। तँए, कोसी-कमलाक कटिनियाँ दुआरे गामक इतिहास हेरा जाएत सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। भलेँ ओकरा 'नवघरिया गाम' नहि कहि 'पुनर्वास गाम' कहि सकै छिऐ। मुदा तहूमे एकटा बाधा उपस्थित भइये गेल अछि। ओ ई जे गामक नाउए बदैल दोसर-तेसर नाओं रखि देल गेल अछि। खास कऽ नवटोलक नाओंसँ कएटा नवटोल गामे भऽ भऽ गेल अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से अछि तेतए अछि। मुदा सीतापुर अदौक गाम छी, जेकर रूप अखनो ओहिना झलैक रहल अछि। से दुनू दृष्टिये, घरक रंग-रूपक दृष्टिये सेहो आ मनुक्खक दृष्टिये सेहो।

घरक दृष्टिये सीतापुरमे जहिना अदौमे गामक घर-दुआर घास-पात आ खरही-बाँससँ बनैत छल तहिना अखनो ओगरबाह-रखबारक संग गरीबक घर अछिए। अखनो ओहने घर बनैए, जइमे बरसातो आ शीतलहरियोमे लोक बास करिते छैथ। तँए कि गाममे पक्का मकानक दू-

मंजिला, तीन मंजिला घर नहि अछि सेहो अछिए। सभ तरहक सुख सुविधा- पानि-बिजलीक संग हवा-ले पंखा, भोजन बनबैले गैस चुल्हि वा बिजली चुल्हिसँ सम्पन्न अछि। मुदा तँए कि सीतापुरमे लकड़ीक जारैन वा गोबरक गोरहा-गोइठा आकि गाछक-पातसँ भानस नइ होइए, सेहो होइते अछि। तहिना बिजली पंखाक जगह ताड़क पातक पंखा, डोमौआ बिअनि नइ अछि, सेहो अछिए। तेतबे नहि, बिजलीक इजोतक जगह लालटेन, लेम्प, डिबियाक उपयोग सेहो होइते अछि। तहिना पानिक इनार-पोखैर सेहो अछिए। भलेँ गाममे टंकी आ चापाकल सेहो अछि, मुदा सौंसे गाममे नहि। खण्डित गाममे जरूर अछि। जइसँ कखनो बिजलीसँ तँ कखनो गैस चुल्हिसँ गाम खण्डित होइते अछि। ओना, आरो-आरो बहुत एहेन चीज अछि जइसँ गामकेँ खण्डित रूपमे देखल जा सकैए जेना- शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि-इत्यादि, मुदा अखन से सभ नहि अखन मात्र एतबे।

एक दिस जहिना दू-तल्ला, तीन-तल्ला नमगर-चौड़गर पक्का मकान अछि तहिना दोसर दिस छोट-छोट एक-तल्ला मकानक संग भीतघर, टटघर सेहो अछिए। समुद्रे जकाँ ने गामो होइए। समुद्रमे जहिना नमहर-नमहर माछ-कौछु होइए तहिना ने नमहर-नमहर गोहि, नकार, सोंसक संग आनो-आन जल-जानवर सभ सेहो रहिते अछि, जे मनुक्खोकेँ खाइत अछि।

हजार बीघा जमीनबला सीतापुर गाममे आठ साए परिवारक बास अछि। आठो साए परिवारक बीच पाँच हजार लोक छैथ। माने सीतापुरक आबादी पाँच हजार अछि। ओना, आठो साए परिवारमे ने एके-रंगक लोक अछि आ ने एके रंग खेत-पथार अछि। ओना, लूरि-बुइधिक हिसाबसँ सेहो अन्तर अछिए, मुदा से अखन नहि। अखन खाली जनसंख्या आ सम्पैतक हिसाबसँ जे भेद अछि मात्र तेतबे।

सीतापुरमे जहिना अदौमे संयुक्त परिवार छल तहिना अखनो अछि मुदा से अछि मात्र पाँचेटा परिवारमे। ओना, ई कहब जे सभ दिनसँ पाँचेटा ओहन परिवार रहल से बात नहि अछि। पहिलुका हिसाबसँ ओइमे कमियो आएल आ बढ़ोत्तरियो भेल, जे अखन दस-बारह परिवारपर आबि अँटकल

अछि। ओना, ओहू परिवारमे सभ तरहेँ एकरूपता नहियेँ अछि, किछु-किछु जहिना समता अछि तहिना विषमता सेहो अछिए, मुदा किछु अछि संयुक्त परिवार तँ अछिए।

सीतापुरमे पाँचटा ओहन संयुक्त परिवार अछि जइ परिवारमे गामक तीस प्रतिशत जमीन अछि। ओना, ओहू तीस प्रतिशत खेत-पथारमे पाँचो परिवारकेँ एकेरंग नहियेँ अछि, कम-बेस अछिए। सभ तरहेँ ओ पाँचो परिवार भरि गाममे नीक मानल जाइत अछि। जहिना घर-दुआर तहिना बास-अगवास आ तहिना गाछी-कलम, बाड़ी-फुलवारीक संग अन्न-तीमन, फल-फलहरी उपजक हिसाबसँ सेहो बेसियो अछि आ नीको अछि। बाँसक बीट जकाँ ओ परिवार सघन अछिए। सघनो केना ने रहत, आमक गाछ जकाँ बाँस थोड़े होइए जे सदिकाल असगरे रहए चाहत।

❑ पंगु, पहिल पड़ाव- 11 मई 2018

“भयार, एकटा राजा एकटा जोगीकेँ अपन दुनू बेटाक सेवा करैक भार देलैन। जोगीकेँ विचारैमे धोखा भेलैन, एकटाकेँ अपने जकाँ जोगी बनौलैन, जे अपना घरमे रहत। दोसरकेँ राजसी जीवनसँ मण्डित केलैन। जखन दुनू जुआन भेल तखन जोगी दुनूकेँ राजाक सामने उपस्थित केलैन। हलैस कऽ राजा जोगीकेँ अपन हिस्सामे लऽ लेलैन। अपसोच करैत जोगी घर घुमला।”

“भयार, दुनियाँ जे बुझह, मुदा अपनो तँ इमान-धरम अछिए, चाहे अपन बेटा-बेटी हुअए आकि दुनियाँक, मुदा अपन जे मानवीय कर्तव्य अछि, तेकरो जँ उठा कातमे फेक देब, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल।”

अपन भारक भारपन विलासदेवकेँ सेहो बुझि पड़लैन। जइसँ मनमे एकटा स्वर्ण-रूपा विचार अनायास जगि गेलैन। बजला-

“भयार, गणेशजी सन गुरू आ अष्टावक्र सन ज्ञानी कियो किए ने होथि मुदा वेद विहीत विचार जे ‘पिता पहिल गुरू छैथ’ तेकरा कियो झुठिया देत?”

नहलापर दहला फेकैत निशाकान्त बजला-

“भयार, ताशक गेम-गेम खेलमे भलेँ नहलापर दहला फेक दहला दियौ मुदा ‘ट्वेन्टी एट’मे नहले दहलाकेँ नमबैए। खाएर समय पेब अहिना टिटही अकासमे टिटियाइए तइसँ लोककेँ कोन मतलब। मतलब तँ एतबे ने अछि जे अपन परिवारक नमहर इतिहास अछि, जहियासँ मनुक्ख घर बना परिवारक संग रहए लगला तहियाक परिवार छी।”

निशाकान्तक विचारमे विलासदेवकेँ इतिहासक कोन पन्ना भेट गेलैन से तँ विलासदेवे बुझता, मुदा मनक चपचपीमे चपचपाइत मुस्की दैत बजला- “भयार, सभ दिन दुनू भाँइकेँ कहै छिऐ जे ‘बौआ, हजारो

धर्मस्थान आकि हजारो सरोवरक घाट पर किए ने नहाएल होइ, मुदा बेटा-बेटी लेल माए-बापक सेवा सभसँ पैघ धर्मक काज छी। पिताजी जखन जीबै छेला, भरि दिनमे तीनबेर मद्यपान सेहो करै छेला। समयसँ पहिने मुस्ताइज भऽ हुनका मद्यपान करबैत रहिऐन। ओ त्रिकालदर्शी छेला। जखन मन उदार भऽ जाइ छेलैन तखन कहै छेला- 'बौआ विलास, जहिना तूँ सेवा करै छह तहिना तोरो पचास बीघा जमीन अरैज देने छिअ। मरैबेर मड़ुओ भरि मनमे सोग-पीड़ा ने अपने रहत आ ने तोहर रहत। जँ कियो कहनिहार कहत जे अहाँक परिवार देशक भार बनल अछि। से ओकरे कहने भऽ जेतइ। जहिना अपन देश छी तहिना ने अपन दिनो-दुनियाँ अछि, जइ पाछू लागि अपन जीवन धारण केने छी।"

दुनू भाइ–सुखदेवो आ वामदेवो–क मन तेहेन मिथि-मालिनिक मथानीमे मथा गेल जे जहिना दुनियाँक हजारो बाटमे हजारो सुख-दुख नचैत अपन छर्त्त पकैड़ लइए तहिना छर्त्त पकड़ैत सुखदेव बाजल-

"भयार चाचा, अहाँक सोझामे कहै छी जे जहिना सभ अपन माए-बापक माने माता-पिताक सेवा दुनियाँमे कऽ रहल अछि तइसँ की हम कम छी। जहिना दुनियाँमे देखै छी तहिना करै छी, तइ ले जँ पिताजी मने-मन तकलीफ सहता से किए सहता। हुनको ने बुझए पड़तैन जे जखन आब मोबाइलेसँ पढ़ौनी सेहो शुरू भऽ गेल अछि, तखन स्कूल जेते खुजल तेकरो हिसाब नइ होइ सेहो केहेन हएत।"

ओना, धारक धारामे जहिना खत्ता-खुत्तीक सड़ल-जमल जमौठ पानि किए ने मिलैत होइ मुदा धाराक प्रवाहमे ओकरोमे एहेन गतिक संचार तँ भइये जाइ छै जइसँ ओकरोमे शुद्धता आबिये जाइ छै। अही अनुकूल सुखदेव बाजल। किए तँ जीवनक एक परिस्थिति ओहन अछि जे अभावक जिनगीमे लोक नहि पढ़ि पबैए। मुदा जे परिवार आर्थिक दृष्टिएँ सम्पन्न अछि, जइ परिवारमे आई.ए.एस. भऽ सकैए, तैठाम सहोदरे दोसर-तेसर भाए श्रमचोर केना बनि गेल अछि। जे सुखदेव अपनो ने बुझैए। जहिना ग्रहन लगलापर वा अकासमे सुर्ज-चान-तारा वा पानिक वादलक

घटमान देख, देखनिहार ऊपरे-घाड़े ने देखैत रहि जाइए। ओ थोड़े बुझैए जे सुर्ज केना कतियाएल देखि पड़ैए आ कि आने ग्रह-नक्षत्र किए कतियाएल। ओ तँ वएह देखि सकैए जेकरा हृदयमे ज्योतिषक ज्योति प्रज्वलित होइन। कहैकाल तँ सभकेँ सभ कहै छिऐ 'श्रवण कुमार जे माए-बापक सेवा केलैन ओ इतिहास-पुराणक अद्वितीय घटना छी।' मुदा श्रवण कुमारक जीवनधारा आ माता-पिताक जीवनधारा की छेलैन, केहेन छेलैन आ केते प्रवाहित छेलैन सेहो ने सबहक समक्षक प्रश्न भेल। खाएर जे भेल ओ त्रेता जुगक घटनामे चलि गेला। आब कि गुरुद्वारमे बौगुला जकाँ धियान करैक बेवहार रहल, आब तँ मोबाइलसँ ज्ञानक संचरण हुअ लगल अछि।

निशाकान्त मने-मन विलासदेवोक आ दुनू भाँइ–सुखदेवो आ वामदेवो–क नब्ज नीक जकाँ पकैड़ नेने छला। झूठ केना सच बनैए आ सच केना झूठ बनैए, अही सीमापर अपनाकेँ ठाढ़ करैत निशाकान्त बजला-

"भयार, ई देहे व्याधिक घर छी।"

बजैक क्रममे निशाकान्त वैचारिक विषय तँ रखि देलैन, मुदा अपन मिसियो भरि टिप्पणी नहि देलैन जे अही व्याधिसँ ने मनुक्ख व्याधाक रूप पकैड़ व्याधिसँ निवृति भऽ सकैए। आकि जिनगी बनौने छी चाहक दोकानदारक आ अकासमे उड़ैत इंजन केना लसैक गेल? दिन-राति जँ से चिन्ता करत तखन ओ ई केना बुझत जे समाजमे माने गाममे, पचास रूपैआ आमदनीक परिवार अपन भेल तँए हमरा दुनू दिस देखए पड़त। एक दिस आमदनीक बढ़ोतरी केना हएत तँ दोसर दिस अपन परिवारकेँ अपना आमदनीपर असथिर करैक सेहो अछि। जँ से नहि हएत तँ परिवार पाओल जाएत किने।

गप-सप्पकेँ अन्तिम सीमा दिस बढ़बैत निशाकान्त बजला-

"भयार, हम जहिना अपना बेटा-बेटीकेँ बुझै छी तहिना अहूँक धिया-पुताकेँ बुझै छी। भलेँ दुनू भाँइ–सुखदेवो आ वामदेवो–मानए वा नहि मानए, मुदा अपनो तँ किछु कर्तव्यकेँ निमाहैत बजलौं। आब अबेर भऽ

गेल। पता लगल जे राधारमण जा रहल अछि, कहुना भेल तँ बेटे-भातिज ने भेल, घरसँ जखन निकैल दुनियाँ दिस बढ़त तँ कम-सँ-कम एतबो असीरवाद देब जरूरी अछिए किने जे कहितिऐ, बौआ गाम-घरक चिन्ता मिसियो भरि नहि करिहह। हम सभ अपन बुझि लेब।”

राधारमणक प्रति निशाकान्तक प्रतिक्रियाक आकलन तीनू बापूत विलासदेव एक-दोसर दिस देखि-देखि करए लगला। मध्यम वर्गक परिवारक मनुक्खकेँ सामाजिक-आर्थिक दुनू दृष्टिएँ तेना वैचारिक ढाँचामे ढालल गेल जे ओ श्रमहीनक संग भोगी-विलासी सेहो बनि गेल। जइसँ परिवारक ढाँचामे व्यवधान उपस्थित भेल आ धीरे-धीरे मृत्युक कगारपर पहुँच गेल।

एक तँ कचहरिया लोक निशाकान्त, तहूमे गामक सभ जनैत जे निशाकान्त सन इरखादार दोसर गाममे कियो ने छैथ, अपन चौदह बीघा खेत बेचि कोटे-कचहरीक ज्ञान हाँसिल केने छैथ, तैसंग एहेन सेहो छैथ जे सहोदरे भाइक संग सभ किछु केलैन।

सामंजस करैत निशाकान्त बजला-

“भयार, एकटा राजा एकटा जोगीकेँ अपन दुनू बेटाक सेवा करैक भार देलैन। जोगीकेँ विचारैमे धोखा भेलैन, एकटाकेँ अपने जकाँ जोगी बनौलैन, जे अपना घरमे रहत। दोसरकेँ राजसी जीवनसँ मण्डित केलैन। जखन दुनू जुआन भेल तखन जोगी दुनूकेँ राजाक सामने उपस्थित केलैन। हलैस कऽ राजा जोगीकेँ अपन हिस्सामे लऽ लेलैन। अपसोच करैत जोगी घर घुमला।”

❑ सुचिता,दोस पड़ाव- 08 जून 2020

जिनगीक सामान्य गतिमे जहिना रंग-बिरंगक समस्या एने, कर्त्ता अपन समयानुकूल समाधान करैत अपन गतिये आगू बढ़ै छैथ तहिना बनर्जीदादा सेहो केलैन। जइसँ जीवनक गति-विधिमे कोनो बेसी हलचल नहियेँ एलैन।

चाउर-गहुम मिला एक-एक बेकतीकेँ पाँच किलो भेट रहल अछि ओ ओहिना थोड़े भेट रहल अछि। ऐठाम भेटैक माने भेल संवैधानिक अधिकार भेटब। सत्ता-समाजमे जेतेक एकरूपता अबैए तेतेक स्वतंत्रता भेटब भेल। ई अनेको बर्खक आन्दोलनक फलस्वरूप भेटल अछि। जइ आन्दोलनमे केतेको गरीब जहल गेला, मारि खेलैन आ अनेको तरहक यातनाक शिकार बनल छैथ। तेकर फल छिऐन पाँच किलो चाउर-गहुम महीनाक भोजन। आठम-नवम् दशक माने 1980-90 इस्वीक बीच, खाद्यान्नक मामलामे देश आत्म-निर्भर भेल। तइसँ पहिने बाहरसँ अन्नक आयात होइ छल। एक तँ हजारो बर्खक गुलामीक जीवन जन-गणक छेलैन तैपर खेतीक समुचित बेवस्था सेहो नहि छेलैन जइसँ खेतक उपज बढ़ितैन। अछैते सम्पैत तंगहाली छल। जनसंख्याक वृद्धि तँ जलवायुपर निर्भर करिते अछि जइसँ जनसंख्याक वृद्धि हएब सोभाविक अछिए। किए तँ दुनियाँमे जेते रंगक जलवायु भारतमे अछि ओ आन देशमे नहि अछि। जँ से रहैत तँ कनाडा सन देश, जेकर रकबा भारतक रकबासँ बहुत बेसी छै, मुदा जनसंख्या ऐठामक एकटा राज्यक बरोबरियो ने छइ। जैठाम भारतक जनसंख्या एक अरब तीस करोड़सँ बेसी अछि तैठाम कनाडाक जनसंख्या चारि-पाँच करोड़ अछि।

जीवनक मूल समस्या माने भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा रहितो देशवासीकेँ पहिल जे समस्या भोजनक छी सेहो ने छेलैन। ओना, अखनो भरपूर नहियेँ छैन, मुदा नहिमे किछु तँ छैन्हे। जइसँ जीवनमे

किछु-ने-किछु सुधार भेबे कएल छैन। सभ जनिते छी जे जैठाम गरीबी रहै छै तैठामक लोक अन्ने बेसी खाइए। अपना ऐठाम भोजो-काजमे लोक आधा किलोक हिसाबसँ अन्नक सूची बनैबते छैथ। मोटा-मोटी दस किलो अन्न एक गोटाक दस दिनक भोजन भेल। सुभितगर परिवारमे अन्नक एते खपत नहि अछि, किए तँ गरीब लोक जकाँ ने देहक श्रम बेसी छैन आ ने अन्ने टाक भोजनपर आश्रित छैथ। खेबा-पीबाक अनेको विन्यास छैन्हे जे अभावी लोककेँ उपलब्ध नहि होइ छैन आ सुभ्यस्तकेँ होइ छैन।

जैठाम, जीवनक जे मूल समस्या भोजन अछि, आइ पचहत्तैर बर्खक आजादीक, स्वतंत्र जीवन भेटला पछातियो भोजनक समस्याक समाधान नहि भेल अछि, तैठाम जे आगूक समस्या अछि, माने वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा आ सुरक्षा ओ अकास कुसुम बनल रहबे करत किने।

देवनकेँ संग केने कुशेसर गोदाम पहुँचला। जहिना परिचित कुशेसर 'बनर्जीदादा'क छेलैन तहिना बनर्जीदादा कुशेसरक छेलैन। खुजल गोदाम, माने गोदामक मुख्य द्वारा खुजल, देखि कुशेसर सोझे बनर्जीदादा लग पहुँचला। बनर्जीदादा अपन बारहो गाड़ीक हिसाब मिला रहल छला। कनी फरिक्केसँ कुशेसर बजला- "प्रणाम दादाजी।"

ओना, जखने कुशेसर गेटक भीतर प्रवेश केलैन तखने बनर्जीदादा बुझि गेला, जइसँ आँखि उठा चीन्हि, अपना काजमे पुन: लागि गेल छला। कुशेसरक संगमे देवनकेँ अनठिया देखितो मनमे कोनो उत्सुकता बनर्जीदादाकेँ नहियेँ जगलैन। किए तँ अधिक दिन ओहन होइते अछि जइ दिन चिन्हारए जेबो करै छैथ आ अनठिया एबो तँ करिते छैथ।

जहिना कुशेसर फरिक्केसँ प्रणाम केलकैन तहिना बनर्जीदादा हाथक कलमकेँ कागजपर सँ उठा कुशेसर दिस देखैत मुड़ी झूका बजला-

"प्रणाम।"

बुधियार लोक जहिना कम-सँ-कम शब्दमे अपन विचार व्यक्त करए चाहै छैथ तहिना बनर्जीदादा सेहो केलैन। ओना, बनर्जीदादासँ

कुशेसर परिचित छथिए जे काजक विचारपर बेसी नजैर दादाक रहै छैन। देवनक काजक जिज्ञासा कुशेसरक मनसँ मेटा गेल छेलैन किएक तँ काजक भरमार सोझामे आबिये गेलैन जे काजक कोनो समस्ये ने अछि। बारह गाड़ी सामान अछि, आठटा मटिया काज करै छी, केतबो झोंकि कऽ काज करब तैयो चौथाइसँ बेसी गाड़ीक काज रहिये जाएत। कुशेसर बजला- "दादा, गामसँ एबे केलौं अछि। रस्ते-रस्ते सुनलौं जे एम.ओ. साहैबसँ झगड़ा भऽ गेल, तँए अपन हाजरी पुरबए रस्ते-रस्ते चलि एलौं।"

कहब जे झगड़ा भीड़मे गेलौं नहि आ झगड़ामे संग देलौं, एना केना हएत? हँ, किए ने हएत? मानि लिअ कियो झगड़ाक जगहपर नहि रहने, ने देखलैन आ ने लगले सुनलैन, तखन झगड़ाक हिस्सेदार केना बनता। किए ने बनता, जखन कानमे एलैन माने सुनलैन, तखनसँ जे ओइ झगड़ाक खोद-वेदमे लागि जाथि तँ किए ने हिस्सेदार बनि सकै छैथ।

जिनगीक सामान्य गतिमे जहिना रंग-बिरंगक समस्या एने, कर्त्ता अपन समयानुकूल समाधान करैत अपन गतिये आगू बढ़ै छैथ तहिना बनर्जीदादा सेहो केलैन। जइसँ जीवनक गति-विधिमे कोनो बेसी हलचल नहियेँ एलैन। बनर्जीदादा बजला-

"कोनो खास झगड़ा नहि छल। सामान्य छल। तँए जहिना आएल तहिना गेल।"

❑ मोड़पर, चारिम पड़ाव- 19 फरवरी 2021

अखन तक जे किछु भेल ओ बीतल दिनक घटना भेल, मुदा वर्तमानो आ वर्तमानपर ठाढ़ भविष्यो तँ आगूमे अछि, तइले जँ अपन समाजकेँ मुड़िया कऽ बाटपर नहि आनब तँ ओ आगूक अपमान हेबे करत किने। तँए नीक हएत जे किए ने अनगौंआँक बीच, माने आन समाजक बीच, अन्तर्राष्ट्रीय कानून जकाँ, जे सामाजिक सम्बन्ध होइए, तइ अनुकूल अपन समाजकेँ सूत्रवद्ध करैत आगू बढ़ी..! ऐठाम अबैत-अबैत माने विचार करैत-करैत, मुसरी झाक मन मानि गेलैन जे सम-सामयिक यएह बाट पकड़ब नीक रहत।

समाजक, माने तड़बोनीक, जे मुँहगर-कन्हगर लोक सभ छला ओ सभ विचार केलैन जे गामक जे अखन दलमल स्थिति बनि रहल अछि, ओ बिना मुसरी झासँ नहि सम्हरत। तँए सभ कियो चलू आ हुनका पकैड़ भार देबैन तखने गामक कल्याण हएत। समाजक लोककेँ दरबज्जापर देखिते पंडीजी बजला- “किमहर सुर्ज उगल जे सबकेँ थहाथही करैत दरबज्जापर देखै छी..!”

ओना, पंडीजीकेँ गामक सभ जानकारी भइये गेल रहैन। मुदा अपनाकेँ समाजसँ अलग राखि चलैबला मुसरी झाकेँ मिसियो भरि गम नहि रहैन। तँए निर्भीक जकाँ बाजल छला।

मुसरी झाक बात सुनि सभ-सभक मुँह देखए लगला, किनको किछु बजैक साहसे ने होइन जे किछु बजता। पंडीजी दोहरबैत बजला-

“समाज गलती स्वीकार करू, तखन भार उठा सकै छी।”

पंडीजीक साहस देख, माने मुसरीझाक विचारक तजगरी देखि ढोलबा झा बजला- “पंडीजी, गामक भार अहाँ असगरे उठा लेब?”

पंडीजीकेँ अपन अध्ययन-मननपर एतेक बिसवास बनले छेलैन जे एकटा मनुक्ख अगहनमे केतौ सौंसे गामक खेतक धानक बोझ थोड़े उघि सकैए मुदा विचारधारा तँ ओहन शाश्वत गुण छीहे जे एक गामक धानक कोन बात जे सौंसे दुनियाँक खेतक धानक बोझ उघि सकैए..! निर्भीक होइत मुसरी झा ढोलबा झाकेँ जवाब देलैन-

“जँ सौंसे गौंआँ मिलि भार देब तखन किए ने गामक भार असगरे उठा सकै छी।”

पंडीजीक विचारक प्रवाहमे ढोलबा झा बिना दोसर-तेसरसँ विचार नेनहि, अपने फुरने बजला-

“अहाँकेँ सौंसे गामक भार भेटल, जा कऽ सम्हारि दियौ।”

ओना, पंडीजीकेँ मनमे खटकलैन जे ढोलबा झा बुड़िवान लोक अछि, एकरा गप्पक मद्दी देब उचित नहि, मुदा अपनहि दोसर मन प्रेरित केलकैन जे असगरे तँ ढोलबा नहि अछि, संगमे आरो मुड़हन-मुँहगर लोक सभ सेहो छथिन। तँए जखन सभ संगे दरबज्जापर पहुँचलैन तइसँ पहिनहि किए ने सभ मिलि विचारि एकटा बजनिहार बनौलैन। ओना, पंडीजीक मन ईहो कहैन जे अखन तकक जे समाज (गामक समाज) सभ रहल अछि ओ ओहन रहल अछि जेकर डोराडोरि या तँ तइतेँ जकाँ सक्कत मूज जकाँ अछि या तँ काँच सूत जकाँ अछि, काँच सूतक माने भेल जे खुस-खुस टुटैए। पंडीजीक मनमे फेर अपने उठलैन जे मनुक्खोक तँ अपन मनक वेग होइए, ओही वेगानुकूल गामक लोक दबि रहला अछि आ अनगौंआँ बढ़ि रहला अछि। बरियातियोक तँ सभ ओहने नहि छैथ जे समाजक मान-अपमानक महिरमकेँ समान ढंगसँ मानैत होइथ। हो-न-हो कहीं कोनो एहेन घटना ने घटि जाए जइसँ दुनू समाजक नाक-कान कटि जाए। तँए नीक हएत जे जेते जल्दी सम्भव हुअए तेते जल्दी अनगौंआँ सभ गामसँ आदरपूर्वक बहरा जाइथ। सभकेँ, माने समाजक सभकेँ, आगू बढ़ैसँ रोकैत मुसरी झा बजला-

“जखन हमरा ऊपर गामक भार आएल, तखन ओकर निमरजना

करब अपन दायित्व बनैए, अहाँ सभ अपना-अपना ऐठाम जाउ, घन्टा भरिक पछाइत, माने एक घन्टा बीतलापर, सभक कानमे नीक-सँ-नीकतम, सभ समाचार पहुँच जाएत।”

हाँइ-हाँइ कऽ मुसरी झा तमाकुल चुना मुँहमे लेलैन आ छोट पएर रहनौं, माने शरीरक कदक हिसाबसँ, हाँइ-हाँइ डेग उठा बरियातीक जे अगुआ कर्ता छला, माने जिनकर बेटाक बिआहक बरियाती सजल रहैन, तिनका लग पहुँचला। पंडीजीकेँ देखि किनको मनमे कोनो तरहक शंका किए उठितैन। इलाकाक लोक मुसरी झाकेँ जनैत जे घर बनबैक लूरि, छोट जानवर रहितो मूसकेँ जहिना चौपायामे बेसी होइ छै तहिना मुसरी झा पंडीजीकेँ सेहो छैन्हे। आदरपूर्वक हिम्मतलाल, जिनकर बेटाक बिआह रहैन, बजला-

“पंडीजी, अपनेक जे आदेश होइ, मानि लेब।”

अपन भारीपन देखि पंडीजीक अपने मन कहलकैन जे बरियातीकेँ बिना किछु पुछने-आछने धाँइ-दे किछु बाजि देब उचित नहि, तँए मुँह उठा बरियाती दिस केलैन जे जिनका जे किछु हेतैन से मुहेँपर कहता आ मुहाँ-मुहीं ओकरा विचारिकऽ मुड़ियबैत आगू बढ़ब। बरियातीक बीचसँ फोचाइ बजला-

“चुनावमे इलाकाक भोँट लूटि कऽ अहाँक गौंआँ अनै छैथ से?”

मुसरी झा बजला-

“आब नइ अनता। आगू देखैत अहूँ सभकेँ समयपर पहुँचब अछि, तँए समैयक उपयोग सभ मिलि करू।”

कहि मुसरी झा उठि गेला। मुसरी झाकेँ उठिते हिम्मतलाल हाथक इशारासँ नटुआकेँ नाच बन्न करैक आदेश देलैन। सभ अनगौंआँ बरियाती अपन-अपन रास्ता पकड़लैन।

अनगौंआँ बरियातीकेँ गामक, तड़बोनीक सीमा टपिते, गौंआँ सभ नमहर साँस छोड़लैन। मुदा पंडीजी, मुसरी झाक, मनमे तेसरे विचार नचैत

रहैन। ओ नचैत रहैन जे गौंआँ हमरा अगुआ कऽ पहिलुका घटनामे जे बेवकूफ बनौता से वरदास कऽ लेब, ओ बीतल दिनक घटना भेल, मुदा गामक जे चौक-चौराहाक हीरो सभ अछि ओ हमरे विचार मानत। आ जँ से मानबे ने करत तखन अपने किए गोला-बरदक कीदैन सेवैक लोभमे फँसब। फेर लगले अपने मन मुसरी झाकेँ कहलकैन, अखन तक जे किछु भेल ओ बीतल दिनक घटना भेल, मुदा वर्तमानो आ वर्तमानपर ठाढ़ भविष्यो तँ आगूमे अछि, तइले जँ अपन समाजकेँ मुड़िया कऽ बाटपर नहि आनब तँ ओ आगूक अपमान हेबे करत किने। तँए नीक हएत जे किए ने अनगौंआँक बीच, माने आन समाजक बीच, अन्तर्राष्ट्रीय कानून जकाँ, जे सामाजिक सम्बन्ध होइए, तइ अनुकूल अपन समाजकेँ सूत्रवद्ध करैत आगू बढ़ी..! ऐठाम अबैत-अबैत माने विचार करैत-करैत, मुसरी झाक मन मानि गेलैन जे सम-सामयिक यएह बाट पकड़ब नीक रहत।

❑ अन्तिम क्षण, चारिम पड़ाव- 24 जून 2021

“मास्सैव, दियाद-वाद तँ राहैरक दालि सन होइए जे जेत्ते गलि कऽ सीझए तेते स्वादिष्ट.! सभ कालमे खनदान आ वंशक सभ नाम लेत मुदा सदिकाल तेना एक-दोसरपर बघुआएल रहत जेना बाघ-बिलाइपर बघुआ झपट मारि पकैड़ लइए आ खा जाइए।”

“सभ गप तँ नहि भेल, किए तँ जीवनक बहुत गप अछि मुदा कोयलाखानक एकटा गप तँ भेबे कएल।”

सिंहेश्वरक मुहसँ ‘कोयलाखान’ सुनि देवकान्त बाबूकेँ अपने मनमे उपकलैन जे केना आ केहेन चासनाला कोयलाखानक दुर्घटना 1975 इस्वीमे भेल..! जइमे हजारो मजदूरक मृत्यु भेल। मुदा कानूनक एहेन पेंच-पाँच अछि जे हजारोमे सँ मात्र तीन साए पचहत्तरिक मृत्यु सावित भेल माने मुआवजाक भागी बनला, बाँकी जहिना जल प्रवाहमे मरल छला तहिना जल प्रवाहे भेला। जहिना 1975 इस्वीमे चासनाला दुर्घटना कोयलाखानमे भेल तहिना बेरमो (ढोरी) खानमे 1965 इस्वीमे भेल छल। एक-पर-एक घटना कोयलाखानमे होइते रहल अछि। गजली टाँड कोलियरीमे 1995 इस्वीमे सेहो तहिना भेल। तेकर पछाइत बागडिगा कोलियरीमे 2001 इस्वीमे भेल.! देवकान्त बाबू बजला- “की सभ गप रस्तामे भेल?”

सिंहेश्वर बजला- “जखन गामक चौकपर सँ विदा भेलौं, लोक छँटल, तखन तीनू गोरे अपन-अपन जीवनक वृतान्त बेरा-बेरी शुरू केलैन। जे बीस-बाइस बर्खक छेली, हुनकर पति इंजीनियर छेलखिन। पाँचे दिनक छुट्टी लऽ कऽ नोकरीपर सँ बिआह करए आएल छेला। नैहर-सासुरमे बिआहक बहुत वीध पछुआएले रहैन तँए पत्नीकेँ संगे दुरागमन करा नहि लऽ गेल रहैथ। जाइकाल बाजल रहथिन जे छअ मासक बाद आएब आ परिवार लऽ कऽ जाएब।”

“बीचमे की भेलैन, सिंहेश्वर?” –देवकान्त बाबू पुछलखिन।

अपन विचारक बिसवास बढ़बै दुआरे सिंहेश्वर बजला- “मास्सैव, जँ दोसराक मुहेँ सुनने रहितौं तँ कनी-मनी झुठोक शंका होइत मुदा बेचारी अपने मुहेँ जे बजली सएह कहै छी।”

सिंहेश्वरक विचारमे सह दैत देवकान्त बाबू बजला-

“से कि कोनो अबिसवास अहाँ बातपर अछि जे एते भूमिका बन्है छी। जे मोन अछि से बाजू।”

सिंहेश्वर बजला-

“बी.ए. पास ओ महिला छेली। नाम छेलैन साध्वी। नीक परिवारक छेली। ओना, छेली नैहरेमे मुदा दुर्घटनामे पतिक मृत्यु सुनि माए-बापक घर छोड़ि बताहि जकाँ असगरे सासुर आबि गेली। एक तँ ओहिना सासुरक परिवार शोकाकुल रहैन तइसँ साध्वीपर आरो ने कियो कान-बात देलकैन। देबो केना करितैन, जखन परिवारक बेटे ने रहल तखन पुतोहु केतए-सँ रहत।”

सिंहेश्वर मुँहक बात सुनि देवकान्त बाबूक मन समाजक ओइठाम पहुँच गेलैन, जैठाम आजुक वैज्ञानिक युगमे विधवा अखनो जीवित अछि। मुदा अपन विचारकेँ मनेमे रखि देवकान्त बाबू बजला-

“बाँकी दुनू गोरेकेँ की भेल छेलैन?”

सिंहेश्वर बजला-

“दोसर गोरे जे छेली हुनका पाँचटा बेटा-बेटी छेलैन। पाँचो पढ़ै छेलैन। हुनकर पति सेहो कोयले खानमे नोकरी करै छेलखिन। खानमे जे दुरघटना भेल तइमे ओहो डुबि कऽ मरि गेल छेलैन। बेचारी जखन बाजए लगली जे जिनका आशापर परिवार ठाढ़ छल ओ एकाएक खसि पड़ल.! परिवारकेँ खसने दुनियाँ अन्हार जहिना सभकेँ होइ छैन तहिना हुनको भऽ गेल छेलैन।”

विचारक तहकेँ तहियबैत देवकान्त बाबू बजला- “आरो की सभ

बजली?”

अपन जिनगीक बिसरल बातकेँ मोन पाड़ैत सिंहेश्वर बजला-

“मास्सैव, सभ बात तँ मनो ने अछि, मुदा एकटा बात मोन अछि से कहै छी। कानि-कानि बेचारी कहै छेली जे पाँचो धिया-पुताकेँ मात्रिक पठा देलिऐ आ अपने झरिया विदा भेलौं।”

देवकान्त बाबू बजला-

“दियाद-वाद, सर-समाजमे एकोटा पुरुख नहि भेटलैन जे अपने विदा भेली?”

ओना, बजैक क्रममे देवकान्त बाबू बाजि गेला मुदा लगले अपने मन कहलकैन जे एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे सालमे एक-आध बेर जाइत-अबैत होथि जइसँ सभ किछु बुझल-गमल होइन। मुदा बजला किछु ने। तैबीच ‘दियाद-वाद, सर-समाज’ सुनि सिंहेश्वरे बजला-

“मास्सैव, दियाद-वाद तँ राहैरक दालि सन होइए जे जेत्ते गलि कऽ सीझए तेते स्वादिष्ट.! सभ कालमे खनदान आ वंशक सभ नाम लेत मुदा सदिकाल तेना एक-दोसरपर बघुआएल रहत जेना बाघ-बिलाइपर बघुआ झपट मारि पकैड़ लइए आ खा जाइए।”

सिंहेश्वरक हृदयक मार्मिक विचार सुनि देवकान्त बाबू भीतरे-भीतर मर्माहत भेला जे जे समाज सदिकाल वैदिक पद्धतिक चर्च अपन नियमित क्रियाक करैए वएह समाज अवैदिक केना बनि जाइए। आइ महिलाकेँ समाज कोन आँखिये देखि रहल अछि। की ई नजैरिक दोख नहि जे समाजक अधिकांश लोक आनक बहु-बेटीकेँ कामी-वेश्या किए बुझैए। आ जँ से बुझैए तँ अपन बहु-बेटीकेँ आन की बुझत? आ जँ तेहने समाज बनि गेल अछि तखन समाज केते दिन जीवित अवस्थामे रहि सकैए। मुदा बजला किछु ने।

❑ कुण्ठा, चारिम पड़ाव- 10 अक्टूबर 2021

जीवन-मृत्युक बीच अँटकल रविशंकरबाबूकेँ ओ दिन मोन पड़लैन जइ दिन सुनयनाक पिता दान स्वरूप सुनयनाकेँ दैत कहने रहैन जे ‘एकटा गोबरकढ़नी सुनयना बेटी दऽ रहल छी। अपने तँ गरीब छी तँए दोसर किछु माने अर्थक सम्पन्नता तँ अछि नहि जे देब।’

जहिना-जहिना समयक गति बढ़ल तहिना-तहिना रविशंकरबाबूक रोग सेहो बढ़ए लगलैन। रोगो तँ रोग छी, अनेको रंग ओकर अछिए। केतौ शरीरक रोग तँ केतौ मनक रोग जहिना होइए तहिना भाव-कुभावक सेहो होइए, मुदा से अखन नहि। अखन बस एतबे जे तीन मास अपन आधिकारिक छुट्टी काटि रविशंकरबाबूक ई साल बिनु वेतनक बितलैन। साल बितैत-बितैत रविशंकर-बाबूक मन हीया हारिकऽ कबूल लेलकैन जे आब उठिकऽ ठाढ़ नहि भेल हएत।

‘उठिकऽ ठाढ़ नहि हएब’ मनमे अबिते रविशंकरबाबूक विचार विचलित हुअ लगलैन। एकएक रविशंकरबाबूक जीवन जे निश्चल गति पकैड़ नेने छेलैन तइमे दरारि पड़ए लगलैन। दरारियो तँ दरारि छी जे पैरमे फटलासँ बेमाए रूपमे दर्द दइए आ जीवनमे दरारि पड़ने ओइसँ उबड़ब कठिन होइते अछि। देखिते छी जे कोसिकन्हाक सुखल पाँकक दारारि ओहन होइते अछि जइमे रौतुका चोरो फँसिकऽ पकड़ाइए आ हाथी सन जानवर सेहो दरारिमे फँसै दुआरे अपन रास्ता काटि आगू बढ़ि जाइए। खाएर जे बढ़ैए से हाथीक वृत्ति भेल। रविशंकरबाबूक अप्पन जीवन वृत्ति छैन।

एकाएक रविशंकरबाबूक पहिल नजैर पत्नीपर पड़लैन आ तेकर पछाइत बेटा-पुतोहुपर सेहो पड़लैन। पत्नीपर नजैर पड़िते मनमे उठलैन, बाँहिक चूड़ी आ मांगक मंगटीका तँ ताबते धरि ने हुनका शोभै छैन जाबत धरि अप्पन साँस चलैए। जखने साँसक अन्त हएत तखने ने हुनको

जीवनक शोभा खसि पड़तैन.! एकाएक पत्नीक रागसँ रविशंकरबाबूक मन विपरीत दिशामे विराग दिस बढ़लैन। मोन पड़लैन राजा भरथरीकेँ केना पिंगलासँ वैराग जगलैन। कुमारि वैवाहिक रानी सन लोक जखन बाँझ-बहिल पटरानी जकाँ बेवहार केलकैन तखन अपने तँ साधारण मनुक्ख छी, अनेरे ने पत्नीक पाछू मन हीन-हीना रहल अछि.!

'हीन' लग पहुँचते रविशंकरबाबूक मन आगू बढ़ि बेटा-पुतोहुपर पड़लैन। अखन तक जेहेन सम्बन्ध माने जे दूरी आकि लगीची, बेटासँ रहल जँ तेहेन दूरी पत्नीसँ बना ली तँ जीवनमे ओहन ठेँस नहियेँ लागत जेकर शंका मनमे अछि। लगले रविशंकरबाबूक मनमे एकटा नव विचार जगलैन। अपने तँ बिछान पकैड़ लेलौं, मन मानि रहल अछि जे आब बिछानसँ उठि ठाढ़ नहि हएब। एहेन स्थितिमे अप्पन जीवन केना चलत? जाधैर जीबै छी ताधैर भूख-पियास लगबे करत। जीवनक अन्तो-अन्त धरि लोक जीबैक आशा करबे करैए, तइले सेवा के करत? एकटा गोटियो (दवाइ) आकि एक घोंट पानियोँ आनिकऽ के देत? तहूमे बेटा सन बेटा रहैत तँ एकटा बातो। जेकरा अपना लूरि-बुधिसँ अपन जीवनक खगता पुरबैक शक्ति नइ छै ओ तँ अपनोकेँ आन बुझबे करत। जखने आन मानि देखत, तखने आने जकाँ बेवहारो करबे करत ने। ओना, आनो-आनमे नीक-बेजाए दुनू होइए। गुण-सोभाव रहने आनो अप्पन होइए आ अधला सोभावक गुण रहने अपनो बीरान होइए। एकर माने ई नहि जे आनमे नीक गुण होइत अछि आ अपनामे होइते ने अछि।

गुण-अवगुण तँ भाव जगतक विशेष सम्पैत छी जे हर मनुक्खमे अछिए। जँ अपनामे, माने जेकरा अप्पन बुझै छी, माने वंशगत परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक बीचक, जँ हुनकामे शील-गुण-सोभाव रहलैन तँ ओ ओहिना प्राप्त होइए जहिना सोनामे सुगन्ध भेने होइए आ जँ से नहि रहि शील-गुणमे अवगुण रहलैन तँ सोभावो ओहने अवगुणसँ भरि जाइते अछि। एकर हजारो-लाखो उदाहरण पिता-पुत्रक संग आनो-आनोक बेवहार, सबहक सोझमे अछिए.! एकाएक रविशंकरक विचार ऐठाम आबि अँटैक गेलैन। अँटैकते अपना दिस देखलैन तँ एते मनमे जगबे केलैन

जे जिनगीक अन्त धरि, जाबे जीबै छी, अप्पन पूर्ण वेतन जँ नहियोँ भेटत, तैयो आधा तँ भेटबे करत। जखने अर्थक निश्चित उपार्जन रहत तखने अर्थक जे संकट अछि ओ मेटाएल रहबे करत। ओना, आजुक परिवेशमे जे कौलेजक शिक्षककेँ वेतन अछि ओ ऐ दृष्टिए सम्पन्न अछिए मुदा शरीरक रोगोक तँ ठेकान अछि नहि, जे केहेन रोगसँ ग्रसित भेल छी आ तइमे केतेक अर्थक खगता अछि। अर्थपर सँ विचार उचैट रविशंकरबाबूक नजैर सुनयनापर पड़लैन।

सुनयनापर नजैर जाइते रविशंकरबाबूक मनमे जेना विपरीत मौसमक सुशीलपनक एहसास भेलैन। विपरीत मौसमक माने भेल जे जखन प्रखर रौद हुअए कि उमस्स, तखन हवा चललासँ, से चाहे पुरबा हुअ कि पछबा हवा, ओना दुनू हवामे सेहो अन्तर अछि, से अखन नहि, अखन एतबे जे सिहकीबला हवा होउ आकि तेज गतिक गतिशील हवा, ओ अपन शीतलपनसँ गरमीक संग उम्मसकेँ सेहो टारिकऽ अपन गुण पसारैत ओहन विपरीत मौसमक निर्माण करिते अछि जइसँ सभकेँ आनन्दक अनुभूति होइ छै। सुशीलपनक एहसास होइते रविशंकरबाबूक नव दृष्टिपात भेलैन। नव दृष्टिपात ई भेलैन जे जँ एकटा बिगड़ल समांग वा आने आदमी किए ने हुअए, मुदा ओहो जँ साथी बनि संग दिअए तँ जीवनमे एते आशा बनियेँ जाइए जे मृत्युक मुँह तक संगक साथी भेट गेल। मृत्यु तँ सहजे मृत्यु छीहे, ओकरा रोकैक कोनो उपाय कोन, ओ तँ जीवधारीक लेल अनिवार्य प्रक्रिया छी। मृत्यु एतेक कष्टकर अछिए जे लोक बरदास्त नहि कऽ सकैए आ अन्तो-अन्त मुँहमे समा जाइते अछि।

जीवन-मृत्युक बीच अँटकल रविशंकरबाबूकेँ ओ दिन मोन पड़लैन जइ दिन सुनयनाक पिता दान स्वरूप सुनयनाकेँ दैत कहने रहैन जे 'एकटा गोबरकढ़नी सुनयना बेटी दऽ रहल छी। अपने तँ गरीब छी तँए दोसर किछु माने अर्थक सम्पन्नता तँ अछि नहि जे देब।'

रविशंकरबाबू सुनयनाकेँ शोर पाड़ैत बजला- "बेटी सुनयना, केतए छी?"

ऐठाम एकटा बात आरो अछि। ओ अछि अप्पन बेटी आ आनक बेटीक बीच शब्दोच्चारण। शब्दोच्चारण ई जे जैठाम लोक अप्पन बेटीकेँ 'गइ', 'गे' कहि कऽ सम्बोधित करै छैथ वा शोर पाड़ै छैथ, तैठाम दोसरक बेटीकेँ 'हौ, हइ' कहि कऽ सम्बोधित करिते छैथ। खाएर जे से।

पिता–ससुर–क आवाज सुनिते सुनयना लफड़ल आबि रविशंकरबाबूकेँ पुछलकैन- "की कहै छैथ, बाबूजी?"

'बाबूजी' शब्द सुनि रविशंकरबाबूक मन प्रेमसँ पसीज गेलैन, बजला-

"बेटी, एकरा गलत अर्थमे नइ लेब जे दुनू परानीक बीच बीह फारि अप्पन बीह बनबए चाहि रहला अछि।"

रविशंकरबाबूक विचार सुनिते सुनयनाकेँ हीयमे जेना गड़ि गेलैन तहिना प्रतिउत्तर दैत बजली-

"बाबूजी, रोगक कष्टक दुआरे हिनका मनमे भार पड़ि गेल छैन तँए एना बजै छैथ। ई एक्कोरत्ती चिन्ता जुनि करौथ। जहियासँ ऐ घर एलौं तहियासँ की देखि रहल छैथ?"

पुतोहुक भाव-विचार देखि-सुनि रविशंकरबाबूक मनमे जीवनक आश बिसवासक संग जगलैन तँए आशान्वित होइत बजला-

"बेटी, परिवारसभमे मनुक्खक जे स्थिति अछि ओ तँ देखि-देखि जानिये रहल छी। तँए, विचारक क्रममे अहाँकेँ कहने छेलौं।"

सुनयना बजली-

"हँ, से तँ देखियो रहल छी आ देखि-देखि अनुभवो कइये रहल छी।"

पचपन-साठि बर्खक अप्पन जीवनानुभवक अनुकूल रविशंकरबाबू पुन: बजला-

"पारिवारिक सम्बन्ध वंशगत सेहो होइए आ निर्मित सेहो होइते अछि। मुदा वंशगत हुअए वा निर्मित, मूल छी शील-सोभाव। सोभावक

अनुकूल लोक अपनाकेँ जीवनमे ढालैए। ओना, सोभावोक एक्के स्थिति नहि अछि। नीको अछि आ अधलो अछि। ओना, नीकोमे नीक आ अधलोमे अधला सेहो अछिए। मुदा मनुक्ख तँ मनुक्ख छी, जेकरामे ओहन संकल्प शक्ति होइ छै जे अधलो-सँ-अधलाकेँ नीक बना सकैए।”

❑ सुनयना बेटी, अन्तिम पड़ाव- 26 फरवरी 2023

“गुलटेन, एते भूमिका बन्हैक कोन खगता छह। समय छल जखन पोथीसँ भूमिका भारी होइ छल। आब तँ ओहन समय आबि गेल अछि, जे अखन अछि ओ साँझमे रहत कि बदैल जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। तँए, तोहर अप्पन जे तामसक पन्ना (पोना) छह, तैठामसँ विचार उठाबह।”

रतनपुर ओहन गाम अछि जे अपन कोखिसँ महान-महान योद्धा विभूति पैदा केलक अछि। ओहने योद्धा छैथ रतनपुर-गामक कुसुमलाल बाबा। ओना, अपनो बच्चा सभ अपने ‘बाबा’ कहैए, मुदा उमेर भलेँ एकरंगाहे दुनू गोरेक किए ने हुअए, मुदा अपनो कहियासँ हुनका माने कुसुमलालकेँ ‘बाबा’ कहै छिऐन से ठेकान नइ अछि। भाय, मिथिला छी किने, एक्के भैयारीमे कियो ‘बौआ’ कहबैए आ कियो ‘दादा’, तइले मनमे दुखो नइ हेबा चाही। भाँइये मे ने कियो ‘दादा’ भेलिऐ। जखन ‘दादा’ भेलिऐ तखन ‘बाबा’ होइमे केते देरी लागत। अही क्रममे कुसुमलाल बाबा ‘बाबा’ बनि गेल छैथ, तँए अपनो सेहो बाबे कहै छिऐन। एकर माने ई नइ बुझब जे लम्पट सभ जहिना एकरंगा पहीर दसो बर्खक छौड़ा ‘बाबा’ कहबैए।

समयक रूखि देखि, माने परिवारक परेशानीसँ मन औल-बौल करए लगल, कखनो हुअए जे एहेन जीवनसँ मरने भला। कखनो हुअए जे देहमे आगि लगा ली। मुदा एते तँ मन मानियेँ रहल अछि जे जँ कुसुमलाल बाबाकेँ अपन दुखनामा सुनेबैन तँ ओ कोनो-ने-कोनो रस्ता देखाइये देता। मन मानि गेल। कुसुमलाल बाबा ऐठाम विदा भेलौं।

गामक ओहन परिवार कुसुमलाल बाबाक छैन जइ परिवारमे अट्ठाइस गोरेक अँटावेश अछि। परिवारमे सभ उमेरक लोक, बच्चासँ सत्तैर

बर्खक उम्र तकक। चारिम पीढ़ीक बीच कुसुमलाल बाबा छैथ।

परिवारक बीच बेकती-बेकतीक सम्बन्ध केना बनल रहत, जैठाम भैयारीक विभाजनसँ परिवार खण्डित होइत रहल अछि। कोनो तीन भाँइ अपन-अपन गुण-शील उपार्जन केने छैथ, कोनोमे किछु गुण छैन आ कोनोमे किछु। मुदा जखन परिवार ऐगला पीढ़ीमे प्रवेश करैए तखन ओकर फल केहेन भेटैए, सभक सोझेमे अछि।

घरपर सँ खिसिया कऽ विदा भेल रही, जेना-जेना आगू बढ़ैत जाइ, तेना-तेना विचारो नचैत जाए, बुझल बात अछिए जे जखन कोनो काजक प्रति अहाँकेँ आकर्षण होइए तखने ने ओ वस्तु अहूँकेँ आकर्षित करैए। मनमे उठि गेल जे जे भेल आकि होइए, ओ परिवारक मुद्दा भेल। अनेरे कुसुमलाल बाबाक कानमे किए देबैन। फेर लगले अपने हुअए जे जँ देखिते पुछि दैथ जे गुलटेन केमहर एलह? तखन तँ बजाइये जाएत किने। किए तँ मनक तामस सभ विचारकेँ तर केने अछि आ अपने ऊपर चढ़ि बैसल अछि।

अपने फेर मनमे उठल जे अप्पन परिवारक कोनो अनसोहाँत बात बाजब सेहो बर्जित अछिए। मुदा तामसे तेते उठल रहए जे अखनो हुअए जे नइ आगिमे झड़की तँ पानियेँमे किए ने डुबिकऽ मरि जाइ। अनेरे कौआ-सभक जेरमे पड़ल छी। किए ने अयोध्ये आकि काशीएमे जा कऽ रही। अनेरे कोन माया-जालमे पड़ल छी.!

मन वौआइते छल कि कुसुमलाल बाबा ऐठाम पहुँच गेलौं। तामसे मन जरले रहए, बजा गेल-

“बाबा, आब हम ऐ गाममे नइ रहब। सएह अहाँसँ पुछए एलौं हेन जे काशी जाएब नीक हएत आकि अयोध्या?”

कुसुमलाल बाबा बकर-बकर मुँह दिस देखैथ मुदा बाजैथ किछु नहि। ओना, ओ अखन तकक जीवन देखि चिन्है जरूर छैथ, मुदा जइ स्थितिमे पड़ि गेल छी, तइक जानकारी नहियेँ छैन। तँए, अपना दिस कुसुमलाल बाबाकेँ टुकुर-टुकुर तकैत देखि मुहसँ खसि पड़ल- “बाबा,

सभकेँ बेइज्जत करए, अन्न-पानि-लकड़ी.!”

कुसुमलाल बाबा बजला- “गुलटेन, बजलह तँ जीवनक मार्मिक बात मुदा कनी मन असथिर करि कऽ बाजह।”

कुसुमलाल बाबाक बात सुनि मन थीर भेल। जहिना तामस जखन उठए लगए तँ एक गिलास पानि पीब नेने तामस कमि जाइए, तहिना आकि की, कुसुमलाल बाबा बजला- “गुलटेन, ओना अखन हमर शरीरक श्रम करैक समय अछि, तँए बैसारी काज, माने मनक काज करैक समय छी नहि, मुदा तोहर परेशानी देखि, सभ काजकेँ अपना जगहपर रोकै छिअ।”

जहिना करोनाक उफानकालमे गाड़ी-सवारी जहाँ-तहाँ रूकि गेल, तहिना अपन मनक सभ विचार जे जेतए छल से तेतए रूकि गेल। ओना, मनक लहैरिक विषविषी, बिच्छूक डंक जकाँ छेलए-हे। कुसुमलाल बाबाक निर्णय, माने अपना मनमे छल जे कोनो नव रस्ताक विचार देता, मुदा से भेल नहि। उनटे पुछलैन- “गुलटेन, असथिरसँ सवाल उठाबह।”

बजलौं- “बाबा, ओना अहाँ एकउमेरिये जकाँ छी, मुदा ओहन ठकहरबा बाबा तँ नहियेँ छी जे दस-बारह सालक छौड़ा एकरंगा पहीर सात जन्मक खिस्सा सुना ठकैए।”

बिच्चेमे कुसुमलाल बाबा बजला- “गुलटेन, एते भूमिका बन्हैक कोन खगता छह। समय छल जखन पोथीसँ भूमिका भारी होइ छल। आब तँ ओहन समय आबि गेल अछि, जे अखन अछि ओ साँझमे रहत कि बदैल जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। तँए, तोहर अप्पन जे तामसक पन्ना (पोना) छह, तैठामसँ विचार उठाबह।”

बजलौं- “बाबा, एकेठाम देखै छी जे अहाँक जेहेन समटल परिवार अछि आ अपन जे उड़ियाएल परिवार अछि, तइमे अकास-पतालक अन्तर तँ अछिए किने।”

जे बात बाबाक मनमे बुझैक छेलैन, से अपने बजैक विचारे ने छल, तँए विचारकेँ घुरिया-फिरिया बजलौं।

कुसुमललाल बाबा बजला- “गुलटेन, कौए ‘कागभुसुण्डी’ होइए आ कागभुसुण्डियो ‘कौए’ होइए। बारह बर्खकेँ तमाशा गढ़ि बनौआ बाबा ज्ञानसँ जेते आगू बढ़ि जाए, मुदा जीवनक बेवहारिक पक्षकेँ कहियो ने बुझि पौत।”

घरमागती पुछी तँ कुसुमलाल बाबाक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। मुदा समस्याक समाधान केने बिना तँ परिवार समस्याग्रस्त रहबे करत। बजलौं-

“बाबा, परिवारक लोकक जे किरदानी बनि गेल अछि, तइसँ मन कानि रहल अछि, से कोनो उपाय बता दिअ।”

अपनो परिवारकेँ हियासि आ हमरो परिवारकेँ हियासि कुसुमलाल बाबा पुछलैन- “तोहर परिवार नमहर छह आकि हमर?”

सत्य बात किए ने बाजब, बजलौं-

“अहाँक चौथाइयोसँ कम अपन परिवार अछि।”

कुसुमलाल बाबा बजला- “एक-एक बेकतीक जीवन अछि, जीवनमे किछु-ने-किछु नवीन ओहन समस्या अबिते अछि जे नवपनकेँ गढ़ैक शक्ति रखैए, तँए एक-एक बेकतीसँ सम्बन्ध स्थापित करैत चलए पड़तह।”

❑ परिवारक योग, 19 सितम्बर 2022

सामाजिक परिवेशमे सम्बन्धक भीतर किछु विद्रूपन एबे कएल, जइसँ सम्बन्धमे दूरी बनब शुरू भेल। मुदा दूरी बनलाक पछातियो विचारमे कमी नहि आएल अछि। हँ, ईहो नकारल नहियेँ जा सकैए जे थोड़-बहुत मनान्तर काजकेँ बाधित नहि केलक अछि। जइसँ दुनू संगीकेँ किछु-ने-किछु घाटा भेबे केलैन अछि।

गाम-घरमे जहिना कोनो जोगाड़ी बाल-बोध बच्चा अपन मनकेँ एकठाम करैत माने एकाग्र करैत बाध-बोनसँ ओहन नब जनमित वा नब कलशित गाछक पात देखि नब बुझि अपन बाग-बगियामे रोपि सजबैए तहिना कुलानन्द भाय अपन बाग-बगियामे नब-नब चीज सजबैत जीवानन्द भाइकेँ मनक बगियामे रोपलैन। अखन धरिक जे साहित्यिक प्रवाह मैथिलीक अछि ओ समाजक प्रवाहसँ थोड़-थाड़ हटलो अछि आ थोड़-थार सटलो अछिए। अही धाराक प्रवाहमे कुलानन्द भाइक सम्बन्ध जीबानन्द भायसँ भेलैन। ओना, उमेरक हिसाबसँ दुनूमे पचीस बर्खक अन्तर छैन। अखन तकक जीवनमे, माने सम्बन्ध बनैसँ पहिने धरिक जे जीवन दुनू गोरेक अपन-अपन छेलैन तइमे, बुनियादी अन्तर छैन। ओना, जीवन माने बेवहारिक जीवनक संग वैचारिक जीवन सेहो होइए मुदा तइमे बाधा बीचमे घेरतो अछि आ नहियोँ घेरैए। ओ निर्भर करैए जीवनक गति-विधिपर।

जीवनक दू अवस्था बीचक दू जीवनक सम्बन्ध अछि। एक जीवन ओहन अछि जे जीवनक नीचमुँह ढालपर अछि आ दोसर जीवनक ऊपर मुँह चढ़ाइपर। समय अपना गतिये चलबे करत तँए फौतियो एबे करत आ भदबारि सेहो एबे करत। अखन धरिक जीवन, जीवानन्द भाइक जे पचपन-साइठक बीचक छेलैन, ओ माटिपर सँ माने सहीट जीवनपर सँ उठल जीवन छेलैन, तँए पहाड़ जकाँ धरतीसँ जुड़ल छेलैन जइमे दुर्घटना

वा खसै-पड़ैक डर कम छेलैन। तँए कहब जे ओतबे ऊपरमे जँ हवाइ-जहाजपर रहब तखन तँ खसै-पड़ैक सम्भावना नै रहैए से नहि, ओइ अपेक्षा बेसी रहिते अछि।

समय अपना गतिये चलिये रहल अछि। परिवेशमे मोड़ एने किछु कारोबार, खेती-गिरहस्तीक संग आनो-आन, मारियो खेलक आ किछु बढ़बो तँ करबे कएल अछि। जहिना कबीर बाबा कहने छैथ जे 'दो पाटन के बीच में, बाँकी बचे ने कोई' तहिना परिवेश बनि रहल अछि। एक दिस हवाइ जहाजपर बिआहक मड़बा सजैए, भोज-भात होइए तँ दोसर दिस साबे जौड़क बान्हल खरही-बत्तीक बनौल मड़बापर सेहो बिआह रचल जाइते अछि। खेतमे काज करैबला वा करबैलाक ऐगला पीढ़ी, अपना ऐठाम मोटा-मोटी बीस बर्खमे पीढ़ी बदलैए, खेतसँ हटि कारखाना पहुँच रहल अछि, जइसँ जीवनमे मोड़ आबि ऐगला पीढ़ी पैछला पीढ़ीक वैचारिक पद्धतिकेँ मोड़ि रहल अछि। सोभाविक अछि, जीवनमे मोड़ एने एना हेबे करत, तेकर अनेको कारण अछि, आर्थिक आमदनीक बढ़ोत्तरीक संग ओहन नब जगह जे जीवनक मूल आवश्यकताकेँ पूर्ति करैबला बनि गेल अछि, तैठाम ग्रामीण जीवन आ शहरी जीवन पद्धतिक मोड़ वर्तमान जीवनकेँ मोड़बे करत।

अखन धरिक अपना ऐठामक जे जीवन पद्धति चलैत आबि रहल अछि, तइमे सामाजिक रूपक संग वैचारिक दुनियाँमे समरसपन अछि जइसँ समाजक धुरी गतिशील अछि। मुदा जे जीवन नब पद्धतिसँ उठिकऽ ठाढ़ हुअ चाहि रहल अछि वा भेल अछि, तैठाम तँ एहेन प्रश्न अछिए किने जे जीवन पद्धति मशीनक गतिये नहि चलि सकैए। सामाजिक जीवन जहिना समाजक संग जुड़ै-बनैमे समय लगबैए तहिना ने ओकरा छोड़बोमे समय लगबे करत। राता-राती मशीन दस गुणा आगू बढ़ि सकैए, मुदा मनुक्खक जीवनमे से थोड़े सम्भव अछि.! खाएर जेतए जे अछि से अछि तइसँ जीवानन्द भाय आ कुलानन्द भायकेँ तइसँ कोन मतलब छैन, कोन मतलब छैन जे मिथिलाक पंचदेवोपासनाक बीचक रग्गड़मे अनेरे पड़ल

रहता। जीवन जीवन छी जे सभ अपन कल्याण चाहैए। जीवन जीबैक ढंग जहिना धर्म छी तहिना धर्मक ढंग सेहो तँ जीवन छीहे।

संगी भेटने मनमे होइते अछि जे दुनियाँमे जीबैक एकटा थम्ह, ओना, केरा-गाछकेँ थम्ह कहल जाइए मुदा थम्हक दोसर माने ईहो अछिए जे कोनो वस्तु वा विचारकेँ थाम्हब, भेटल। जखने एकसँ आगू बढ़ि, माने अपनासँ आगू बढ़ि दोसरक थम्ह जीवनमे भेटैए तखने विचारक संग काजमे सेहो थम्हपन अबिते अछि। सभ जनिते छी जे मनुक्खकेँ अपन लेख-जोख अपन हाथ-पैरक संग काज दइते अछि।

जीवानन्द भाय आ कुलानन्द भाइक बीचक सम्बन्धमे, माने बेकतीगत वैचारिक जीवनक सम्बन्धमे, तेते प्रगाढ़ता आबि गेलैन जे जीवनक सम्बन्ध चतुर्मुर्खी पुष्पित-फलित भऽ गेलैन। एक संग घन्टो-घन्टो बैस दुनू बेकती अपन जीवन-मरणक विचार-विमर्शसँ लऽ कऽ गाम-समाजक बीचक जीवन-मरणक संग सुख-दुखकेँ निवाड़ैक रास्ताक खोज सेहो करए लगला। पारिवारिक जीवनक संग, पारिवारिक गति-विधिमे सेहो एक-दोसरक मददगार भेला। जखने दुनियाँमे संगी भेटैए तखने संगपनक प्रगाढ़ता बढ़िते अछि।

ओना, दू रंगक बेवहारक बीच दुनूक जीवनो रहलैन आ दू रास्तासँ ठाढ़ सेहो छैथ। एकक जीवन माने कुलानन्द भाइक जीवन ओहन रहलैन माने ओइ परिवेशक परिवार रहलैन जइमे सभ तरहक सुविधा रहैत अछि। माने ई जे पढ़ल-लिखल माता-पिताक संग विद्वज्जनक परिवार-समाज सेहो रहलैन, दोसर दिस जीवानन्द भाइक जीवन ओहन रहलैन जे स्वनिर्मित होइत अछि। तहू स्वनिर्मितमे सामाजिकता सेहो प्रमुख रहलैन। सामाजिकता ई जे समाजकेँ वास्तविक जीवनधारामे आनि विकासोन्मुखी केना बनाएल जाए। यएह धारा बेकतीगत जीवनमे सेहो चलैए जे समाजसँ जुड़ल सेहो चलिते अछि, तहिना सामाजिक जीवन सेहो होइए जे समाजक धाराकेँ बेकतीगत धार धारामे प्रवाहित करैत गतिशील सेहो बनैबते अछि।

खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहउ। तइसँ जीवानन्दे भाय आकि कुलानन्दे भायकेँ कोन सरोकार छैन। सरोकार छैन अपन दुनू संगीक संग संगपन निमाहबसँ। बेवहारिक रूपमे जहिना अपनाकेँ दुनू गोरे इमानदारीक बीच सम्बन्ध ठाढ़ केलैन तइमे अखन तक दुनूक बीच कोनो मन-मनान्तर आकि इमानक संग हत्या नइ भेल अछि।

सामाजिक परिवेशमे सम्बन्धक भीतर किछु विद्रूपन एबे कएल, जइसँ सम्बन्धमे दूरी बनब शुरू भेल। मुदा दूरी बनलाक पछातियो विचारमे कमी नहि आएल अछि। हँ, ईहो नकारल नहियेँ जा सकैए जे थोड़-बहुत मनान्तर काजकेँ बाधित नहि केलक अछि। जइसँ दुनू संगीकेँ किछु-ने-किछु घाटा भेबे केलैन अछि।

सामाजिक परिवेश एते तँ दुनू गोरेकेँ, माने जीवानन्दो भाय आ कुलानन्दो भायकेँ, वैचारिक रूपमे प्रबलता आनिये देलकैन जे मनुक्ख असगरो धरतीपर हँसी-खुशीसँ, माने जइ दुनियाँमे बसै छी तहू दुनियाँमे जीवन बसर कइये सकैए। जखने मनुक्ख अपन जीवनकेँ थाहि लइए, तखने थाहे-थाह थाहैत, केहनो-केहनो धार पार कइये लइए। अनाड़ी-धुनारीक जीवनक संग आ जग-जगाएल जीवनक संग सम्बन्धमे अन्तर अछिए, एकमे जहिना खीचपन रहने टुटैक बेसी सम्भावना रहैए, तहिना विचारक प्रबलता रहने दोसरमे से नइ होइए।

अपन विचारक अनुकूल भविष्यमे जखन बाधा अबैए तखन विचारकर्ताक मनमे पुन: विचारैक खगता आबिये जाइए।

❑ विचारक प्रबलता, 01 अगस्त 2022

जहिना कोनो बच्चाकेँ विद्यालयमे सफलता भेटला पछाइत हृदयक तहकाएल मन खुशीसँ उधिआ-उधिआ उफनैत रहैए, तहिना रामरतनकेँ अपन सफलतापर मन खुशीसँ उफैनते रहै, चौअनिया मुस्की दैत बाजल- “काका, ई कोनो ग्लानिक बात नइ भेल। तोहीं कहह, अपने गाममे जे कलक्टर साहैब छेलैथ, हुनकर घरवालीकेँ अपना बुते नामो-गाम ने लिखल होनि, अपना बुते कलक्टर साहैबकेँ सिखौलो नहियेँ भेलैन, काजक धुमसाहीमे वौआएल-वौराएल रहला से बड़बढ़ियाँ, आ...।”

रस्ताकातक टंकीपर भोरे-भोरे सुनितिया दादी आ सुरुचिया-दादीक बीच कहा-कही शुरू भेल। सुनितिया दादी बजली- “मनुक्ख माल-जाल नइ ने छी जे डोरीमे बान्हिकऽ राखल जाएत।”

सुरुचिया दादी उत्तर दैत बजली- “सोन आकि साबेक जौरमे मनुक्खकेँ बान्हिकऽ तँ नहियेँ राखल जाएत, मुदा माए-बापकेँ एते तँ चाहिऐन जे अप्पन बेटा-बेटीकेँ विचारसँ सम्हारिकऽ, माने बान्हिकऽ राखैथ।”

सुनितिया दादीकेँ गर भेटलैन, झटैक बजली- “अहाँ कि गाम घरमे नइ रहै छी, नइ देखै छिऐ जे कोन बेटा-बेटी माए-बापक बोलकहलमे अछि।”

सुनितिया दादीक विचार सुरुचिया दादीक मनमे जनु गड़लैन तँए ओ अपन मुँह बन्ने रखलैन। मुदा तही बीच हुनकर अपन पुतोहुए, माने सुनितिया दादीक पुतोहु- नरुआरवाली, टंकीपर पहुँच कऽ एक्केबेर झपटैत बजली- “हिनके पुछिकऽ मरदे आकि मौगीए पनचैती करतैन.!”

ओना, नरुआरवालीकेँ लड़ुगामवाली काकी कानमे फुसफुसा कऽ

किछु कहि देने छेलैन, तही उमकीपर नरुआरवाली टंकीपर पहुँचल छेली।

संजोग एहेन भेल जे सुरुचिया दादीक पुतोहु सेहो आँगनसँ निकलली कि दुनू सासु-पुतोहु सुनितिया दादीकेँ देखलैन। बहुमत-अल्पमतक दुनियाँ छीहे, शंका भेलैन। बोलीक पारख तँ नहि कऽ सकली मुदा आवाजमे किछु सुनि लेने छेली जइसँ मूड बनि गेल छेलैन। नल दिस बढ़ैत बजली-

“टंकीपर आकि पोखरिक घाटपर पनचैती केने गाममे कि कोनो उनटन भऽ जाएत। सभ कालमे कहबै जे पुरुखे जकाँ स्त्रीगणोकेँ बराबरीक हक-हिस्सा भेटौ, मुदा अपनो दिस ने ताकिकऽ बजबै जे परे-पनचैती आकि मारियो-पीटमे बराबरी करै छी? आकि तइ कालमे कहबै हम मौगी छी। तँए पहिने मौगपन मनसँ मेटा लिअ, तखन पुरुखपनक आशा करैत सभ किछु लेब।”

एक्के-दुइये टोलक स्त्रीगण अबैत गेली आ झगड़ाक रूप लत्ती जकाँ पसरैत गेल।

चारि बजे भोरमे रूपनीक पिता दुनियाँलाल आ टेम्पुबला रामरतनक परिवारमे ललका-ललकी शुरू भेल। दुनियाँलाल ललैक-ललैक कऽ रामरतनकेँ कहैत- “तूँ दुनू बापूत चोर छेँ, हमरा बेटीकेँ रातिमे चोराकऽ लऽ गेलेँ।”

दसे कट्ठाक दूरीमे सिंहेसरो आ रामरतनोक घर अछि। दुनू दू जातिक छी, एकठाम परिवार रहने सभ-तरहक सम्बन्ध, माने सामाजिक, दुनू परिवारक बीच अछिए। सोफोक्लीजक ओडीपस नाटक जकाँ नइ बुझब जे अधिक प्रेम भेने विवाहक रूप लइए आ अधिक दुश्मनी भेने खून क रूप लइए। ऐठाम गप अछि, टेम्पूबला रामरतनक परिवार कहियौ कि कृषक सिंहेसरक किसान परिवारक। तँए, ऐठाम एहेन धोखा नइ हुअए जे गामक बेटी जँ गाममे बिआह करत तँ लाज-धाख गामसँ मेटा जाएत। लाज-धाख गुण-अवगुणक बीच निहित अछि।

ओना, रामरतनक मनमे उठल जे केकरो बेमिएने की होइ छै,

काजसँ जीवन ठाढ़ होइए, अपन काज जखन ससरिये गेल, तखन तँ चुप्पे रहने ने लाभ। तँए रामरतन अपन मुँह बन्न केने रहल। मुदा रामरतनक दादाकेँ पोताक कमाइपर गरमी चढ़िये रहल छेलैन, तँए दुनियाँलाल जवाब दैत सोनेलालकेँ कहलकैन- "जाबे तोरा घरमे छेलह, ताबे तोहर बेटी छेलह, आब हमर पुतोहु भेल, तँए हमरा पुतोहुक विषयमे किछु बजबह से हम बरदास नइ करबह।"

परिवारक सृष्टिजनक बात सुनि दुनू बापूत- रामरतनो आ सिंहेसरो घरसँ धएल अप्पन-अप्पन लाठी आनि दुनियाँलालक आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेल।

दुनियाँलाल सकसका गेला। बोलती बन्न भऽ गेलैन। भाय, बोलतीएमे ने ओलती लगल अछि जइसँ कब-कबी शुरू होइए आ भक-भकाइत कब-कबा जाइए। विचारमे लजपन आनैत दुनियाँलाल बजला-

"रौ रमरतना, ई तोरा सन भेल जे पढ़ल-लिखल बेटीकेँ केना अपना घर लऽ गेलेँ।"

एक तँ आजुक समय एहेन भइये गेल अछि जे अस्सी-सँ-नब्बे प्रतिशत माता-पिताक एहेन धारणा बनि गेलैन अछि जे अप्पन बेटीक बिआह नोकरी करैबला बरसँ करी। मुदा कोनो धारणा धारण करैसँ पहिने ई तँ सभकेँ अधिकार अछिए जे अपन धारणाकेँ व्यक्त करए। मुदा होइए तेकर विपरित। कान खोलि आँखि ताकि देखए-सुनए पड़त जे अही धारणाक चलैत स्वनिर्मित जीवनपर कुठाराघात भऽ रहल अछि। जाबे स्वनिर्मित जीवन नइ बनत, ताबे स्वतंत्रता सपना जकाँ मात्र कल्पना बनल रहत।

जहिना कोनो बच्चाकेँ विद्यालयमे सफलता भेटला पछाइत हृदयक तहकाएल मन खुशीसँ उधिआ-उधिआ उफनैत रहैए, तहिना रामरतनकेँ अपन सफलतापर मन खुशीसँ उफैनते रहै, चौअनिया मुस्की दैत बाजल-

"काका, ई कोनो ग्लानिक बात नइ भेल। तोहीं कहह, अपने गाममे जे कलक्टर साहैब छेलैथ, हुनकर घरवालीकेँ अपना बुते नामो-गाम ने

लिखल होनि, अपना बुते कलक्टर साहैबकेँ सिखौलो नहियेँ भेलैन, काजक धुमसाहीमे वौआएल-वौराएल रहला से बड़बढ़ियाँ, आ...।”

रामरतनक तर्कसँ दुनियाँलाल अपन मुँह बन्न कऽ लेलैन।

❑ भवितव्य, 02 नवम्बर 2022

“मोती, आइसँ चालीस बरख पूर्व, जहिया अपन
दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली, तही दिनक विचार छी।
जाबे तक दुरागमन नहि भेल छल आ माए-बाबू सेहो जीबै छला
ताबे तक हुनके परिवार बुझै छेलिऐन। मुदा जखन दुरागमन भेल
आ पत्नी घर एली तखन परिवारक बीच नव परिवारक
उदय ओहिना भेल जहिना बाँस, खरही वा केराक
बीटमे नव गाछक जन्म भेने होइए।”

सुर्जग्रहण वा चन्द्रग्रहण छुटला पछाइत जहिना लोक नदी, सरोवर वा पोखैरमे नहाइले धरोहि लागि जाइ छैथ तहिना रूद्रपुर गाममे रामेश्वरमक दर्शन करैक विचार समाजक लोकमे जगलैन। जिनका अपना हाथमे बटखर्चा रहैन से तँ निचेने रहला मुदा जिनका अपना हाथ-मुट्ठीमे पाइ नहि रहैन ओ ऋण-पैंच ताकए दोसरा-तेसराक घरपर जाए-आबए लगला, जइसँ रामेश्वरम जेबाक जिज्ञासा अधिकांश लोकक मनमे जगलैन। मोतीलाल सेहो मने-मन विचार कऽ लेला जे जखन समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ रामेश्वरम जाइले तैयार भेला अछि तखन अपनो किए ने जाएब।

असकर-दुसकरमे ने कोनो नव प्रश्न उठने मनमे अधिक विचार जगैए मुदा समूहमे तँ से नहि होइए। भेड़िया-धसान लोक भइये जाइ छैथ। जहिना अपन-अपन विचारक कान्हीनुकूल लोक केतौ बाहर जेबाकाल संगी ताकए लगै छैथ तहिना मोतीलाल अपन विचारी संगी ताकैले हीरालाल ऐठाम विदा भेला। ओना, हीरालाल आ मोतीलालक उमेरमे दस सालक तरपट छैन, मुदा एकविचारी रहने एकउमेरिया भाए-भैयारी जकाँ दुनूक बीच सम्बन्ध बनियेँ गेल छैन। हीरालालक उमेर साइठ बरख टपि एकसठममे चलि रहल छैन आ मोतीलालक एकावनमक अन्तिममे जा रहल छैन।

दरबज्जापर बैसल हीरालाल सेहो गाम-समाजकेँ देखि मने-मन विचारि रहल छला जे आएल आशा चलि गेल.! चालीस बरख पूर्वे मनमे रोपाएल छल जे परिवारसँ निचेन होइते, माने परिवारक जवाबदेहीक काजसँ निचेन भेला पछाइत चारू धामक दर्शन करि कऽ शरीर तियाग करब, मुदा से मनेमे रहि गेल। मने-मन हीरालाल सोचिये रहल छला कि तइ बिच्चेमे मोतीलाल लगमे आबि टोकलकैन-

"भाय, अहींकेँ कहैले एलौं हेन जे गामक लोक उनैट कऽ रामेश्वरम जा रहल अछि, अपनो दुनू भाँइ चलू।"

मोतीलालक विचार सुनि हीरालाल मने-मन विचार करए लगला जे जखन मोतीलाल दरबज्जापर आबि कहि रहल अछि तखन की कहिऐ? जँ 'नइ जाएब' कहबै तँ पुछबे करत जे 'किए ने जाएब?' आ जँ 'हँ' कहबै तँ अनेरे पैंच-उधारक पेंचमे पड़ि जाएब.! हीरालालकेँ चुप देखि मोतीलाल दोहरा कऽ पुछलकैन-

"भाय, किछु बजलौं नहि?"

हीरालाल बजला- "मोतीलाल, मनमे अपनो विचार छल जे जखन परिवारसँ निचेन हएब तँ चारूधामक तीर्थ जरूर करब, मुदा..।"

मोतीलाल बजला- "की मुदा, भाय?"

अपन मनक दाबल विचारकेँ खोलैत हीरालाल बजला- "मोती, एक तँ ओहुना केकरो लग झूठ नहि बजै छी, तूँ तँ सहजे छोट भाए सदृश छह, तोरे केना झूठ कहबह।"

मोतीलाल पुछलकैन- "से की भाय?"

हीरालाल बजला- "आइ ने देखै छहक जे समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ रामेश्वरमक दर्शन करैक विचार केलैन अछि मुदा अपना मनमे आइसँ चालीस बरख पूर्वे रोपि नेने रही जे अखन परिवारकेँ सम्हारि असथिर करब जीवनक सभसँ महत्वपूर्ण काज अछि। जखन परिवार असथिर भऽ चैनसँ चलए लगत तखन तीर्थ-वर्त करब।"

ओना, हीरालाल अपन पेटक सभ विचार बाजि गेला मुदा मोतीलाल से बुझबे ने केलैन। बजला-

“भाय, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं?”

हीरालाल बजला-

“मोती, आइसँ चालीस बरख पूर्व, जहिया अपन दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली, तही दिनक विचार छी। जाबे तक दुरागमन नहि भेल छल आ माए-बाबू सेहो जीबै छला ताबे तक हुनके परिवार बुझै छेलिऐन। मुदा जखन दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली तखन परिवारक बीच नव परिवारक उदय ओहिना भेल जहिना बाँस, खरही वा केराक बीटमे नव गाछक जन्म भेने होइए।”

अपना जनैत हीरालाल अपन जीवनक सत्यवृत्तिकेँ मोतीलालक सोझामे रखलैन, मुदा समाजक बीच जे अखन तकक वैचारिक परिवेश रहल अछि ओ तँ यएह ने रहल अछि जे जाबे तक परिवारमे माता-पिता जीबैत रहै छैथ ताबे तक पत्नीक कोन बात जे धियो-पुतो भेला पछातियो लोक अपन परिवार नहि बुझि माते-पिताक परिवार बुझै छैथ, तहिना मोतीलाल सेहो बुझलैन। तँए परिवारक बीच नव परिवारक सृजन केना होइए तइ दिस मोतीलालक नजैर गेबे ने केलैन। बजला-

“भाय, एहेन कि अहींटाकेँ भेल अछि आकि सभकेँ होइए।”

❑ आएल आशा चलि गेल, 15 मई 2022

विचित्र स्थितिक बीच गियानचन अपना मनकेँ थीर करैक कोशिश करए लगला मुदा..। मुदा ई जे अखन तक गियानचन एतबे बुझै छला जे समाजमे बेटा वा पतिक मृत्युक पछाइत जहिना माए वा घरनीकेँ, समाजक दाइ-माइ यएह ने असीरवाद दैत कहै छैथ जे राजा-दैव अहिना होइए, तँए मनकेँ थीर करू। भलेँ असीरवादक माने–अर्थ–अपने बुझैथ वा नहि। मनकेँ थीर करब बाल-बोधक खेल नइ ने छी, ऐठाम महाभारतक प्रह्लादक बात नहि बुझब जे बालपनेमे मनकेँ थीर कऽ लेलैन। ऐठाम गियानचनक बात चलि रहल अछि।

शासनतंत्रक सूत्र-नीतिसँ जहिना जीवन उठै-खसैए ठीक तहिना गियानचनकेँ अपन जिनगी देखि मन खसए-उठए लगलैन.! मन कहलकैन दुनियाँकेँ तखने ने जानि पाएब जखन अकास-सँ-पताल आ पताल-सँ-अकास देखैक अक्ष आँखिमे औत। मुदा से कोनो पैथक आई ड्रॉपसँ थोड़े औत। ओ औत जखन जिनगीकेँ खन्तीसँ, ऐठाम कबीर बाबाक खन्ती नहि बुझब जे जगरनाथमे समुद्रक सीमापर जा कऽ खँतियौलैन, खुनि कऽ खत्ती बना खतियाएब, तखने ने खेत-पथारक खतियौन जकाँ जीवनोक खतिआन बनत। ओना, सभकेँ बुझल अछिए जे चौबीस घन्टाक भीतर दिन-राति होइए, मुदा दिनमे दिन केहेन भेल आ रातिमे राति केहेन भेल, यएह देखि पएब ने भेल दुनियाँमे अपनाकेँ देखि पएब.!

दिनमे दिन आ रातिमे राति की भेल? रातिक बीच एकटा राति ओहन अछि जे पूर्णिमाक चानसँ जगमगाइए आ दोसर राति की एहेन नहि अछि जइमे इजोरिया-इजोतक दरसो ने रहैए आ अमावाश्याक अन्हारक अन्हार छाड़ने रहैए? सेहो तँ अछिए.! मुदा दुनूमे जहिना अन्हार अछि

तहिना इजोतो नहि अछि, से केना नहि कहल जाएत। हँ, एते देखमे जरूर अबैए जे पूर्णिमाक एकटा चान अन्हारकेँ डँसने रहैए आ दोसर अमावश्याक अन्हारकेँ लाखो-करोड़ो तरेगन डँसैले परियासरत रहैए। खाएर जे रहैए ओ प्रकृतिक खेल छी, मुदा जीवनक बीजक तँ से नहि छी, ओकर तँ अपन प्रकृति होइए जे अपन प्रकृतिगत रूपमे चलैत आबि रहल अछि।

एकाएक गियानचनक मन ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जैठाम बनमानुख अपन दिन-रातिकेँ जोखै-तौलैए। एक सीमा परक दृश्य देखिते ज्ञानचनो भूत-भविसकेँ तराजूक दुनू पलड़ापर राखि वर्तमानक डण्डी पकैड़ जोखए लगला कि धक-दे एकटा बिसरल बात मोन पड़लैन। मोन पड़लैन, जहिना रामायण-महाभारत वा कबीरक बीजकक एक-एक पाँतिक एक-एक शब्दकेँ भिन्न-भिन्न रूपमे विभाजित करैत कियो अपन जीवनक पाँतीकेँ पँतियबैए, तहिना अपनो किए ने पँतियाबी।

ओना, गियानचनक अखनुक जीवन रोगाह भइये गेलैन अछि, जइसँ मनमे खिन्नता सेहो अपन जगह बना रहल छैन, मुदा उपाइये की? उपाय तँ ओइठाम अछि जैठाम जीवन अछि। जैठाम जीवने नहि रहत तैठाम तँ केहनो अट्टालिका किए ने बनौने रही, मुदा ओ भूताहि भइये जाइए।

मानि लिअ, अहाँ दिल्लीमे वा मुम्बइमे नोकरी वा बेपार करै छी जइसँ नीक कमान कमाइ छी, मुदा अखन धरिक जे अपना सभक ग्रामीण परिवारक इतिहास रहल, माने आइसँ बीस-तीस बरख पूर्वक, ओना तइसँ पहिनौंसँ गामक लोक सभ दिल्ली-मुम्बइक अट्टालिका देखि नेने छला आ पाइ कमेला पछाइत ओहो ओही अट्टालिकाक प्रवाहमे अपनो रहैक घर शहरोमे बनौलैन आ गामक जे अपन पूर्व-जीवन छेलैन, माने शहर अबैसँ पूर्वक, ओ तँ यएह ने कहलकैन जे गाममे पाँचो प्रतिशत परिवारसँ कम परिवारक घराड़ीपर पजेबाक नाओं लेल गेल अछि। गामक अतीतक दृश्य यएह ने छल जे आजुक परिवेशसँ बहुत दूर छल। गामक जे पूर्व सिनेह

छेलैन तइ अनुकूल परदेशी भाय गामोमे रहैक घर बना लेलैन। देखिये रहल छी जे एक दिस मेट्रो ट्रेनक जरूरत अछि तँ दोसर दिस ढेरक-ढेर लोक बैसल-बैसल समय काटि रहल अछि। एक दिस स्कूल-कौलेजमे शिक्षक नहि अछि मुदा तेकरे दोसर दिस परीक्षाक रिजल्ट नीक भऽ रहल अछि।

अपन बहैत मनकेँ गियानचन ई कहि बोइस कऽ रोकलैन जे कबीर बाबा बिनु डन्डी-पलड़ाक तराजूपर दुनियाँकेँ जोखि लेलैन आ अपना बुते अपनो जीवनकेँ तौलल नहि हएत.! ..पहाड़ी झड़नाक पानि जकाँ गियानचनक मन पहाड़पर सँ उतरलैन। उतैरते जहिना झड़नाक झहरबकेँ पाथरक कोनो टुकड़ा पहाड़पर सँ खसि रोकिकऽ मुँह घुमा दइए तहिना गियानचनक मुँह घुमि गेलैन। मुदा जीवन तँ जीवन छी.! थर्मामीटरक पारा जकाँ जीवनकेँ हाथसँ पकड़ब कठिन अछिए। लीलाक संग जहिना रासलीला अछि तहिना ने कदमलीला सेहो अछिए.!

विचित्र स्थितिक बीच गियानचन अपना मनकेँ थीर करैक कोशिश करए लगला मुदा..। मुदा ई जे अखन तक गियानचन एतबे बुझै छला जे समाजमे बेटा वा पतिक मृत्युक पछाइत जहिना माए वा घरनीकेँ, समाजक दाइ-माइ यएह ने असीरवाद दैत कहै छैथ जे राजा-दैव अहिना होइए, तँए मनकेँ थीर करू। भलेँ असीरवादक माने–अर्थ–अपने बुझैथ वा नहि। मनकेँ थीर करब बाल-बोधक खेल नइ ने छी, ऐठाम महाभारतक प्रह्लादक बात नहि बुझब जे बालपनेमे मनकेँ थीर कऽ लेलैन। ऐठाम गियानचनक बात चलि रहल अछि।

जहिना जीवनक खेल असान अछि तहिना कठिन सेहो अछिए। तहूमे मनक खेलकेँ पकड़ब तँ आरो कठिन अछि। सभ जनिते छी जे ऐ संसारमे दुखसँ जीवन शुरू होइए आ अड़ना साँढ जकाँ मनक थीरता होइत जाइए। दुनियाँ तँ दू भागमे बँटाएल अछिए। एक भाग भेल दुखक दुनियाँ आ दोसर भाग भेल सुखक दुनियाँ। कबीर बाबा भनेँ ने कहने छैथ जे दो पाटन के बीच मे, बाँकी बचे ने कोइ। खाएर कबीर बाबाक अपन दिन छेलैन आ अपन दुनियाँ छेलैन मुदा गियानचनक तँ से नहि छैन। जे

छैन सएह ने देखता। यहए ने देखता जे जहिना दुखोक डरे मन थरथरेने अथीर भइये जाइए, तहिना सुखोक जे मन होइए ओहूमे घब-घबी धैये लइए। ओल आकि अरिकंचन जकाँ पातो आ फलोमे कब-कबी आबिये जाइए जइसँ मन थिर होइत-होइत असथिर भइये जाइए। यएह तँ छी मन, जे अपन तीन तरहक खाना बनेने अछि, सुखक मन, दुखक मन आ दुनूक बीचक सु-दुखक मन।

एकाएक गियानचनक मनक किछु कुहेस छँटलैन। छँटिते दुनियेँ जकाँ अपन जीवनकेँ ध्रुवीकरण केलैन। जहिना भूगोलक भाषामे उत्तरी ध्रुव आ दच्छिनी ध्रुव अछि, जैठाम छअ मासक दिन आ छअ मासक राति होइए, तहिना ने जीवनोमे अन्हार-इजोत दुनू अछि। जैठाम छअ मासक राति हएत तैठाम कि अखुनका जकाँ लोक बिजलीक इजोतमे रातिकेँ दिन बना जीवन लीला करत आकि कुम्भकर्ण जकाँ सुतबे करत।

दुनियाँक ध्रुवीकरण नहि, अपने जीवनक ध्रुवीकरण करैत ने विद्यापति कलैप-कलैप कहलैन, ‘आध जनम हम नीन गमाओल.!’ ..एक तँ आधा जीवन ओहिना चलि जाइए। बाँकी जे बँचल आधा अछि तइमे अपन शरीर क्रियाक संग जीवन-धर्मोक क्रिया तँ करबे अछि, तइले समाइये केते बँचैए.!

❑ भरि मन काज, 12 अप्रैल 2022

किसानी जीवनक मूल आधार भूमि आ पानि छी। गाम-गामक बुनाबट सेहो भिन्न-भिन्न रूपक अछिए, तहूमे अपना सबहक माने मिथिलांचलक, जे धार-धुर इलाका छीहे। मात्र मधुबनी जिलामे दू दर्जनसँ बेसी नदी अछि जे तीनू रंगक अछि। कोनो-कोनो नदी सालो भरि, माने बारहो मास चलाइमानक अछि तँ कोनो-कोनो छअ मास, आ कोनो-कोनो बालुक बुर्जा बनि सेहो चमकैत रहैए।

तीस बर्ख पहिलुका जीवन जीबछ कक्काक बदैल गेलैन। जे गामक कियो-कियो देखियो रहला अछि आ बेसी लोक नहियेँ देखि पेब रहल छैन। जे कियो नहि देखि पेब रहल छैन ओ सोल्होअना आन्हरे छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। आँखियो छैन्हे आ देखबे करिते छैथ। कहब जे ई तँ गौंआँक बात भेल जे कियो देखि पेब रहल छैन आ कियो नहि देखि पेब रहल छैन, मुदा जीबछ काका सेहो तँ अपने ओही गाममे रहै छैथ, ओ अपने की देखि पेब रहला अछि?

जीबछ काका अपने दुनू तरहक विचार तँ देखिये रहला अछि आ तइसँ संचरित होइत तेसरो विचार माने 'निरविचार'कँ सेहो देखि रहला अछि। माने ई जे जीबछ कक्काक अपन खेती-बाड़ी जीविका छैन ओ पूर्ववते छैन, तँए ओहन देखनिहारो आ अपनो वएह किसान रूपमे ओहिना देखि रहला अछि। दोसर तरहक जे गौंआँ आ अपनो विचार छैन तहूमे ओ वएह सामाजिक रूप देखि रहला अछि, तँए बदलल सन देखैमे आबि रहल छैन। ओ स्पष्ट देखि रहला अछि जे सामाजिक जीवन जइ ढाँचागत चलि रहल अछि तइमे सभकँ किछु-ने-किछु रक्का-टोकी, झगड़ा-झंझट, मारि-पीटि आ केस-फौदारी भऽ रहल छैन, तैठाम जीबछ काका केस-फौदारीक कोन बात जे मारियो-पीटि, झगड़ो-झंझट आ रक्को-टोकी केकरोसँ नहि होइत देखि रहल छैथ। चाहक दोकानपर

चाहक उधारी ले, तहूमे कियो उधारीक झगड़ा करैत तँ कियो चाहक गिनतीएकेँ कम-बेसी करैत। तहिना कपड़ा दोकान हुअ कि नून-तेलक, सभठाम एक्के गति। कम-बेसी जे हुअए मुदा होइए सभठाम। से जीबछ काकाकेँ नहि होइ छैन। एहेन बेवहारिक रूप देखि समाज दोसर नजैरसँ जीबछ काकाकेँ देखै छैन।

आब चलू जे जीबछ काका अपने अपनाकेँ निरविचारी रूपमे केना देखि पेब रहला अछि।

तीस साल पूर्व अपना ऐठामक किसानक मनमे धारणा बनल छेलैन जे कोसी नहर आ पनिबिजलीक उत्पादन भेने सभकियो गरमी मासक रातिमे खेतो-खरिहाँन आ चासो-बासमे लक्ष्मीक संग रमकैत समय बिताएब, मुदा आइ की देखि रहला अछि? ..जीवनक एहेन दब-उनार गामक आनो-आन किसान देखलैन आ जीबछ काका सेहो देखलैन।

जखन-सत्ता दृष्टि किसान-दृष्टिसँ मिलल तँ अनेको संकटमे पड़ल किसानपर दृष्टि देबाक परियास भेल। बीसमी सदीक अस्सी-नब्बेक दशकमे धुर-झाड़ तँ नहियेँ मुदा सीमित रूपमे गाम-गाममे बोरिंगक लेल नब्बे प्रतिशत मूल्यक सरकारी सहायतासँ पानिक जागरण भेल। खेतीक लेल पानिक मूल्य ओहने अछि जेहने जीवनक लेल अछि। उपजा बढ़बैले खादक सहायता आ बीआक सहायताक संग छोट-छीन इंजिनचालित मशीनक संग हस्तचालित मशीन सेहो गाम-गाम आएल। यएह ने भेल हाथक हथियारमे संचरण। जेना-जेना संचरण बढ़त, तेना-तेना जीवन सेहो बढ़त। तेतबे नहि, सभ पंचायतमे तँ नहियेँ मुदा किछु पंचायतमे चेकोस्लोवाकियाक सहयोगसँ स्टेट बोरिंग सेहो भेल। जे बिजलीचालित अछि, मुदा बिजलीक अभावमे चालित तँ नहि भेल मुदा किसानक बीच आशक प्रज्ज्वलन आरो बेसी, किए तँ मिथिलेक भीतर दुनूक सृजन रहने। जहिना कोसी नहर तहिना बराहक्षेत्रो नूनथर आ शीशापानी–भेबे केलैन। तहूमे अपन मिथिलामे एहेन रंग छेलैहे जे पचास-पचास बीघाक नीक-नीक आमक कलम-गाछी सेहो छल। भगवानक देल आम सन फल, कोनो कि

रखैबला उपाय छल, सीमित समयमे ओकरा खाइक छै, नहि तँ अपने सड़िकऽ समाप्त भऽ जाएत। तँए बेसी-सँ-बेसी लोककेँ आम सन फल भेटते छल। गाछी-कलमबला जँ बड़ करता तँ अम्मट बनौता, मुदा ओहो केते बनौता? तहूमे अम्मट कि अखुनका खस्सी, मुर्गीक मांस छी जे पाँच किलोक पचान एकेटा सोडामीनक गोलीसँ हेमाल भऽ जाएत। आकि हजार-पनरह साए रसगुल्ला-लालमोहन छी जे एकेटा पेशावमे पानि बनि जाएत। अम्मट तँ अम्मट छी, तहूमे आमक। अढ़ाइ साए ग्रामसँ जँ पान साए ग्राम चढ़ेबै तँ तीन दिन ओछाइन धड़ेबे करत। खाएर जे से..।

किसानक एहेन समस्या आइये नहि, ओना आइ बदलल सेहो अछि, सभ दिनसँ रहल अछि। जइसँ साले-साल किसानक जिनगीमे उनट-फेर होइत आबि रहल छैन। कोनो साल अधिक बरखा भेल जइसँ पानिक नोकसान तँ कोनो साल कम भेने आकि बरखे नइ भेने रौदी भेल जइसँ फसलक पैदावार नहि भेल। रौदियोक एहेन-एहेन रूप रहबे कएल अछि जेकरा बरहबर्खा कहै छिऐ। सभकेँ बुझल अछिए जे बारह बर्खक रौदीक पछाइत सीताक जन्म भेल रहैन। तँए कहब जे किसानक मनोनुकूल साल कहियो नहि भेल सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो कोनो-कोनो साल भेबे कएल अछि। ओना, किसानक संग अनेको समस्या छैन।

❑ संचरण, 08 जनवरी 2022

“जोगिन्दर बौआ, की कहबह.! मनमे बहुत लीलसा छल जे समाजक मुँह नीक बनै, मुदा जेकरे मुँह बनबैले मुँहुआएल जाइए वएह अजेगर साँप जकाँ अपन आँखिक आकर्षणसँ तेना ने ढप-दे नीककेँ गिर जाइए जे पृथ्वीए निपत्ता भऽ जाइए।”

मानव शब्दक प्रयोग दू रूपमे होइए। एक रूप भेल मनुक्खकेँ मानव कहल जाइए से आ दोसर भेल मानव जेकरा मानैए। माने, मनमे बिनु सोचनो-विचारणो मानि लइए आ सोचियो-विचारिकऽ तँ मानले जा सकैए। ओना, नजैर घुमाकऽ देखब तँ दुनू मानबे भेल, किए तँ मनक राजा रहने मानवे ने मानबो करैए, पशु-पक्षी-जानवरसँ लऽ कऽ कीट-पतंग, गाछ-बिरीछ, पोखैर-इनार आकि आन पशु-पक्षी थोड़े मानैए। मुदा कनियेँ आरो आगू बढ़ब तँ देखब जे मदारी सभ दुनूकेँ मनुक्खे जकाँ सिखा-पढ़ा मनुक्खक नकल तँ करेनौं अछिए।

विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ि रहल छल। भीतरे-भीतर मन अपनेमे लड़ितो छेलए आ झगैड़तो तँ छेलएहे। मन घोर-घोर भऽ गेल। एकटा कहए जे पहिने पानि बनल तँ दोसर कहए पहिने समुद्र खुनाएल। पहिने अण्डा भेल आकि चिड़ै? तहिना, दिन-रातिक बँटवारा जखन भेल तखन पहिने रातिकेँ पार भेटलै आकि दिनकेँ.? एक मन ईहो कहए जे भनडारामे गेल रही तँ भजनमे सुनने रहिऐ जे ‘दुनियाँक जालमे ओझरेबह बौआ, बँचिकऽ रहिहह हौ..!’

एकाएक अपने मनमे भेल जे असगरमे ने बुझि पड़ैए जे दुनियाँक जालमे ओझरा जाएब मुदा जँ समाजक बीचमे अप्पन मनक ओझरौठ कहिऐन आ जँ कहीं ओहो या तँ एहने ओझरौठमे पड़ल होथि वा कहला

पछाइत कहीं अपनो मोन पड़ैन, तखन तँ संगी हेबे करता किने। लगले तेसर मन सेहो अप्पन विचार देलक जे जँ जालमे चिड़ै-सबहक जेड़े फँसि जाए तखन तँ जाल लऽ कऽ उड़ियो तँ सकबे करैए। मुदा लगले ईहो हुअए जे एहनो तँ सुनिते छी जे शिकारी औत, जाल बिछौत, दाना छीटत, लोभसँ ओइमे नहि पड़ब। ..यएह छी दुनियाँक खेल जे लोभसँ ओइमे पड़ब नहि मुदा पड़िकऽ फँसि गेल सभ, आ शिकारी जाल समेटिकऽ बाजारमे लेलक बेचि।

उनमुनाएले मने डेगा-डेगी रामलाल कक्काक घर लग पहुँच गेलौं। रामलाल काका पड़ोसिया छैथ। अखनो तँ अपना ऐठाम जीवित संस्कार अछिए जे कियो दरबज्जापर पाहुन (अनठिया) देखि लगमे पहुँच अप्पन समाजक रीति-बेवहारक पालन करिते छैथ। माने भेल जे दुनू पड़ोसीक बीच जँ कोनो मतान्तरो रहल तैयो आन समाजक नजैरमे हम एक समाज छी, नहि कि बेकती। ओहन तँ समाजे ने बेवहार बनौत। ओना, आइक परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे सभ जनिते छी, पितो-पुत्रक बीचक सम्बन्धक की स्थिति अछि। एक कहैए तूँ हम्मर बाप नहि, दोसर कहै छैथ तूँ हमर बेटा नहि। जे सम्बन्ध कटने नइ कटाएत से कटि जाइए शब्दसँ..!

कनी फरिक्केसँ दरबज्जा दिस हुलकी मारि तकलौं तँ बुझि पड़ल जे रामलालो काका देखलैन आ अपनो नजैर हुनकापर पड़ल। अप्पन मन उनमुनाएले रहए जइसँ हजारोटा विचार मनमे उठिये रहल छल, तँए बकार बन्ने रहए। मुदा रामलालो काका देखिकऽ किछु बजला नहि। भरिसक मूर्ति जकाँ, माने पाथरक मूर्ति हुअ आकि माटिक मूर्ति, जहिना रूप-रंगसँ पारखी परेखि लइ छैथ जे ब्राह्माण्डक रूप भेल 'ब्रह्ममय देह', अण्ड माने देह। भरिसक तहिना ओ हमरो देखि कऽ परेखि लेलैन आकि की, से तँ ओ जानैथ, मुदा मन अप्पन उड़ले छल, देखल रस्ता पैरकेँ छेलैहे, बिनु आदेशेक रामलाल काका ऐठाम पहुँचा देलक। जाबे अपना मुहसँ निकलए-निकलए जे 'गोड़ लगै छी काका', तइसँ पहिने रामलाल काका हँसि देलैन। हुनकर हँसीमे अप्पन विचार तर पड़ि गेल। की करितौं, लगमे

जा कऽ बैसैत बजलौं- “काका, अहाँक देह सन जँ हमरो देह भऽ जाइत.!”

हँसैत रामलाल काका बजला- “हमरे सन किए जे हमरासँ चाकर-चौरस, सिलपट लोहा जकाँ नमगर-छड़गर देह तँ छहे, तखन?”

रामलाल कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल जे देहीक देह कहलैन आकि लेहिक देह कहलैन। किए तँ मन मानबक तीन दिशा अछिए। एकटा अछि दिनू-दिनू, दोसर अछि लिनू-दिनू आ तेसर अछि लिनू-लिनू। माने, एक भेल- दुनियाँकेँ देलिऐ-देबै, दोसर भेल- देबो केलिऐ आ मूड़क-मूड़ वा सुदिक संग मूड़ लेबो केलिऐ आ तेसर भेल- मूड़ो आ सूदो लेबे केलिऐ आ देलिऐ किछु ने। कर्जखौक जकाँ कर्जा लऽ कऽ खा-पचा लेलिऐ। बैसल-बैसल चिन्तक जकाँ मन हेरा गेल। मरल देह जकाँ चेतनहीन बैसल देह देखि रामलाल काका बजला-

“जोगिन्दर, नीन आबि रहल छह?”

एक तँ जखन मनुक्खक मन सोझ रहै छैन तखनो ओ टेँढ़ियाएल बात बजै छैथ आ जखन मन टेँढ़ियाएल रहतैन तखन केहेन बोल हेतैन। अधनिनामे जहिना छगाएल मन बजैए तहिना बजलौं- “काका, नीन कहाँ अबैए। कनी झपसीमे झपकी आबि गेल छल, तँए अहाँकेँ बुझि पड़ल।”

रामलाल काका बजला- “भाँग-ताँग ने ते पीने छह?”

भाँग-ताँगक नाओं सुनिते मनमे ठहैक गेल जे रामलाल काका पुरना पन्ना उनटा रहल छैथ। बजलौं-

“काका, आब लोक हवाइ जहाजपर उड़ि जँ ताड़ीए-दारू आकि भाँगे-गाँजा पीअत, तखन चरस-कोकिण केकरा ले अछि। ई तँ ओकर पीछड़पन ने भेल, जैठाम वातावरणे मदसँ मदमस्त रहैए तैठाम भाँग-गाँजा तँ वौराहा फकीर आ कोयलाखानक करियाएल श्रमिकेक हिस्सामे ने रहल।”

अपन विचार अन्तो ने भेल छल कि बिच्चेमे रामलाल काका दू-तीन

बेर हफुएला, माने नीन अबैसँ पूर्व हाफी जेना होइए। मुदा बजला किछु ने। जहिना भुजंग गरुरकेँ अप्पन भुजंगप्रयात सुनबए लगलैन आ आँखिक पल खसा गरुरजी महराज सुनए लगला मुदा अप्पन जानक जोखिम देखि भुजंग फुसलबैत-फुसलबैत गरुरकेँ नीना देलकैन आ अपने अपन रास्ता पकैड़ ससरैत-ससरैत ससैर गेल। मुदा तेना रामलाल काकाकेँ नइ भेलैन। माने, भकुआएल नजरिये नहि, गम्भीर नजरिये रामलाल काका हमर बात सुनलैन। सुनि सुनिकऽ मन ओहिना मोहलैन जेना दूधसँ मक्खन बनैए। घृतवत होइत रामलाल काका बजला-

"जोगिन्दर बौआ, की कहबह.! मनमे बहुत लीलसा छल जे समाजक मुँह नीक बनै, मुदा जेकरे मुँह बनबैले मुँहुआएल जाइए वएह अजेगर साँप जकाँ अपन आँखिक आकर्षणसँ तेना ने ढप-दे नीककेँ गिर जाइए जे पृथ्वीए निपत्ता भऽ जाइए।"

रामलाल कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। किए तँ जहिना रामायण पढ़ला पछाइत कियो कहै छैथ- राम 'राजकुमार' भेला, तँ कियो कहै छैथ- राम 'भगवान' भेला आ कियो हुनका 'जमाए' बना गरियबै छैन, तँ कियो रावण वंशक संग लंकाकेँ जरौनिहार-मेटौनिहार सेहो कहै छैन। जहिना तिब्बतमे राजकुमार- 'चेन पो'केँ धनक गति-विधिक भाँज नइ लगलैन, परशुरामकेँ राजपूत वंशक भाँज नहि लगलैन, माने भेल दुनू दुनूकेँ मेटबैले बेर-बेर प्रयास केलाह, तहिना रामलाल कक्काक विचार सुनि अपनो मनमे भेल। गेरुली मारि बजलौं- "तखन की हेतइ काका?"

हँसैत रामलाल काका बजला- "राम-रामक लूटि भइये रहल अछि, तोहूँ लूटि लाए। यएह भेल नब बनक नब फल।"

❑ नब बनक नब फल, 30 नवम्बर 2022

अप्पन जीवनकेँ कनीए आगू मुहेँ रवीन्द्र बढ़ौलक कि समाजक नांगट चेहरा सोझामे झलकलै। ओना, नांगटक तीन अर्थ भऽ सकैए। पहिल, निष्पक्ष रूप, दोसर इज्जत हीन चेहराक रूप आ तेसर, बदमास चेहराक रूप। तँए ऐठाम फुटाकऽ बुझि लिअ जे रवीन्द्र निष्पक्ष चेहराक रूप समाजक देखलक।

अप्पन पूर्वजसभ जीवनकेँ चारि अवस्थामे विभाजित केने छैथ, जइमे एकटा बाल्यकाल सेहो अछि। ओना, हुनका सभक मनसामे, अप्पन जीवनानुकूल, साए बर्खक जीवनक मान छेलैन, जइ अनुकूल चारि अवस्थामे पहिल अवस्था भेल पचीस बरख। अप्पन विचार आ अप्पन जीवन छेलैन, अप्पन निमाहि लेलैन। मुदा आजुक परिवेशमे जे शिखर-परागक उठाइन भेल अछि, ऐठाम ई नइ कहै छी जे ओकर उठाइन कहिया हएत। तइसँ तँ बुझि पड़ैए जे ओ कोलिपद्दु आम जकाँ पचीस बर्खसँ पहिने डेरा-डन्टा लेने लोक विदा भऽ जाएत। खाएर जे हएत से अप्पन होइत रहत, मुदा बाल कथा सुनैसँ पहिनहि ने बालकक सीमा निर्धारित कऽ लेब।

परम्परासँ अबैत जे विचार अछि, ई से भेल। तँए कहब जे एतबेसँ पार-घाट लगि जाएत, सेहो बात नहियेँ अछि। दोसर ईहो ने देखबै जे उमेरक संग लोकक बुधियो चलै छै, तैठाम जे साठि बर्खक उमेर पेलोक पछाइत साए तक गनि नहि सकै छैथ, ओ केतए रहता? तैसंग ईहो ने देखए पड़त जे पचीस बर्खक अवस्थामे एकटा कुशल इंजीनियर जैठामक धरतीपर ठाढ़ होइ छैथ तहीठाम दोसर दिस ईहो तँ अछिए जे पचीसक कोन बात, माने पचीस बर्खक उमेरक कोन बात जे चालिसो-पचास बर्खक अवस्थामे अलूरिगरक अलुरिगरो लोकसभ छैथ। तँए, उमेरक हिसाब केकरा सिरे बैसाएब, से तँ अपने मन ने कहत। तहूमे दुनियाँक खेल

अजीव अछिए। प्रकृतो तँ प्रकृति छी, चिन्तक महादेव जकाँ कखन रहत आ कखन ताण्डव नाच नाचए लगल, तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। देखिते छी जे एकटा मनुक्ख आठ फीटक होइए आ एकटा डेढ़ फीटक.!

तेइस बर्खक रवीन्द्र एक शोधार्थी अछि। बिआह नइ भेल छइ। अपना मने बिआह नइ केने अछि आकि पिताक मने, से तँ जखन रवीन्द्र सोझा औत तखन बुझबै। परिवेशो तँ परिवेश छी, एक दिस जाति-सम्प्रदायक जाल पसैर रहल अछि आ दोसर दिस दहेजक दुआरे बर सभक आयु समाप्त भेल जा रहल छैन। बीचमे केतौ नगद तँ केतौ जाति तँ केतौ सम्प्रदाय अछि। खाएर जे अछि, रवीन्द्र ओ शोधार्थी छी जे अप्पन शोध अपने लगसँ शुरू केलक अछि।

पिता दयानन्दक संग रवीन्द्र अप्पन बिआहक विषयपर समझौता केने अछि। पिता दयानन्द जीवनक पहिल अवस्था ब्रह्मचारीक अवस्थाकेँ मानि बेटाक बिआह वर्जित केने छैथ। ओना, मनकेँ ईहो विचार प्रवल रूपेँ जरूर पकड़ने छैन जे जीवन तँ जीवन छी। मुक्त भऽ जीब लेब, बाल-बोधक खेल नइ ने छी। जहिना बेटा-बेटीक भार माता-पितापर रहै छैन तहिना ने समयानुकूल माता-पिताक भार बेटा-बेटीपर सेहो होइते अछि। बेटा-बेटी जखन परिवारक निर्माण करैक आयुक वृत्तिमे लीन हएत तखन ने माता-पिता उरीन भेला। तँए बिआह-दान तकक सीमा बनौने छैथ। जइ हिसाबे दयानन्दकेँ बेटाक ऋण मनमे छैन्हे। भलेँ रवीन्द्रकेँ मनमाफित लाभ किए ने होइ, मनमाफित लाभक माने भेल अपना विचारे, माने पिताक बिनु विचारे, अप्पन जिनगीक गठन करब।

रवीन्द्र समाजक दृश्य देखि रहल अछि जे पति-पत्नीक बीच जीवन-संगीक रूप केहेन अछि। एक दिस समाजक उच्च कोटिक वैज्ञानिक, समाजशास्त्री, डॉक्टर-वकील, इंजीनियर छैथ आ दोसर दिस सोल्होअना निरक्षर पत्नी छैन। एहेन स्थितिक जीवनक सामंजस कठिन अछिए।

ओना, सामंजस कठिन नहियेँ अछि, मुदा राड़ीक फूल जकाँ

हल्लुको तँ नहियेँ अछि जे धारक कातक रहितो, एक देशक कोन बात जे हवाक गति पेब दोसरो-तेसरो देश पहुँच अप्पन वंश बढ़ैबते अछि, भलेँ मौसम अनुकूल नइ भेटने वंश वृद्धि नइ कऽ पबए। ई दीगर भेल। देखिते छी जे केना अबोधो आ सबोधो युवा राष्ट्रीय-सँ-अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्गमे परिणत भऽ रहल अछि। कहब केना। क्रिकेटक खेल दुनियाँमे पसरल अछिए। देखिते छिऐ, एक देशकेँ दोसर देशसँ सदिकाल भीड़ार होइते रहैए। खेले छी, कखन लोक जिनगीकेँ खेल बना खेलि लेत आ कखन अपने खेलौना बनि अकासमे उड़िया जाएत, तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। एते दिन जे मोबाइल गामो-गाममे नइ छल, माने गाममे एक्कोटा नइ छल, ओ आब गाम तँ गामे भेल जे गामक जे टुकड़ी परिवार अछि आ परिवारक जे टुकड़ी लोक–बेकती–होइए, तेकरो हाथमे सेवनजी तकक मोबाइल आबि गेल अछि।

गाम-गाममे खेल खेलाड़ीक बीच बँटवारा भइये गेल अछि। कियो कोनो खेलाड़ीक अन्धभक्त तँ कियो कोनो खेलाड़ीक। कियो कोनो देशक समर्थक, अन्ध समर्थक तँ कियो कोनो देशक। सदिकाल केतौ-ने-केतौ खेल चलने केकरो-ने-केकरो हारि-जीत सेहो होइते अछि। एकक समर्थक दोसरसँ कहा-कही करैत पटका-पटकी करए लगैए। ई तँ गुण भेल अछि जे नगद-नारायणी दण्डक चलैत जल्दबाजीएमे झंझट निपटैए। नइ तँ तेहेन अन्तर्राष्ट्रीय चेहरा लोकक बनि गेल अछि जे सदिकाल गामो-घरमे अन्तर्राष्ट्रीय विवाद लधाएले रहत। देखिते छी जे देशमे एकदिस अस्सी करोड़सँ बेसी लोक खराँतपर अप्पन भूख कम कऽ रहल अछि, वस्त्र विहीन अछि, घर विहीन अछि आ शिक्षा-स्वास्थ्य विहीन सेहो अछि, दोसर दिस दुनियाँक तेसर शक्ति बनै-बनैपर अछि, जइ घड़ी ने बनि गेल अछि।

अप्पन जीवनकेँ कनीए आगू मुहेँ रवीन्द्र बढ़ौलक कि समाजक नांगट चेहरा सोझामे झलकलै। ओना, नांगटक तीन अर्थ भऽ सकैए। पहिल, निष्पक्ष रूप, दोसर इज्जत हीन चेहराक रूप आ तेसर, बदमास चेहराक रूप। तँए ऐठाम फुटाकऽ बुझि लिअ जे रवीन्द्र निष्पक्ष चेहराक

रूप समाजक देखलक। ओ अप्पन चेहरा अपने देखलक जे जइ समाजमे बाल विवाह, बच्चामे बिआहक चलैन अछि तैठाम हम तेइस बरख उमेरक भऽ गेलौं आ अखन तक बिआह नइ केलौं हेन। एहेन स्थितिकेँ की कहबै। समाजक चलैनिक नियमक विपरीत भेल की नहि। हम समाजक नजैरमे दोखी भेलौं कि नहि? ई दीगर भेल जे सभ माता-पिता अप्पन सन्तानक कर्जसँ उरीन भऽ जीवन बितबए चाहै छैथ। चाहबे टा नइ करै छैथ, संझा-पराती जकाँ, माने साँझ-भोरक गीत जकाँ, दिल खोलि गबितो तँ छथिए जे 'हे भगवान, जखन अपना हाथे अप्पनो जीवनक निमरजना, माने जीवनक आदि-सँ-अन्त धरिक घाट-पार, नइ कएल हएत तँ तइसँ नीक जे मर्तलोकक जिनगीसँ चलिये जाएब ने बढ़ियाँ'। कहब जे दुनियाँ, माने अप्पन जिनगीसँ लऽ कऽ दुनियाँ धरिक, देखि लोकक मन ललचाइए आ अहाँक मन बेरागी जकाँ दुनियाँ छोड़ि भागए चाहैए?

यएह तँ दुनियाँक खेल छी, जेकरा राग-विरागक दुनियाँ कहै छिऐ। माने झगड़ा-सँ-मिलान धरिक वा दोस्तीसँ दुश्मनी धरिक। खाएर जे छी तइसँ रवीन्द्रकेँ कोन मतलब अछि। घरसँ निकैलिते रवीन्द्रक मनमे उठल जे पिताजीक संग जे अप्पन समझौता भेल, ओ बिल्कुल जीवनक अनुकूल भेल।

❑ मुक्ति, 14 दिसम्बर 2023

❑❑❑

❑❑

❑

Notes